॥ श्रीः ॥

शुभसन्ततियोगप्रकाश ।

(खंडद्वयात्मक)

भाषाटीकासमेत.

जिसको

टकसालनिवासी वैद्यपंचानन पं० **रामप्रसाद उपाध्याय** ने संगृहीत व निर्मित और निजकृत **भाषाटीका** से विभूषित किया ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९६५, शके १८३०.

वैद्यपञ्चानन पं० रामप्रसाद उपाध्याय ।



भूमिका ।

आह! सूर्यादिक प्रकाशकारक होतेहुएभी जो अंधकार बढताही जारहा है वह शोकसे कहना पडता है; यही अंधकार इस भारतके आयु व पराक्रमको निर्मूल करताहुवा दिखाई देरहा है अंधकार क्यों न बढे ? जबकि सब लोग अपनी हानिकारक व्यवस्था देखतेहुएभी उससे अलग नहीं होते बल्कि हानिकारक दोषोंका अवलंबन ही करतेजाते हैं। देखिये ! मकानको बनाते समय उसकी बुनियादकी पुख्ताई पर कितना ध्यान दियाजाता है कि,कभी बुनियादकी कचाईसे मकानकी रद्दी अवस्था न बनजावे बल्कि मकानकी ही नहीं एक दमडीकी हँडिया खरीदते और बनाते वक्त भी उसके संपूर्ण अंगोंपर पूरी दृष्टि देकर देखलेते हैं; परंतु जिस शरीरपर संपूर्ण जगतके कार्योंका निर्भर मानाजाताहै क्या उसकी कची अवस्थामें हानि करते समय जरा भी दृष्टि देकर न सोचाजाय तो इससे बढकर क्या अंधकार छाएगा। जब १५,१६ वर्षकी अवस्थामें ही वीर्यके नष्टकर्ता उपयोगोंसे संयोग कियाजाय; जबकि उसकी एक नई कोंपल [जोकि अच्छीतरह वृक्षसे निकलने भी नहीं पाई] उसकी सदृश अवस्था हो तो फिर शरीरकी अच्छी अवस्था क्यों रहसके ? और शरीरके राजा (वीर्य) के पैदा होते ही थोथे होजानेसे शरीरके रोगोंका अंधेर कैसे मिटे ? |; प्यारे पाठको ! इस अन्धेरका कारण बच्चोंको मातापिताओंसे योग्य शिक्षा न मिलकर छोटीही अवस्थामें कामोत्पादक तमाशे आदिमें लेजाना और योग्य आचार विचारके पाबन्द रहनेका अभ्यास न डालना ही है ।

इस हीन दशामें मैंने अपना मुख्य. कर्तव्य यही समझा कि ऐसा छोटासा वैद्यकग्रंथ निर्माण करना चाहिये कि जिसको सामान्यबुद्धिके मनुष्य भी देखसकें और देखकर उस लेखपर अमल करनेसे जो हानि होचुकी उससे पुनरुद्धार होनेका मौका लावें। और होनेवाली हानि रुककर सबके शरीर हृष्ट पुष्ट रहें और आयु पराक्रमयुक्त योग्य संतान होनेलगें। ऐसा सोचकर अनेक ग्रंथोंको देखकर और अनुभव करके यह परमोपयोगी "शुभसंततियोगप्रकाश" बनाया और इसके छापनेकी प्रार्थना श्रीमान् सेठ खेमराजश्रीकृष्णदासजीसे की इन्होंने मेरी प्रार्थना मानकर इसग्रंथको शीघ्रतासे छपवा दिया ॥

इस विषयकी अधिक विवेचना करनेकी आवश्यकता नहीं कि इस विषयके बहुतसे ग्रंथ बनचुके और बन भी रहेहैं परंतु इस ग्रंथकी प्रणाली और योग्यता तो देखनेसे ही प्रतीत होसकेगी कि इस घोर दुःखव्यञ्जक समयमें यह ग्रंथ कैसा उपयोगी और सर्वसम्मत तथा उपकारी है, इसलिये सब सज्जनोंसे प्रार्थना है कि इसमें जो कुछ मैंने अज्ञानवशसे दोषयुक्त लिखदिया हो उसको त्यागकर योग्य उपयोगोंसे लाभ उठाएँ तथा औरोंको शिक्षा देवें ।

आपका कृपापात्र.

पं० रामप्रसाद उपाध्याय.

टकसाल, रियासत–पटियाला.

॥ श्रीः ॥

शुभसंततियोगप्रकाशकी विषयानुक्रमणिका ।

शुभसंततियोग प्रकाशकीविषयानुक्रमणिकासमाप्त हुई.

अवतरणिका ।

भूपेन्द्रसिंहनाम्ना वै महाराजोऽस्ति धर्मवित् ॥
तस्य राज्ये हि ग्रामोऽस्ति टकसालेति नामतः ॥ १ ॥
पर्वतैरोषधीयुक्तैरावृतोऽस्ति समंततः ॥
तस्मिन्नाङ्गिरसे वंशे ग्रामे वै ख्यातिमागते ॥ २ ॥
सुखलालात्मजो ह्यासीत् तुलसीरामसत्तमः ॥
तस्यात्मजो विचारज्ञो द्वारिकादासनामतः ॥ ३ ॥
तदात्मजोऽहमल्पज्ञो रामप्रसादसंज्ञकः ॥
शुभसन्ततिदान्योगानत्र ग्रन्थे समालिखम् ॥ ४ ॥
यथा बालाः प्रकुर्वन्ति क्रीडन्तो वै गृहांतरम् ॥
तथा ग्रंथान् समालोक्य लिखितं चाल्पबुद्धिना ॥ ५ ॥
अथवा बुद्धिमद्भिर्हि पश्याद्भिर्लोकवृत्तकम् ॥
कुकर्मनिरतान् दृष्ट्वा समाधेयं तथापि च ॥ ६ ॥

१०८ श्रीयुक्त महाराजाधिराज धर्मज्ञ भूपेन्द्रसिंह बहादुरके राज्यमें टकसाल नामसे पुराचीन ग्राम है. यह ग्राम अनेक लता वनस्पति आदि औषधियों युक्त पर्वतों से शोभायमान् है. इस ख्यातियुक्त ग्राम में आंगिरस वंश प्रतिष्ठितहै इस वंशमें श्रीसुखलालजी के पुत्र तुलसीराम बडे श्रेष्ठ सुयोग्य ब्राह्मण उपाध्याय हुए उनके पुत्र द्वारिकादास नामसे बडे विचारवान् उपाध्याय पदधारक हैं. इनका अल्पज्ञ पुत्र मैं रामप्रसाद नामसे हूं मैंने इस ग्रंथमें अच्छे सन्तान उत्पन्नकरनेवाले योग लिखे हैं जैसे छोटे २ बालक खेलते हुए मृत्तिका आदिका नया घर बनाकर खेलाकरते हैं ऐसेही तुच्छबुद्धिवाले मैंने भी ग्रंथोंको देखकर यह पुस्तक लिखदिया अथवा इस समय लोककी गति देखकर और मनुष्योंको कुकर्मसे दुःखित देखकर बुद्धिवान् इस पुस्तकको उपयोगी समझकर समाधान करेंगे अर्थात् अच्छा मानेंगे ॥

आपका कृपापात्र,

पं० रामप्रसाद उपाध्याय.

टकसाल, रियासत—पटियाला.

यद्यपि अनेक ग्रंथ और बहुतसे लायक चिकित्सक भी हैं परन्तु जो पुरुष शास्त्रविहित मार्गपर नहीं चलते उनको उन्हीं चरकादि महान् ग्रंथोंसे क्या फायदा होसक्ताहै ॥ ४ ॥

भूरिसत्त्वामहद्ग्रंथाःयाथातथ्यविधायकाः ॥
मानवाःस्वल्पसत्त्वायेअसमर्थानिरीक्षणे ॥ ५ ॥

प्राचीन उत्तम तथा महान् सत्ववाले और बड़े २ ग्रंथ यथोचित और तथ्य मार्गके विधान करनेवाले हैं । जो मनुष्य अल्पसत्व और अल्पबुद्धिके हैं वे थोडे समयमें उन बड़े ग्रंथोंको देखनेमें असमर्थहैं ॥ ५ ॥

अनुभवकृतायोगाःशुभसंततिदायकाः ॥
मयारामप्रसादेनप्रकाशःक्रियतेह्यतः ॥ ६ ॥

इसलिये रामप्रसाद मैंने अनुभवकिये हुये शुभसन्तानदायक योग अल्पबुद्धिवालोंके हितार्थ प्रकाश करेहैं । और बुद्धिमानोंके लिये ऋषि-योंके ग्रंथही हैं ॥ ६ ॥

नानातंत्रेषुयावार्त्तांममग्रंथोपकारिणी ॥
सुरीत्याहंलेखयिष्येयथासुसंततिर्भवेत् ॥ ७ ॥

अनेक शास्त्रों और ग्रंथोंमें जो २ बातें हैं वही मेरे ग्रंथमें उपकारी होंगी, अर्थात् इस ग्रंथके विषयकी सहायक और उपयोगी होंगी. उनको सुंदर रीतिसे सुगमकरके इस पुस्तकमें लिखाहै जिनकेवर्तावसे उत्तम संतान और गृहस्थको यथोचित सुखहो ॥ ७ ॥

अथातोयोग्यसूत्रीयाध्यायंव्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

अब हम योग्यसूत्रोंके अध्यायका व्याख्यान करतेहैं ॥ १ ॥

प्रामाण्यम् ॥ २ ॥

प्रमाणसेही सब अर्थप्रतिपत्तिहोतीहै जबतक ज्ञाता प्रमाणसे अर्थको न जानलेवे तबतक ज्ञाताकी अर्थके ग्रहण करनेमें प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों नाहीं होसक्तीं सो हम प्रमाणसे कहतेहैं । यह ग्रंथ प्रमाणिक होनाचाहिये ॥ २ ॥ (क्यों और किसप्रमाणसे इस शंकाको लेकर कहतेहैं)

तद्दुःखसंयोगोव्याधय इत्युच्यन्ते ॥ १० ॥

उस पुरुषका दुःखके साथ संयोग होना व्याधियां कही जाती हैं ॥ १० ॥

तेचतुर्धाशारीरागन्तवमानसाःस्वाभाविकाश्च ॥ ११ ॥

वह दुःखके संयोग अनेक और अगण्य होनेसे व्याधियां अगणित होते हुएभी चार भागोंमें विभक्तहैं । जैसे शारीरिक, आगंतव, मानसिक, और स्वाभाविक । इनमें वात, पित्त, कफ, शोणितके कोप या विषमतासे जो व्याधि हो उसको शारीरव्याधि कहा जाताहै । और अभिघातादिसे जो हो उसको आगंतुक कहा जाताहै । क्रोध शोक, भय, ईर्ष्यादि निमित्तक मानसिक व्याधि कही जातीहैं । क्षुधा, प्यास, जरा, मृत्यु, जन्य, स्वाभाविक कहाती हैं ॥ ११ ॥

याथातथ्यविहीनत्वाद्दुःखसंयोगः ॥ १२ ॥

ठीक यथार्थ ज्ञान न होनेसे दुःखसे संयोग होताहै। अर्थात् यथार्थ पदार्थ ज्ञान होनेसे पुरुष यथोचित वर्ताव कर सक्ता है। उस यथार्थ ज्ञान न होनेसे यथोचित वर्ताव नहीं होता । यथोचित वर्ताव न होनेसे दुःखसे संयोग होताहै, अर्थात् दुःखी होना पडताहै। इनमेंसे शारीरिक दुःख, अर्थात् शरीरमें होनेवाली व्याधि जो वातादि निमित्तक है, उसके वर्णनमें माधवाचार्यने कहा है (सर्वेषामेवरोगाणांनिदानंकुपितामलाः । तत्प्रकोपस्यतुहेतुर्विविधाहितसेवनम्) अर्थात् सभ बीमारियोंका सबब वायु आदि दोषोंका कुपित होनाही है और उन दोषोंके कोपका कारण अनेक प्रकारके अहित आहार विहारका सेवन है । अहित सेवनही समस्त दुःखोंका कारणहै (यहांपर केवल इस समय इस खंडमें शारीरिक दुःख निवृत्तिका वर्णन होगा । परन्तु बीजरूपसे सबका वर्णन है) ॥ १२ ॥

तद्विपरीतोदुःखनिवृत्तिः ॥ १३ ॥

अज्ञानतासे विपरीत अर्थात् यथोचित ज्ञान होनेसे जब मनुष्य यावन्मात्र जान लेताहै तो उससे अनुचित व्यवहार नहीं होसक्ता । वह ज्ञाता

गुदा आदि मलकेमार्गोंको साफकरके धोना कांति और बलके देनेवाला है, तथा पवित्रताके करने वाला आयुके बढाने वाला दरिद्र और क्लेश पापके हरलेने वाला है ॥ ५ ॥ मलमार्ग गुदा लिंग आदि धोनेके बाद हाथ पावोंको खूब धोना चाहिये । यह हाथ पावोंका धोना शुद्धिकारक मैल और श्रम (थकान) को नाशक वृष्य पुरुषार्थके बढाने वाला नेत्रोंको हितहै । ताप गरमी आदिकी घबराहटके नाश करने वालाहै ॥ ६ ॥

वेगोंकेरोकनेकेदोष ।

आटोपशूलौपारिकर्त्तिता च संगःपुरीषस्यतथोर्द्ध्ववातः ।
पुरीषमार्गादथवानिरेतिपुरीषमार्गोनिहितेन्नरस्य ॥ ७ ॥
वातमूत्रपुरीषाणांसंगोऽध्मानंक्लमोरुजा ॥
जठरेवातजाश्चान्येरोगाःस्युर्वातनिग्रहात् ॥ ८ ॥
बास्तिमेहनयोःशूलंमूत्रकृच्छ्रंशिरोरुजाः ॥
विनामोवंक्षणानाहःस्याल्लिंगंमूत्रनिग्रहे ॥ ९ ॥

पुरीष (मल) के वेग रोकनेसे अफारा (पेटकाफूलना) कतरनेकीसी पीडा मलका रुकजाना उर्द्ध्ववात (वायुका ऊपरको चढना) मलमार्गसे मलका ठीक न निकलना ऐसे उपद्रव होते हैं। इस वास्ते जब मलका वेगहो उसे कभी न रोके ॥ ७ ॥ अधो वायुके रोकनेसे वायुका रुकजाना, मत्रका बंद होना, मलका रुकना, पेटका अफरना, ग्लानि होना, दर्द पेटमें वायुके उपद्रवादि होते हैं। इसलिये जब वायु आवे उसे रोकना न चाहिये ॥८॥ मूत्रके रोकनेसे बस्ति और लिंगमें पीडा मूत्रकच्छ्र शिरमें दर्द नलोंका नवना वंक्षणमें अफरा आदि होते हैं, इससे किसी भी वेगको न रोकना चाहिये ॥ ९ ॥

दाँतन ।

तत्रादौदन्तपवनंद्वादशांगुलमायतम् ॥
कनिष्ठिकापरीणाहमृज्वग्रथितमव्रणम् ॥ १० ॥
अयुग्माग्रंथियच्चापिप्रत्यग्रंशस्तभूमिजम् ॥

अवेक्ष्यतुँचदोषंचरसंवीर्यंचयोजयेत् ॥
कषायंमधुरंतिक्तंकटुकंप्रातरुस्थितः ॥ ११ ॥

मलादि त्यागनेके अनंतर हाथपावोंको विधिपूर्वक धोकर दंतधावनि (दाँतन) करना चाहिये दाँतन बारह अंगुल लंबी छोटीउंगली जैसी मोटी कोमल गाँठरहित साफ होनी चाहिये ॥ १० ॥ आगेसे दो शाखी और गांठदार न हो और श्रेष्ठ भूमिमें उत्पन्नहुवे वृक्षकीहो ऐसीदांतनको ऋतु और दोष तथा रस और वीर्य विचार कर कडुवे कषेले मीठे या चरफरे वृक्षकीहो उसे सुवेरही पूर्वोक्त कामोंके अनन्तर करना चाहिये ॥ ११ ॥

निंबश्चतिक्तकेश्रेष्ठःकषायेखदिरस्तथा ॥
मधूकोमधुरेश्रेष्टःकरंजःकटुकेतथा ॥ १२ ॥

कडुवे वृक्षोंमें नीमकी दाँतन श्रेष्ठहै कसेले वृक्षोंमें खदिर मीठे वृक्षोंमें महुवा और चरफरोंमें करंज वृक्षकी दाँतन श्रेष्ठहै ॥ १२ ॥

क्षौद्रव्योषत्रिवर्गाक्तंसतैलंसैंधवेनच ॥
चूर्णेनतेजोवत्याश्चदन्तान्नित्यंविशोधयेत् ॥ १३ ॥
एकैकंघर्षयेद्दन्तंमृदुनाकूर्चकेनच ॥
दन्तशोधनचूर्णेनदंतमांसान्यबाधयेत् ॥ १४ ॥

तेजोवती के चूर्णमें सहत त्रिकटु (सोंठ पीपल मिरच) त्रिसुगंध (दालचीनी बडीइलायची तेजपात) मिलाकर उसमें तेल सेंधानोन मिला नित्य इससे दाँतोंको साफ करे ॥ १३ ॥ फिर दाँतनकी नरम कूचीसे एक एक दाँतको साफ करे और ऊपर लिखे चूर्णसे दाँतोंकी जडोंमसूढोंको साफ करे, परन्तु ऐसी नरम रीतिसे चूर्णको मले जिससे तखलीफ न हो ॥ १४ ॥

गुण ।

तद्दौर्गन्ध्योपदेहौतुश्लेष्माणंचापकर्षति ॥
वैशद्यमन्नाभिरुचिंसौमनस्यंकरोतिच ॥ १५ ॥

गंडूषमापिकुर्वीतशीतेनपयसामुहुः ॥
कफतृष्णामलहरंमुखांतःशुद्धिकारकम् ॥ २० ॥

ठंढे जलसे वारम्बार कुल्ले करना कफ तृषा मैलको नष्ट करता है और मुखके भीतरकी शुद्धि करता है ॥ २० ॥

मुँहधोना ।

क्षीरवृक्षकषायैर्वा क्षीरेण च विमिश्रितः ॥
भिल्लोदककषायेणतथैवामलकस्यच ॥
प्रक्षालयेन्मुखंनेत्रेस्वस्थःशीतोदकेनवा ॥ २१ ॥
नीलिकांमुखशोषंचपिडिकांव्यंगमेवच ॥
रक्तपित्तकृतान्रोगान्सद्यएवविनाशयेत् ॥
मुखंलघुनिरीक्षेतदृढंपश्यतिचक्षुषा ॥ २२ ॥

दूधवाले वृक्षोंके काथोंसे अथवा इनमें दूध मिलाकर मुख धोवे अथवा भिल्लोदक कषाय (पर्वतोंमें केदारके जल) से मुख धोवे। (कोई कहते हैं धूपमें गरम करके फिर ठंढा कियाहुआ पानी भिल्लोदक कषाय होता है) इससे मुँह धोवे तथा आंवलोंके काथसे आँखोंको छींटे देकर धोवे अथवा स्वस्थ मनुष्य शीतल जलसे मुख और आँखोंको धोवे ॥ २१ ॥ मुख धोनेसे काले २ धब्बे मुँहकी खुश्की और मुहाँसे झाईं आदि तथा रक्तपित्तके रोग शीघ्र नष्ट होते हैं, मुख हलका साफ दीखता है और नेत्र धोनेसे दृष्टि दृढ होती है ॥ २२ ॥

नेत्रांजन ।

मतंस्रोतोञ्जनंश्रेष्ठंविशुद्धंसिंधुसंभवम् ॥
दाहकंडूमलघ्नंचदृष्टिक्लेदरुजापहम् ॥ २३ ॥
अक्ष्णोरूपावहंचैवसहतेमारुतातपौ ॥
ननेत्ररोगाजायंतेतस्मादंजनमाचरेत् ॥ २४ ॥

मुंह धोकर सिंधु नदिका उत्पन्न हुवा अंजन (कालासुर्मा) लगाना चाहिये। यह दाह खाज नेत्रोंकी मैलको दूर करताहै और दृष्टि

और रोगों को दूरकरताहै ॥ २३ ॥ और नेत्रोंको सुंदररूपवाले करताहै तथा वायु और धूपकी सहनशक्ती होजातीहै और नेत्रोंमें रोग नहीं उत्पन्न होतेहैं । इससे अंजन नित्य आँजना चाहिये ॥ २४ ॥

निषेध ।

भुक्त्वाऽशिरसास्नातःश्रांतश्छर्दनवाहनैः ।
रात्रौजागरितश्चापिनांज्याज्ज्वरितएवच ॥ २५ ॥

भोजन करके तुरंत शिर धोकर वमन अथवा असवारीसे थकेहुवेको रातके जागेहुवेको ज्वरवालेको सुर्मा न डालना चाहिये ॥ २५ ॥

शिरोगतांस्तथारोगाञ्छिरोऽभ्यंगोऽपकर्षति ॥
केशानांमार्दवंदैर्घ्यंबहुत्वंस्निग्धकृष्णता ॥ २६ ॥
करोतिशिरसस्तृप्तिंसुत्वक्त्वमपिचालनम् ॥
संतर्पणंचेन्द्रियाणांशिरसःप्रतिपूरणम् ॥ २७ ॥

शिरमें तेल लगाना शिरके रोगोंको दूरकरताहै तथा बालोंको नरम करताहै और बढाताहै और अधिक (घनके) पैदा करताहै तथा चिकने और काले करताहै ॥ २६ ॥ दिमागको तृप्तकरताहै, शिरकी त्वचाको सुंदर नरम करताहै, रक्तका संचार करताहै । नाक, कान, नेत्रोंको तृप्त करताहै, शिरको पूर्ण करताहै ॥ २७ ॥

शिरमें लगानेका तेल ।

मधुकंक्षीरशुक्लाचसरलंदेवदारुच ॥
क्षुद्रकंपंचनामानंसमभागानिसंहरेत् ॥ २८ ॥
तेषांकल्ककषायाभ्यांचक्रतैलंविपाचयेत् ॥
सदैवशीतलंजंतोर्मूर्ध्नितैलंप्रदापयेत् ॥ २९ ॥

मुलेठी क्षीरविदारी, सरल, देवदारु, और लघु पंचमूल इन सबको सम भाग लेकर इनके काथ और कल्कसे कोल्हूके पिडे हुए तिलतैलको सिद्ध करके ठंडा करले, फिर इस तैलको नित्य शिरमें लगाना चाहिये ॥ २८ ॥ २९ ॥

कंघीकरना और कानोंमें तेल डालना ।

केशप्रसाधनीकेश्यारजोजन्तुमलापहा ॥ ३० ॥
हनुमन्याशिरःकर्णशूलघ्नंकर्णपूरणम् ॥ ३१ ॥

कंघी करना केशोंको हित है धूल जन्तु (जम) मैल आदिको दूर करता है ॥ ३० ॥ कानमें तेल डालना ठोडी शिर और कानके दरदको दूरकरता है ३१

शरीरपर तैलमलना ।

अभ्यंगोमार्दवकरःकफवातनिरोधनः ॥
धातूनांपुष्टिजननोमृजावर्णबलप्रदः ॥ ३२ ॥

शरीरपर तैल मलना शरीरको मुलायम करता है, कफ और वायुको रोकता है धातुओंको पुष्ट करता है, शुद्धि तथा रूप और बलके देने-वाला है ॥ ३२ ॥

निषेध ।

केवलंसामदोषेषुनकथंचनयोजयेत् ॥
तरुणज्वर्यजीर्णीचनाभ्यक्तव्यौकथंचन ॥ ३३ ॥
तथाविरिक्तोवांतश्चनिरूढोयश्चमानवः ॥
पूर्वयोःकृच्छ्रताव्याधेरसाध्यत्वमथापिवा ॥ ३४ ॥
शेषाणांतदहःप्रोक्ताअग्निमांद्यादयोगदाः ॥
संतर्पणसमुत्थानांरोगाणांनैवकारयेत् ॥ ३५ ॥

आम सहित दोषोंमें केवल स्नेहका उपयोग करना उचित नहीं, तथा तरुण ज्वरवाले और अजीर्णवालेको भी तैलाभ्यंग नहीं करना ॥ ३३ ॥ विरेचन तथा मनके पीछे निरूहण बस्तीके पीछे भी तेल मर्दन न करना चाहिये। क्योंकि इन समयोंमें तैल मलनेसे उपरोक्त (तरुण ज्वरादि) बीमा-रियां कष्टसाध्य बल्कि असाध्यही होजाती हैं ॥ ३४ ॥ और विरेचन वमन निरूढ इनमें तैल मर्दनसे मन्दाग्नि आदि रोग होजातेहैं । संतर्पणसे पैदा हुए रोगमें भी स्नेह न लगाना चाहिये ॥ ३५ ॥

कसरत करना ।

शरीरायासजननंकर्मव्यायामसंज्ञितम् ॥
तत्कृत्वातुसुखंदेहंविमृन्दीयात्समंततः ॥ ३६ ॥
शरीरोपचयःकांतिर्गात्राणांसुविभक्तता ॥
दीप्ताग्नित्वमनालस्यंस्थिरत्वंलाघवंमृजा ॥ ३७ ॥

शरीरको श्रम पैदा करनेवाले कर्मको व्यायाम कहतेहैं उस व्यायाम (कसरत) करनेसे शरीरको सुख होता है, और शरीर सब तरफसे सुडौल होजाता ॥ ३६ ॥ और शरीरकी वृद्धि और कांति बढती हैं, सब अंगोंका सुन्दर ाग होता है । शरीरकी स्थिरता, हलकापन, शरीरके दोषोंकी शुद्धि और आता है ॥ ३७ ॥

अतिव्यायामका निषेध ।

क्षयस्तृष्णारुचिच्छर्दिरक्तपित्तभ्रमक्लमाः ॥
कासशोषज्वरश्वासाअतिव्यायामसंभवाः ॥ ३८ ॥

अति व्यायाम करनेसे क्षय तृषा अरुचि वमन रक्तपित भ्रम क्लम कास ष (शरीरका सूखना) ज्वर श्वास इतने रोग होतेहैं इसवास्ते अत्यंत कसरत करै ॥ ३८ ॥

निषेध ।

रक्तपित्तिःकृशःशोषीश्वासकासक्षतातुरः ॥
भुक्तवांस्त्रीषुचक्षीणोभ्रमार्तश्चहिवर्जयेत् ॥ ३९ ॥

रक्तपित्त वाला शोषरोगी श्वास खांसी अथवा उरक्षत रोगवाला भोजनके छे जो स्त्रीसंगसे क्षीण होगया हो भ्रमसे और बीमार मनुष्य कसरत कभी करे ॥ ३९ ॥

उबटनमलना ।

उद्वर्तनंवातहरंकफमेदोविलापनम् ॥
स्थिरीकरणमंगानांत्वक्प्रसादकरंपरम् ॥ ४० ॥

शिरामुखविविक्तत्वंत्वक्स्थस्याग्नेश्चतेजनम् ॥
उद्धर्षणंतुविज्ञेयंकंडुकोठानिलापहम् ॥ ४१ ॥

उबटना लगाना वायुके हरनेवाला कफ और मेदके विलानेवाला और अंगोंको स्थिर करनेवाला तथा त्वचाके परम प्रसन्न करने वालाहै । शिराओंके मुखोंके खोलनेवाला त्वचाकी अग्निको उत्तेजित करनेवालाहै ॥ ४० ॥ और उद्धर्षण (रुमालसे शरीरको मलना) खाजको शरीरपर जो चकरे पड़तेहैं उनको और वायुको दूर करताहै ॥ ४१ ॥

स्नान ।

निद्रादाहश्रमहरंस्वेदकंडूतृषापहम् ॥
हृद्यंमलहरंश्रेष्ठंसर्वेन्द्रियविशोधनम् ॥ ४२ ॥
तन्द्रापापोपशमनंतुष्टिदंपुंस्त्ववर्द्धनम् ॥
रक्तप्रसादनंचापिस्नानमग्नेश्चदीपनम् ॥ ४३ ॥

उबटने उद्धर्षणके पीछे नित्यस्नान करना चाहिये । स्नान करना, निद्र दाह, श्रमको नाश करताहै । पसीना, खाज, तृषाको नष्ट करताहै । हृदयव हितहै । मैलको दूर करनेवाला श्रेष्ठ सब इन्द्रियोंको शुद्ध करताहै ॥ ४२ तंद्रा (अधमुचिआँखे या आलस्य) और पापको नष्ट करता तुष्टिदायक पुर षार्थके बढानेवालाहै । रुधिरको प्रसन्न और स्वच्छ करताहै और जठराग्नि तेज करताहै ॥ ४३ ॥

उष्णेनशिरसःस्नानमाहितंचक्षुषःसदा ॥
शीतेनशिरसःस्नानंचक्षुष्यमितिनिर्दिशेत् ॥ ४४ ॥
श्लेष्ममारुतकोपेतुज्ञात्वाव्याधिबलाबलम् ॥
काममुष्णंशिरःस्नानंभैषज्यार्थंसमाचरेत् ॥ ४५ ॥
अतिशीताम्बुशीतेचश्लेष्ममारुतकोपनम् ॥
अत्युष्णउष्णकाले च पित्तशोणितवर्द्धनम् ॥ ४६ ॥

गरम जलसे शिरको धोना सदा नेत्रोंको हानि कारक है और शीत जलसे शिरका स्नान करना अत्यन्त नेत्रोंको हितकारक है ॥ ४४ ॥ क

देनेवाला और शुभ है। तथा हिंसकोंके भयका नाशक और वशीकरण करता है ॥ ४९ ॥ ५० ॥

आहारके गुण ।

आहारःप्रीणनःसद्योबलकृद्देहधारणः ॥
स्मृत्यायुःशक्तिवर्णौजःसत्त्वशोभाविवर्द्धनः ॥ ५१ ॥
यथोक्तगुणसंपन्नं नरः सेवेत भोजनम् ॥
विचार्यदोषकालादीन्कालयोरुभयोरपि ॥ ५२ ॥

आहार (भोजन करना) पुष्टाई करताहै । तत्काल बलकारक देहक धारणकर्ता, तथा स्मृति आयु शक्ति वर्ण ओज सत्त्व और शोभा इनक बढाताहै ॥ ५१ ॥ यथोक्तगुणसंपन्न (अर्थात् जलाहुवा कच्चा, देरक बनाहुवा न हो । स्वादिष्ठ गरम घृतयुक्त उत्तम समयानुसार हो) ऐसे अन्न को दोष और काल विचारकर दोनों समय (१० बजे दिनको और ८ बजे रात्रिको) भोजन करना चाहिये ॥ ५२ ॥ कोई कहते हैं—(क्षुत्संभवतिपक्वेषुरसदोषमलेषुच । कालेवायदिवाकालेसोन्नकालउदाहृतः) जब इस प्राणीको रस दोष और मल पक जाते हैं तब भूख लगतीहै । बस जब भूख लगती है वही भोजन करनेका समयहै ॥

भोजनाग्रेसदापथ्यंलवणार्द्रकभक्षणम् ।
अग्निसंदीपनंरुच्यंजिह्वाकंठविशोधनम् ॥ ५३ ॥

भोजन करनेसे पहले सेंधानिमक और अद्रखका खाना पथ्यहै । यह जठराग्निको तेज करताहै, अन्नमें रुचि बढाताहै तथा जीभ और कंठको शुद्ध करताहै ॥ ५३ ॥

विषमाशनके दोष ।

आलस्यगौरवाटोपशब्दांश्चकुरतेऽधिकम् ॥
हीनमात्रंतनोःकार्श्यंकरोतिचबलक्षयम् ॥ ५४ ॥

अधिक भोजन करनेसे, आलस्य भारीपना, पेटकाफूलना, गुडगुडाहटका शब्द करना आदि उपद्रव होतेहैं, इसीतरे थोडा भोजन करना कृश और कम-

करके सोतेवख्त पहले आठ श्वास सीधा चित्त सोना चाहिये । फिर सोला १६ श्वास दहनीकडथल और बत्तीस ३२ श्वास वामपार्श्वलेवे । फिर अपनी इच्छा पूर्वक सोवे ॥ ६७ ॥ प्राणियोंके नाभिसे ऊपर बाईं ओर जठराग्निरहती है इसीसे भोजन पचानेके वास्ते बाईं करवट सोना चाहिये ॥ ६८ ॥

पवन ।

सुखंप्रवातंसेवेतग्रीष्मेशरदिचांतरा ॥
निर्वातमायुषेसेव्यमारोग्यायचसर्वदा ॥ ६९ ॥

गरमियोंमें और शरदऋतुमें इच्छापूर्वक खब हवा खावे । बाकीकी ऋतुवों आरोग्यताके वास्ते हवा (वायु) से बचना चाहिये ॥ ६९ ॥

दिवास्वापंनकुर्वीतयतोऽसौस्यात्कफावहः ॥
ग्रीष्मवर्ज्येषुकालेषुदिवास्वापोनिषिध्यते ॥ ७० ॥
व्यायामप्रमदाध्ववाहनरतान्क्लांतानतीसारिणः
शूलश्वासवतस्तृषापरिगतान्हिक्कामरुत्पीडितान् ॥
क्षीणान्क्षीणकफाञ्शिशून्मदहतान्वृद्धान्रसाजीर्णिनो
रात्रौजागरितान्नरान्निरशनान्कामंदिवास्वापयेत् ॥ ७१

दिनमें सोना कफको पैदा करताहै इसवास्ते दिनमें न सोना चाहिये, ग्रीष्मऋतुमें(गरमियोंमें)दिनमें सोनेका डर नहीं,इसवास्ते गरमियोंमें इच्छापूर्वक सोवे ॥ ७० ॥ सोनेयोग्य प्राणी दंड कसरत करके श्रमहुवाहो तो या स्त्रीसं करके अथवा रास्ता चलकर हारगयाहो, ग्लानि अतिसाररोगी शूल श्वा प्यास हिचकी बादीसे पीडित क्षीण तथा कफ जिनका क्षीण होगयाहो बालक नसेवाला वृद्ध रसाजीर्णी और जो रात्रिको जागेहो जिनने कुछ भोजन न कराहो ऐसे प्राणियोंको दिनमेंभी यथेष्ट सोना चाहिये ॥ ७१

शयनंचासनंचातिनभजेन्नद्रवाधिकम् ॥
नाग्न्यातपौनप्लवनंनयानंनापिवाहनम् ॥ ७२ ॥
व्यायामंचव्यवायंचधावनंयानमेवच ॥
युद्धगीतंचपाठंचमुहूर्त्तंभुक्तवाँस्त्यजेत् ॥ ७३ ॥

भोजनाज्जायतेव्याधिर्मैथुनाद्गर्भविकृतिः ॥
निद्रायानिःस्वतापाठादायुर्हानिर्गतेर्भयम् ॥ ७९ ॥

भोजन मैथुन निद्रा (सोना) पढना मार्गचलना पांचकामोंको सायं-कालमें मनुष्य त्याग दे ॥ ७८ ॥ भोजन करनेसे बीमारी होती है, मैथुन करनेसे विकृत गर्भ होता है, सोनेसे दरिद्रता पढनेमें आयुकी हानि मार्ग चलनेसे भय हो ॥ ७९ ॥

सदाचारस्त्वल्पतयाकिंचित्किंचिल्लिपीकृतः ॥
स्त्रीचर्यांलेखयिष्यामिस्वांप्रतिज्ञांचपालयन् ॥ ८० ॥

सदाचार तो सूक्ष्म रीतिसे कुछ कुछ इस अध्यायमें प्रसंगवश लिखदिया है। अब स्त्रीचर्या चकारसे गर्भविघातक हेतुओंको और उनकी चिकित्सा को, ग्रन्थारम्भमें जो प्रतिज्ञा की थी उसकी पालना करता हुआ लिखता हूँ ॥ ८० ॥

इति श्रीशुभसन्ततियोगप्रकाशे प्रथमखण्डे द्वितीयोऽध्यायः ।

अथातोयोग्यायोग्यप्रदर्शनीयाऽध्यायंव्याख्यास्यामः ॥ १ ॥
अब योग्य वा अयोग्य दिखाने वाले अध्यायको वर्णन करते हैं ॥ १

अजीर्णेभोजनंयच्चयच्चजीर्णेनभुज्यते ॥
रात्रौनभुज्यतेयच्चतेनजीर्यन्तिमानवाः ॥ २ ॥

अजीर्णमें भोजन करना और जीर्णमें अर्थात् भूख लगीमें भोजन न करनेसे और जो रात्रिमें भोजन नहीं करते इससे प्राणी शीघ्र बुड्ढे होते हैं ॥ २ ॥

वर्षशतंखल्वायुषःप्रमाणमस्मिन्काले तस्यनिमित्तंप्रकृतिगुणा-त्मसम्यक्सात्म्योपसेवनंचेति ॥ ३ ॥

इसकालमें आयुका प्रमाण सौ १०० वर्षकाहै, इसके तीन निमित्तहैं। यथा मातापिताके शुक्र और रजका उत्तम होना आत्मकृत कर्मोंका श्रेष्ठ होना और सात्म्यपदार्थोंका सेवन करना ॥ ३ ॥

तच्चत्रिविधंबाल्यंमध्यंवृद्धमिति ॥ तत्रोनषोडशवर्षाबालास्तेपि त्रिविधाःक्षीरपाःक्षीरान्नादाःअन्नादाइति ॥ तेषुसंवत्सरपराःक्षीरपाःद्विसंवत्सरपराःक्षीरान्नादाःपरतोन्नादाइति ॥ ४ ॥

वह आयु तीन प्रकारकी होती है। बाल अवस्था मध्य अवस्था वृद्ध अवस्था। इनमें सोलह वर्षसे नीचे बाल अवस्था कहातीहै। बालभी तीन प्रकारके होतेहैं। दूधपीनेवाले दूध और अन्न दोनोंका आहार करनेवाले और अन्न खानेवाले। उनमें एकवर्षकी अवस्था तक दूधपीनेवाले और दो वर्षकी अवस्थातक दूध व अन्नका आहार करने वाले; इससे उपरांत अन्न खानेवाले ॥ ४ ॥

षोडशसप्तत्योरन्तरेमध्यंवयस्तस्यविकल्पोवृद्धिर्यौवनंसंपूर्णताहानिरिति ॥ तत्राविंशतेर्वृद्धिरात्रिंशतोयौवनमाचत्वारिंशतःसर्वधात्विंद्रियबलवीर्यसंपूर्णता ॥ अतऊर्ध्वमीषत्परिहानिर्यावत्सप्ततिरिति ॥ ५ ॥

सोलह वर्षकी अवस्थासे लेकर सत्तर वर्षकी अवस्थातक मध्य अवस्था होती है उसके ये भेदहैं। वृद्धि, युवा, संपूर्णता, हानि, सोलहसे बीस तक वृद्धि, २० ससे तीसतक युवा, ३० ससे ४० चालीस तक संपूर्णता, या स्थिति; इससे उपरान्त सत्तर वर्षकी अवस्था तक कुछ २ घटाव होताहै इसीसे इसको हानि अवस्था कहतेहैं ॥ ५ ॥

सप्ततेरूर्ध्वंक्षीयमाणधात्विंद्रियबलवीर्योत्साहमहन्यहनिवलीपलितखालित्यजुष्टंकासश्वासप्रभृतिभिरुपद्रवैरभिभूयमानंसर्वक्रियास्वसमर्थंजीर्णागारमिवाभिवृष्टमवसीदंतंवृद्धमाचक्षते ॥ ६ ॥

सत्तरवर्षकी अवस्थासे ऊपर सब धातु इन्द्रिय बलवीर्य उत्साह दिनदिन क्षीणही होताजाताहै। शरीरकी त्वचामें वलवट पडजातेहैं, सब बाल सफेद होजातेहैं और उडभी जातेहैं। खाँसी, श्वास, आदिके उपद्रवोंसे पीडित हो सबकार्योंमें असमर्थ होजाताहै। जैसे पुराना जीर्णघर मेघवर्षनेसे गिर पडताहै ऐसे जीर्ण अवस्था वालेको वृद्ध कहतेहैं ॥ ६ ॥

केचित्तु षोडशादारभ्य पंचविंशतिपर्यंतं वृद्धिरिति ॥
धात्विन्द्रियबलवीर्योत्साहादिवर्द्धनाद्वृद्धिः ॥ ७ ॥

कोई आचार्य कहतेहैं सोलह वर्षसे २५ तक वृद्धिहै । धातु इन्द्रिय बल वीर्य उत्साह आदि बढनेसे वृद्ध अवस्था कही जातीहै ॥ ७ ॥

पञ्चविंशतिपर्यन्तं ब्रह्मचर्यं समाचरेत् ॥
धैर्यवान् गुणसंपन्नः शतायुस्तु भविष्यति ॥ ८ ॥

पचीस वर्षतक ब्रह्मचर्यका पालन करे (ब्रह्मचर्यावस्थायां विद्याध्ययन माचरेत्) इस ब्रह्मचर्य अवस्थामें विद्याध्ययन करे । पचीस वर्ष ब्रह्मचर्य रखनेसे धैर्यवान् सब गुणोंमें संपन्न तेजस्वी सौवर्षकी उमर वाला होताहै ॥ ८ ॥

ब्रह्मचर्यफलश्रुति ।

अथ यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेतत् ॥
ब्रह्मचर्येण ह्येव यो ज्ञाता तं विंदते ॥ ९ ॥
अथ यदिष्टमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तत् ॥
ब्रह्मचर्येणैवेष्ट्वात्मानमनुविन्दते ॥ १० ॥

जिसको यज्ञ कहतेहैं वह ब्रह्मचर्यहीहै । क्योंकि, परम पुरुषार्थका साधन यज्ञहै, तैसेही ब्रह्मचर्यभी परमपुरुषार्थका साधनहै । तात्पर्य यहहै कि, यज्ञसे होनेवाला फल ब्रह्मचर्य पालनसे प्राप्त होसक्ताहै । यज्ञ करनेसे धीरे २ चित्त शुद्ध होनेसे ज्ञान पाकर ब्रह्मलोक पाताहै । तैसेही ब्रह्मचर्य साधनसे ज्ञान पाकर ब्रह्मलोक पाताहै ॥ ९ ॥ जिसको इष्ट कहते हैं वह ब्रह्मचर्यही है। जैसे इष्टसाधक परमेश्वरकी सेवा आदिसे अपनी सब कामनाओंको परमेश्वर परायण करके उसको पाजाते हैं वैसेही ब्रह्मचर्य साधनसे ब्रह्मचारी अपनी सब कामनाओंको परमेश्वरपरायण कर परमात्माको पाजाता है ॥ १० ॥

तद्य एतं ब्रह्मलोकं ब्रह्मचर्येणानुविन्दन्ति तेषामेवैष ब्रह्मलोकस्तेषां सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति ॥ ११ ॥

सामवेदके छान्दोग्य उपनिषदमें ब्रह्मलोकका वर्णन करके कहा है । वह पहले कहा हुआ ब्रह्मलोक ब्रह्मचर्यसे मिलता है । ब्रह्मचर्य साधन करनेवाला

ब्रह्मज्ञानी होकर ब्रह्मलोकको पाता है । बल्कि अपनी इच्छानुसार सब लोकोंमें फिर सक्ता है । जैसे नारदजी स्वेच्छाचारी प्रसिद्ध हैं ॥ ११ ॥

ब्रह्मचर्यका लक्षण ।

स्मरणंकीर्तनंकेलिःप्रेक्षणंगुह्यभाषणम् ॥
संकल्पोध्यवसायश्चक्रियानिर्वृतिरेवच ॥ १२ ॥
एतन्मैथुनमष्टांगंप्रवदंतिमनीषिणः ॥
विपरीतंब्रह्मचर्यमेतदेवाष्टलक्षणम् ॥ १३ ॥

ब्रह्मचारीके लिये शास्त्रोंमें सबसे अधिक मैथुनका निषेध है । वह मैथुन ८ प्रकारका है—स्मरण, स्त्रीका कीर्तन, स्त्रीके मिलापको देखना, स्त्रियोंकी ओर देखना, स्त्रीके साथ एकान्तमें गुप्त बातचीत करना, मनमें स्त्री विषयका संकल्प करना, स्त्रीका ध्यान करना, और स्त्रीसंग करना, यह विद्वानोंने आठ प्रकारका मैथुन कहा है । इस ८ प्रकारके मैथुनसे बचनाही ब्रह्मचारीका सबसे बडकर धर्म है ॥ १२ ॥ १३ ॥

ब्रह्मचर्यप्रभावेणपुराशांतनवादयः ॥
विद्याबलंसमासाद्यकार्यंचक्रुरमानुषम् ॥ १४ ॥
ब्रह्मचर्यविहीनावैविद्याबलविवर्जिताः ॥
धैर्यतेजोविरहिताःकुलांगाराधुनावयम् ॥ १५ ॥
यतोवृद्धेरवस्थायांमैथुनेनक्षयंगताः ॥
अतोल्पायुर्गतोत्साहाःरोगग्रस्तकलेवराः ॥ १६ ॥

ले ब्रह्मचर्यके प्रभावसे विद्या व बलको प्राप्त होकर भीष्मादि बडे बडे देवताओंकी सदृश काम करके इस देशकी कीर्तिको बढागये ॥ १४ ॥ ी ब्रह्मचर्यके विना विद्याबलसे हीन धैर्य और तेजसे रहित अपने लके कलंक हमलोग होरहे हैं ॥ १५ ॥ सोलहवर्षसे २५ तक या जो वृद्ध्यवस्था कही है इसमें यदि मैथुन आदिसे ब्रह्मचर्य नष्ट होजाय द्धि अवस्थामें बढनेवाली धातु आदि क्षीण होजाती हैं । इसी सबबसे ी उमर वाले व उत्साह रहित नित्य रोगोंसे पीडित होतेहैं ॥ १६ ॥

उक्तंचधन्वन्तरिणाशुश्रुतायगर्भाधानविषये—

ऊनषोडशवर्षायामप्राप्तःपञ्चविंशतिम् ॥

यद्याधत्तेपुमान्गर्भंकुक्षिस्थःसविपद्यते ॥ १७ ॥

जातोवानचिरंजीवेज्जीवेद्वादुर्बलेन्द्रियः ॥

तस्मादत्यंतबालायांगर्भाधानंनकारयेत् ॥ १८ ॥

भगवान् धन्वन्तरीजीने शुश्रुतसे गर्भाधान विषयमें ऐसा कहा है—सोलह वर्षकी अवस्थासे छोटी स्त्रीके पचीस वर्षकी अवस्थासे छोटा पुरुष यदि गर्भाधान करे तो वह गर्भ कुक्षिहीमें विकारको प्राप्तहो खंडित होजाता है । यदि पूरा होकर बालक जन्मभी लेवे तो अल्पायु (थोडी उमरका) होवे, अर्थात् बहुत दिन न जीवे। यदि जीवेभी तो दुर्बल इन्द्रियों वाला कमजोर रोगग्रस्त होय । इस कारण अति छोटी अवस्थामें गर्भाधान न करे ॥ १८ ॥

सर्वथादुःखनाशायब्रह्मचर्यंसमाचरेत् ॥

ब्रह्मचर्यविहीनानांदुःखानिस्युःपदेपदे ॥ १९ ॥

सर्वथा सब दुःखोंके नाश करनेको ब्रह्मचर्य साधन करना चाहिये । यदि उसी ब्रह्मचर्यसे रहित हो तो फिर बारंबार दुःखही भोगने पडते हैं (क्योंकि ब्रह्मचर्य विहीन पुरुष इस लोक व परलोकके सब कामोंमें असमर्थ होताहै) १९ ॥

ब्रह्मचर्यंसमाप्याथगृहधर्मंसमाचरेत् ॥

ऋणत्रयविमुक्त्यर्थंधर्मेणोत्पादयेत्प्रजाम् ॥ २० ॥

ब्रह्मचर्य अवस्था पूर्ण होनेके अनंतर यौवन अवस्थामें गृहस्थ ध पालन करे । ऋणत्रय—देवऋण, ऋषिऋण, व पितृऋण इन तीनों ऋ छूटनेके लिये धर्मसे संतान पैदाकरे ॥ २० ॥

मैथुनयोग्यपुरुष ।

स्नातश्चंदनलिप्तांगःसुगंधसुमनोऽन्वितः ॥

भुक्तवृष्यःसुवसनःसुवेषसमलंकृतः ॥ २१ ॥

तांबूलवदनःपत्न्यामनुरक्तोधिकस्मरः ॥ है । वह

पुत्रार्थीपुरुषोनारीमुपेयाच्छयनेशुभे ॥ २२ ॥ रनेवाला

रूपवती, गुणयुक्त, अपनी प्रकृतिके अनुसार मदनाद वाली, अच्छे कुलमें प्रगट हुई, अत्यंत कामपीडित, पुरुषसे कामकी इच्छावाली प्रसन्नतासे प्रसन्नचित्तवाली, वस्त्रभूषणोंसे सजीहुई ऐसी स्त्रीको वाजीकरण पदार्थोंसे बढा हुवा पुरुष सेवन करे ॥ २६ ॥

त्याज्यसमय ।

उपेयात्पुरुषोनारींसंध्ययोर्नचपर्वसु ॥
गोसर्गेचार्धरात्रेचतथामध्यदिनेपिच ॥ २७ ॥

दोनों संध्या सवेरे व सायंकाल, पर्व (अमावस्या एकादशी आदि) जब गौवोंके छोडनेकी वक्त हो और अर्धरात्रिमें और मध्याह्नके समय स्त्रीसंग न करे ॥ २७ ॥

देशेगुरुजनासन्नेविवृतेऽतित्रपाकरे ॥
श्रूयमाणेव्यथाहेतुवचनेनरमेतना ॥ २८ ॥

जहाँ माता पिता आदि गुरुजन समीपहो जो खुला स्थानहो अति लज्जा व्यथा करने वाली वाणी सुननेमें आवे उसजगे कदाचित् स्त्रीसंग न करे २८

त्याज्यस्त्री ।

रजस्वलामकामांचमलिनामप्रियांतथा ॥
वर्णवृद्धांवयोवृद्धांतथाव्याधिप्रपीडिताम् ॥ २९ ॥
हीनांगींगर्भिणींद्वेष्यांयोनिरोगसमन्विताम् ॥
सगोत्रांगुरुपत्नींचतथाप्रव्रजितामपि ॥
नाभिगच्छेत्पुमान्नारींभूरिवैगुण्यशंकया ॥ ३० ॥

रजस्वला काम न चाहनेवाली, मैली जो प्यारी न हो अपने वर्णसे ऊंच र्णकी, अवस्थामें बडी, गरमीआदि योनिरोगसे पीडित अपने कुटुंब गुरु कीस्त्री संन्यासिन बैरागन ऐसी स्त्रियोंमें अनेक दोषोंके भयसे गमन न करे ॥ २९ ॥ ३० ॥

१—रक्तजाःकृमयःसूक्ष्मामृदुमध्योग्रशक्तयः । स्मरसद्मसुकंडूतिंजनयन्तियथाबलम् ।

कामस्थानके मुखमें स्त्रियोंके तीन नाडी होतीहैं १ मर्मागणा, २ चांद्रमुखी, ३ गौरी, इनका विशेष वर्णन इस तरेहै । मदनातपत्रमें प्रधानभूत जो मर्मागणा नामक विशेषनाडीहै उसके मुखमें वीर्य गिरनेसे निष्फल जाताहै । और दूसरी जो प्रधानभूत चांद्रमुखी नाडी कामस्थानमेंहै उसके मुखमें वीर्य गिरनेसे वह स्त्री कन्या प्रगट करे और वह रतोत्सव थोडेहीमें साध्यहै । तथा जो गर्भमें उपस्थ प्रधानभूत गौरी नामक नाडीहै उसमें वीर्य गिरनेसे पुत्रही प्रगट करे यह कष्टोपभोग्यहै ॥ ५८–५९ ॥

गर्भाशयका स्वरूप ।

शंखनाभ्याकृतिर्योनिस्त्र्यावर्तासाप्रकीर्तिता ॥
तस्यातृतीयेत्वावर्तेगर्भशय्याप्रतिष्ठिता ॥ ६० ॥
यथारोहितमत्स्यस्यमुखंभवतिरूपतः ॥
तत्संस्थानात्तथारूपांगर्भशय्यांविदुर्बुधाः ॥ ६१ ॥

शंखकी नाभिके आकारकी स्त्रीकी योनि तीनवली वाली होतीहै उसकी तीसरी वलीमें गर्भशय्या होतीहै । जैसा रोहूमछलीका मुख होताहै उसके सदृश बाहरसे छोटा व भीतरसे बडा ऐसेही गर्भशय्या का मुखहोताहै और जैसे रोहू मछली जलमें रहतीहै ऐसेही गर्भाशयभी पक्काशय व पित्ताशयके बीचमें है ॥ ६० ॥ ६१ ॥

गर्भावतरणक्रम ।

सौम्यंशुक्रमार्तवमाग्नेयमितरेषामप्यत्रभूतानांसांनिध्यमस्त्यणुना विशेषेणपरस्परोपकारात्परस्परानुग्रहात्परस्परानुप्रवेशाच्च ॥ ६२ ॥
तत्रस्त्रीपुंसयोःसंयोगेतेजःशरीराद्वायुरुदीरयतिततस्तेजोनिलस न्निपाताच्छुक्रंच्युतंयोनिमभिप्रतिपद्यतेसंसृज्यतेचार्तवेनततोग्नि-सोमसंयोगातसृज्यमानोगर्भोगर्भाशयमनुप्रतिपद्यते ॥ ६३ ॥

गर्भोत्पत्तिमें वीर्य सोमात्मक व आर्तव अग्न्यात्मकहै (अग्निसोमात्मकंजगत) और इनके सिवाय पृथ्वी, वायु, और आकाश इनकाभी थोडाबहुत करके सम्बन्धहै । क्योंकि सब आपसमें उपकारक होनेसे और एक दूसरेका अनु-

सीसा) के संयोगसे अग्नि प्रगट होती है ऐसेही शुक्रशोणितके सम्बन्धसे ज प्रगट होता है ॥ सो अनादि अनन्त अव्यक्त जीव (आत्म जगतमें बलवती भावी करके अविद्याको स्वीकार कर कर्मवश गर्भमें प्र करता है ॥ यही जीव जिह्वाके स्वादको जानता है, यही देखनेवाला सूंघनेवाला है, स्पर्श करता है सुनता है कहता है, करनेवाला है, गम करता है, रमण करता है और त्यागता है ॥ ६८–६९. ॥

दिनेव्यतीतेनियतंसंकुचत्यंबुजंयथा ॥
ऋतौव्यतीतेनार्यास्तुयोनिःसंव्रियतेतथा ॥ ७० ॥

जिसतरे दिन बीत जानेपर कमल संकुचित यानी बन्द होता है ऐसेह ऋतुके दिन रजो दर्शनसे सोलह दिन बीतनेपर गर्भाशयका मुख बन्द हो जाता है ॥ ७० ॥

बीजेंतर्वायुनाभिन्नेद्वौजीवौकुक्षिमागतौ ॥
यमावित्यभिधीयेतेधर्मेतरपुरःसरौ ॥ ७१ ॥
आधिक्येरेतसःपुत्रःकन्यास्यादार्तवेऽधिके ॥
नपुंसकंतयोःसाम्येयथेच्छापारमेश्वरी ॥ ७२ ॥

यदि गर्भाशयका वायु (हवा) गर्भाशयमें प्रवेश होतेही वीर्यके दो टु (खंड) करदेवे तो दो बालक एकही गर्भमें होजातेहैं (या जितनेभाग के पवन करे उतने बालक होतेहैं । क्योंकि कहीं ४ भी देखनेमें आये यह सब धर्माधर्मसे होतेहैं । गर्भाधानके समय वीर्य अधिक होनेसे पुत्र स्त्री आर्तव अधिक होनेसे कन्या और दोनोंके रजवीर्य बराबर होनेसे न होताहै आगे ईश्वरकी इच्छाके आधीनहै ॥ ७१ ॥ ७२॥

आहाराधीन गर्भका स्वभाव ।

आहाराचारचेष्टाभिःयादृशीभिःसमन्वितौ ॥
स्त्रीपुंसौसमुपेयातांतयोःपुत्रोपितादृशः ॥ ७३ ॥

स्त्री और पुरुष जैसे आहार और आचरण व चेष्टा करके मैथुन क हैं उनकी सन्तान भी उसी चेष्टा व आचरणकी होती है ॥ ७३ ॥

दक्षिणोरुःसुपुष्टःस्यात्प्रसन्नमुखवर्णता ॥ ७९ ॥
पुन्नामधेयद्रव्येषुस्वप्नेष्वपिमनोरथः ॥
आम्रादिफलमाप्नोतिस्वप्नेषुकमलादिच ॥ ८० ॥

जिस स्त्रीके गर्भमें पुत्र होताहै उसके दूसरे महीनेमें गर्भाशयमें गर्भगोल पिंडसा प्रतीत होने लगताहै और उसस्त्रीकी दहनी आँख कुछ बडी मालूम होतीहै और प्रथम दहने स्तनमेंही दूध आताहै । दहनी जाँघ पुष्टहोतीहै मुख प्रसन्न रहताहै । जो पुरुषनाम वाली वस्तुहै उनकी इच्छाहो और स्वप्नमेंभी पुरुषवाचक वस्तु मिलै ऐसी इच्छाहो तथा आम नीम्बू आदि फल कमल आदि फूलोंको ग्रहण करे ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥

गर्भमें कन्याके लक्षण ।

कन्यागर्भवतीगर्भेपेशीमासिद्वितीयके ॥
पुत्रगर्भस्यलिंगानिविपरीतानिचेक्षते ॥ ८१ ॥

जिसस्त्रीके गर्भमें कन्याहो उसको दूसरे महीनेमें गर्भमें मांसका लंबा लोथडासा प्रतीतहो और उस स्त्रीकी रुचि स्त्रीसंज्ञक वस्तुवोंपरहो पुत्रके लक्षणोंसे विपरीत कन्यावाले गर्भके लक्षण जानने ॥ ७९ ॥

नपुंसकगर्भके लक्षण ।

नपुंसकंयदागर्भेभवेद्गर्भोऽर्बुदाकृतिः ॥
उन्नतेभवतःपार्श्वेपुरस्तादुदरंमहत् ॥ ८२ ॥

जिस स्त्रीके गर्भमें नपुंसकगर्भहो उसके पेटमें अर्बुदाकार मांसपिंड प्रतीतहो । उस मांसपिंडके दोनों पार्श्व कुछ ऊंचे प्रतीतहों और स्त्रीका पेट आगे बडा दीखे ॥ ८२ ॥

नपुंसकोंके भेद ।

आसेक्यश्चसुगंधीचकुंभिकश्चेर्ष्यकस्तथा ॥
अमीसशुक्राबोद्धव्याअशुक्रःषंडसंज्ञकः ॥ ८३ ॥

आसेक्य, सुगंधी, कुंभीक, ईर्ष्यक, ये शुक्र (वीर्य) युक्त होतेहैं और षण्ढ नपुंसक विना शुक्रके होताहै ॥ ८३ ॥

अनस्थिबालक ।

यदानार्यावुपेयातांवृषस्यंतौकथंचन ॥
मुंचंत्यौशुक्रमन्योन्यमनास्थितत्रजायते ॥ १० ॥

यदि काम वश स्त्री स्त्री आपससें मैथुन करें उस समय अन्योन्य वीर्य छोडे तो गर्भ रहकर बिना हड्डीवाला बालकहो ॥ १० ॥

विनापुरुषगर्भ ।

ऋतुस्नातातुयानारीस्वप्नेमैथुनमाचरेत् ॥
आर्तवंवायुरादायकुक्षौगर्भंकरोतिहि ॥ ११ ॥
मासिमासिप्रवर्धेतसगर्भोगर्भलक्षणः ॥
कललंजायतेतस्यावर्जितंपैत्रिकैर्गुणैः ॥ १२ ॥

ऋतुस्नाता स्त्री यदि स्वप्नमें मैथुन करे तो वायु आर्तवकोही लेकर कुक्षीमें गर्भको करदेती है, वह महीने महीने गर्भके लक्षणोंसे बढता है । जब वह प्रगट हो तो कीचडसाहो पिताके डाढी मोछ नख दांत स्नायु आदिसे रहित हो ॥ ११ ॥ १२ ॥

विकृतगर्भ ।

सर्पवृश्चिककूष्माण्डाकृतयोविकृताश्चये ॥
गर्भास्तेपोषितास्ताश्चज्ञेयाःपापकृतोभृशम् ॥ १३ ॥
गर्भोवातप्रकोपेनदोहदेवावमानिते ॥
भवेत्कुब्जकुणीपंगुमूकोमिन्मिनएवच ॥ १४ ॥

सांप बिच्छू कुष्माण्ड इनकीसी आकृति वाले और विकृत छांगा बौना, दोसिरा विना सिर जुडेहुए दो इत्यादि पैदा होते हैं, ये सब माताके पापसेहीं होते हैं । गर्भवतीके कुपथ्यसे या दोहदके समय कुपथ्यसे बालक कबडा, टोंटा, पिंगला, बहरा, हकला, गूंगा, गुनगुना ऐसे बालक होतेहैं ॥ १३ ॥ १४ ॥

इति श्रीशुभसंततियोगप्रकाशे प्रथमखण्डे योग्यायोग्यप्रदर्शनीयो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

(प्रायः इसीसे अनेकानेक भारत संतान दुःखितहैं हम इसका विशेष वर्णन आगे करेंगे ॥

शुक्रक्षयेमेढ्रवृषणवेदनाऽशक्तिर्मैथुनेचिराद्वा ।
प्रसेकःप्रसेकेचाल्परक्तशुक्रदर्शनंच ॥ ६ ॥

शुक्र क्षीण होनेसे लिंग और वृषणोंमें वेदना स्त्रीगमन की शक्ति न होना कभी देरसे वीर्यपात होना पात होनेमें कुछ रक्तता लिये होना और थोडा होना ॥ ६ ॥

साध्यासाध्यत्व ।

तेषुकुणपग्रंथिपूतिपूयक्षीणरेतसःकृच्छ्रसाध्याः ॥
मूत्रपुरीषरेतसस्त्वसाध्याःशेषाःसाध्याइति ॥ ७ ॥

इनमें मुर्देका गन्धवाला और ग्रन्थियुक्त दुर्गन्ध और राधसदृश और क्षीणवीर्य कष्टसाध्यहैं । मत्र और पुरीषयुक्त असाध्यहैं और बाकी सब साध्यहैं ॥ ७ ॥

आर्त्तवका वर्णन ।

आर्तवमपित्रिभिर्दोषैःशोणितचतुर्थैःपृथक्द्वंद्वैःसमस्तैश्चोपसृष्टम-
बीजंभवतितदपिदोषवर्णवेदनाभिर्विज्ञेयंतेषुकुणपग्रन्थीपूतिपूय-
क्षीणमूत्रपुरीषप्रकाशमसाध्यंसाध्यमन्यत् ॥ ८ ॥

पुरुषके शुक्रकीसदृश स्त्रीका आर्तवभी वायु, पित्त, कफ, इन तीनोंसे चौथे रुधिरसे दूषित होताहै और अलग २ दोदो दोषोंसे या सन्निपातसे दूषित हो तो वह आर्तवभी अबीज अर्थात् संतान पैदा करने लायक नहीं होता उसकोभी पुरुषके वीर्यकी सदृश दोषोंके वर्ण वेदनासे जानना चाहिये, अर्थात् जिस एक या कई दोषों का वर्ण वेदनाहो उसीसे दूषित जानना । इनमेंसे मुर्देकी गंधयुक्त और गांठदार दुर्गंधित राध जैसा क्षीण मलमूत्र युक्त असाध्यहै इनसे इलावा साध्य जानना ॥ ८ ॥

शुक्रशोणितकी शुद्धि ।

तेष्वाद्यान्शुक्रदोषांस्त्रीन्स्नेहस्वेदादिभिर्जयेत् ॥
क्रियाविशेषैर्मतिमांस्तथाचोत्तरबस्तिभिः ॥ ९ ॥

विष्ठाकीसी गन्धहो तो चित्रक खस हींगसे सिद्ध घी पिलावे ॥ शुक्र क्षीण का उपाय वाजीकरणाध्यायमें कहेंगे ॥ १२ ॥

स्निग्धंवांतंविरिक्तंचनिरूढमनुवासितम् ॥
योजयेच्छुक्रदोषार्तंसम्यगुत्तरबास्तिना ॥ १३ ॥

शुक्रदोष वाले मनुष्यको पहले यथोचित स्नेहपान करावे या वमन कराके या विरेचन कराके या निरूहण और अनुवासन वस्ति कर्म करके या अच्छी रीतिसे उत्तर वस्ति करके फिर औषध सेवन करावे ॥ १३ ॥

आर्तवशुद्धि ।

विधिमुत्तरबस्त्यंतंकुर्यादार्तवशुद्धये ॥
स्त्रीणांस्नेहादियुक्तानांचतसृष्वार्तवार्तिषु ॥ १४ ॥
कुर्यात्कल्कान्पिचूंश्चापिपथ्यान्याचमनानिच ॥
ग्रंथिभूतेपिबेत्पाठांत्र्यूषणंवृक्षकानिच ॥ १५ ॥
दुर्गंधेपूयसंकाशेमज्जतुल्येतथार्तवे ॥
पिबेद्भद्रश्रियःक्वाथंचन्दनक्वाथमेवच ॥ १६ ॥
शुक्रदोषहराणांचयथास्वमवचारणम् ॥
दोषाणांशुद्धिकरणंशेषास्वप्यार्तवादिषु ॥ १७ ॥

स्त्रियोंके वातज, पित्तज, कफज, रक्तज इन चारों प्रकारके आर्तव दोषों स्नेहपान, वमन, विरेचन, निरूहण, उत्तर वस्ति पर्यंत क्रिया करे। फिर आर्तव शुद्धिके लिये यथोचित कल्कोंका उपचार करे तथा दोषोंके अनुसार कपडे या रुईकी बत्ती बनाकर औषधियोंमें भिगोकर रक्खे, या उचित द्रव्योंके क्वाथसे पिचकारी करे या वैसेही योनिको धोवे और यथायोग्य पथ्य करे जो आर्तव में गांठें हों तो पाठा, सोंठ, मिर्च, पीपल, कूडा, इनका क्वाथ पीवे ॥ जो रज दुर्गंधितहो या राध सदृशहो या मज्जा जैसाहो श्रीचंदन और सुफेद चन्दनका क्वाथ पीवे ऊपर लिखे दोषोंके सिवाय जो और दोषहो तो वीर्यके दोषहरणार्थ जो क्रिया कही है उसीसे आर्तवको शुद्ध करे ॥ १४–१७ ॥

नष्टार्तव ।

दोषैरावृतमार्गत्वादार्तवंनश्यतिस्त्रियाः ॥
तत्रमत्स्यकुलत्थाम्लतिलशुक्तदधीनिच ॥ १८ ॥

वातादि दोषोंसे जब रजोधर्मका मार्ग रुक जाता है तब स्त्रियोंका मासिक धर्म बन्द होजाता है । यदि आर्तव नष्ट होगयाहो तो उड़द, कुलथी, खट्टे पदार्थ, तिल, सिरका, दधी आदि सेवन करे ॥ १८ ॥

मूलंगवाक्ष्याःस्मरमंदिरस्थंपुष्पावरोधस्यविनाशंकरोति ॥

इन्द्रायणकी जड़को रगड़ कपड़ेकी बत्ती बना कामागारमें रखनेसे आर्तव जारी होजाता है ॥

प्रदर ।

तदेवातिप्रसंगेनप्रवृत्तमनृतावपि ॥
असृग्दरंविजानीयादतोन्यद्रक्तलक्षणात् ॥
असृग्दरोभवेत्सर्वःसांगमर्दःसवेदनः ॥ १९ ॥

वह आर्तव अधिक प्रवृत्तहो, मासिक समय पर अन्यथा प्रवृत्तहो आर्तवसे विपरीत वर्णवालाहो उसको रक्तप्रदर कहतेहैं संपूर्ण प्रदरोंमें अंगोंका टूटना और वेदना होतीहै ॥ १९ ॥

निदान ।

विरुद्धमद्याध्यशनादजीर्णाद्गर्भप्रपातादतिमैथुनाच्च ॥
यानाध्वशोकादतिकर्षणाच्चभाराभिघाताच्छयनाद्दिवाच ॥
तंश्लेष्मपित्तानलसन्निपातैश्चतुःप्रकारंप्रदरंवदंतिवृद्धाः ॥ २० ॥

विरुद्ध भोजनसे, मद्य पीनेसे, अजीर्णसे, गर्भपातसे, अतिमैथुन, अति गमन, अतिशोक, अतिउपवास, अतिभार उठानेसे, लकड़ी आदिके लगनेसे, दिनमें सोनेसे इन कारणोंसे कफ पित्त वायु सन्निपातसे चार प्रकारके वृद्धवैद्योंने प्रदर कहेहैं ॥ २० ॥

उसके उपद्रव ।

तस्यातिवृत्तौदौर्बल्यंश्रमोमूर्च्छामदस्तृषा ॥
दाहःप्रलापःपांडुत्वंतंद्रारोगाश्च वातजाः ॥ २१ ॥

प्रदरकी अति प्रवृत्तिसे दुर्बलता, श्रम, मूर्च्छा, मस्ती, प्यास, दाह, बकवाद, पांडुपना, तंद्रा और वायुके रोग होतेहैं ॥ २१ ॥

दार्व्यादिकाथ ।

दार्वीरसांजनकिरातवृषाब्दबिल्व
सद्रक्तचन्दनदिनेशभवप्रसूनैः ॥
क्वाथःकृतोमधुयुतोविधिनानिपीतो
रक्तंसितंचसरुजंप्रदरंनिहन्ति ॥ २२ ॥

दारुहलदी रसौत चिरायता अडूसा नागरमोथा बिल्वकी गिरी लालचंदन नीलोफर इनका काथ सहत डालकर पीनेसे लाल व सफेद पीडायुक्त प्रदर दूर होतेहैं ॥ २२ ॥

शुद्धार्तवलक्षण ।

मासान्निःपिच्छदाहार्तिःपंचरात्रानुबंधिच ॥
नैवातिबहुनात्यल्पमार्तवंशुद्धमादिशेत् ॥ २३ ॥
शशासृक्प्रतिमंयत्तुयद्वालाक्षारसोपमम् ॥
तदार्तवंप्रशंसंतियद्वासोनाविरंजयेत् ॥ २४ ॥

जो स्त्री ठीक महीने महीने रजवती होय तथा रुधिर साफहो और उसमें चिकनावट दाह और शूल न होतेहों पंचरात्रिपर्यंत नबहुत अधिक न थोडा गिरे उसके शुद्ध आर्तव कहतेहैं॥ २३॥ जो खरगोशके रुधिर सरीखा हो, अथवा लाखके रसके समानहो, जिसमें रंगावस्त्र धोनेसे साफ होजाय अथवा जिसमें रंगावस्त्र पीला काला नहो लालहीहो वह शुद्ध आर्तव प्रशंसा योग्य गर्भधारण करताहै॥ २४॥

शुद्धशुक्रके लक्षण ।

स्फटिकाभंद्रवंस्निग्धंमधुरंमधुगंधिच ॥
शुक्रमिच्छंतिकेचित्तुतैलक्षौद्रनिभंतथा ॥ २५ ॥

जो वीर्य सुफेदहो, पतला, चिकना, मीठाहो, तथा मधुकीसी गंध युक्तहो तो शुद्ध शुक्र जानना तथा कई आचार्य तैल अथवा सहतके समान वीर्य शुद्ध होता है ऐसा मानतेहैं ॥ २५ ॥

इति श्रीशुभसंततियोगप्रकाशे प्र० खं० शुक्रार्तवविवेचनीयो नामतर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

अथपुंस्त्वविवेचनीयाध्यायंव्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

अब हम पुंसत्व विवेचनीय अध्यायका व्याख्यान कहते हैं ॥ १ ॥

देहेस्मिँच्छुद्धशुक्रोहिओजस्तेजःप्रकीर्तितः ॥
तस्यक्षयेमहद्दुःखंभुंजान्तिमानवाभृशम् ॥ २ ॥
नपुंसकत्वंसंप्राप्यदुराचारप्रभावतः ॥
अकामाः पत्निसंयोगेसंततिस्तुकुतःपुनः ॥ ३ ॥
एकाकिनश्चिंतयन्तोनलभन्तेप्रतिक्रियाम् ॥
तेषांपापोपशमनीमदीयासंहितात्वियम् ॥ ४ ॥

इस देहमें शुद्धवीर्य ही ओज और तेजकहा जाताहै । वीर्यके क्षीण होनेसे मनुष्य निश्चयही महान् दुःखको भोगतेहैं ॥ २ ॥ अपने दुष्ट आचारके प्रभावसे नामर्दीको प्राप्तहोकर अपनी स्त्रीके संयोगसेंभी अकाम रहते हैं । फिर उनसे सन्तान कब उत्पन्न होसक्ताहै ॥ ३ ॥ यह लोग अपने कुकर्म (अतिमैथुन अयोनिमैथुन आदि) को याद करते हुवे कुछ यत्न नहीं करसक्के इनके इस पापकर्मकी शांतिके लिये यह पुस्तकहै ॥ ४ ॥

नपुंसकाधिकारः ।

क्लीबःस्यात्सुरताऽशक्तः तद्भावःक्लैब्यमुच्यते ।
तच्चसप्तविधंप्रोक्तंनिदानंतस्यकथ्यते ॥ ५ ॥

जो मनुष्य स्त्रीसे मैथुन करनेमें इच्छा तो करे परन्तु इंद्रीकी कमजोरीसे न कर सके उसको क्लैब्य कहते हैं वह सात प्रकारका है उसका निदान हैं ॥ ५ ॥

तैस्तैर्भावैरहृद्यैस्तुरिरंसोर्मनासिक्षते ॥
ध्वजः पतत्यतोनॄणांक्लैब्यंसमुपजायते ॥ ६ ॥

पुरुषके हृदयको अप्रिय (जिनसे दिलको नफरत हो) ऐसे भय, शोक, आदिकोंसे चित्त दुःखित होनेसे लिंगमें शिथिलता होवे मैथुनकी इच्छा हो उसको नपुंसक कहतेहैं ॥ ६ ॥

मानसक्लैब्य ।

इष्टस्त्रीसंप्रयोगाच्चक्लैब्यंतन्मानसं स्मृतम् ॥ ७ ॥

जिस पुरुषको मैथुन करना बुरा लगे स्त्री स्वरूपसे द्वेषहो सो मानसक्लीवहै ७॥

पित्तजक्लीवत्व ।

कटुकाम्लैः सलवणैरतिमात्रोपसेवितैः ॥

पित्ताच्छुक्रक्षयोदृष्टःक्लैब्यंतस्मात्प्रजायते ॥ ८ ॥

जो मनुष्य ज्यादे मिर्च, खटाई, और निमक, जो पित्तके बढाने वाले पदार्थ हैं उनके सेवनसे पित्त बढाकर वीर्यको बिगाडता है इससे वीर्यक्षयहो कर नपुंसकता होती है यह दूसरा कारण है ॥ ८ ॥

शुक्रक्षयसे नपुंसकत्व ।

अतिव्यवायशीलोयोनचवाजीक्रियारतः ॥

ध्वजभंगमवाप्नोतिसशुक्रक्षयहेतुकः ॥ ९ ॥

जो मनुष्य अधिक मैथुन करे और वीर्यके बढाने वाली वाजीकरण औषधि न सेवन करे उसका वीर्य क्षीण होकर इंद्री शिथिल होजाती है यह तृतीयनपुंसकत्व शुक्रक्षयज है ॥ ९ ॥

चतुर्थनपुं० ।

लिंगवृद्धिकरायोगायसेवंतेप्रमादतः ॥

महतामेढ्रयोगेनचतुर्थीक्लीवतांव्रजेत् ॥ १० ॥

जो मनुष्य प्रमादसे लिंगके बढानेवाली अज्ञानवश औषधिका उपर करते हैं उससे लिंग बडा होनेके कारण शिथिलता होती है यह चौ कारण है ॥ १० ॥

पञ्चमनपुं० ।

पञ्चमीक्लीवताज्ञेयाशिराच्छेदादिकारणात् ॥ ११ ॥

पांचवीं नपुंसकता वीर्यवाही नसके कटनेसे होती है और दारुण प्रमेह होती है ॥ ११ ॥

छठींनपुं० ।

बलिनःक्षुब्धमनसोनिरोधाद्ब्रह्मचर्यतः ॥
षष्ठंक्लैब्यंस्मृतंतत्तुवीर्यस्तंभानिमित्तकम् ॥ १२ ॥

यदि बलवान् पुरुष मैथुनके उत्साहको रोककर ब्रह्मचर्यसे रहे यह वीर्य स्तम्भनिमित्तक छठा नपुंसक है ॥ १२ ॥

सप्तमनपुं० ।

जन्मप्रभृतियत्क्लैब्यंसहजंतद्धिसप्तमम् ॥ १३ ॥

जो मनुष्य जन्मसेही नपुंसक हो इसको सातवां सहज नपुंसक कहते हैं ॥ १३ ॥

साध्यासाध्य ।

असाध्यंसहजंक्लैब्यंमर्मच्छेदाच्चयद्भवेत् ॥
साध्यानामवशिष्टानांकार्योवाजीकरोविधिः ॥ १४ ॥

उक्त सात नपुंसकोंमेंसे सहज और जो नसके कटनेसे हो यह दो असाध्य; बाकी सब साध्यहैं । इन पांचोंके लिये वाजीकरणक्रिया हितहै ॥ १४ ॥

अन्यनपुंसकताके कारण ।

बीजध्वजोपघाताभ्यांजरयाशुक्रसंक्षयात् ॥
वैक्लव्यसंभवस्तस्यशृणुसामान्यलक्षणम् ॥ १५ ॥

वीर्य तथा लिंगमें कुछ खराबी होनेसे और बुढापेसे शुक्रके नष्ट होनेसे सकता होतीहै उसके सामान्य लक्षण सुनो ॥ १५ ॥

सामान्यलक्षण ।

संकल्पप्रवणोनित्यंप्रियांवश्यामथापिवा ॥
नयातिलिंगशैथिल्यात्कदाचिद्यातिवायदि ॥ १६ ॥
श्वासार्तःस्विन्नगात्रांशोमोघसंकल्पचेष्टितः ॥
म्लानशिश्नश्चनिर्बीजःस्यादेतत्क्लैब्यलक्षणम् ॥ १७ ॥

पुंसकके सामान्यतासे ये लक्षणहैं कि रमण करनेका विचारतो नित्य करे, रन्तु लिंगकी शिथिलतासे अपनी विवाहिता स्त्रीके पासभी न जासके । कदा-

चित जावेभी तो श्वास और देह कंधोंमें पसीना आवे और इस विचारेका सब संकल्प चेष्टा निष्फल होवे लिंग मुर्झाया हुवा और वीर्यरहितहो यह सामान्य नपुंसकके लक्षणहैं ॥ १६ ॥ १७ ॥

बीजोपघातके लक्षण और निदान ।

शीतरूक्षाम्लसंक्लिष्टविरुद्धाजीर्णभोजनात् ॥
शोकचिंताभयत्रासात्स्त्रीणांचात्यर्थसेवनात् ॥ १८ ॥
वातादीनामोजसश्चतथैवानशनाच्छ्रमात् ॥
नारीणामनभिज्ञत्वात्पंचकर्मापचारतः ॥ १९ ॥
बीजोपघातोभवतिपांडुवर्णःसुदुर्बलः ॥
अल्पप्रजोऽप्यहर्षश्चप्रमदासुभवेन्नरः ॥ २० ॥

शीतल रूखा खट्टा कठोर विरुद्ध अजीर्णमें भोजनकरना शोक चिंता भय अत्यंत स्त्रीसेवन अभिचार (घात आदि) से अविश्वाससे रसादि धातुओंकी क्षीणतासे भोजन न करनेसे निर्जल व्रतकरनेसे अतिपारिश्रमसे स्त्रियोंपर प्यार नहोनेसे वमन विरेचनादि पंचकर्मके बिगडनेसे मनुष्योंका बीज बिगडताहै । उस मनुष्यके ये लक्षण होतेहैं । देहका पीलाहोना, दुबलाहोना, संतै अल्पायु और कमहोना, स्त्रियें प्यारी न लगें, हृदयरोग पीलिया तमक श्व कामलारोग अल्पपारिश्रमसेभी दुःखहो यह बीजोपघातके लक्षणहैं ॥ १८-२०

ध्वजभंगनिदान ।

अत्यम्ललवणक्षारविरुद्धाजीर्णभोजनात् ॥
अत्यंबुपानाद्विषमापिष्टान्नगुरुभोजनात् ॥ २१ ॥
दधिक्षीरानूपमांससेवनादतिकर्षणात् ॥
कन्यायांचैवगमनादयोनिगमनादपि ॥ २२ ॥
दीर्घरोम्णींचिरोत्सृष्टांतथैवचरजस्वलाम् ॥
दुर्गंधांदुष्टयोनिंचतथैवचपरिस्रुताम् ॥ २३ ॥
नरस्यप्रमदामोहादतिहर्षात्प्रगच्छतः ॥

चतुष्पदाभिगमनाच्छेफसश्चाभिघाततः ॥ २४ ॥
अधोवनाद्वामेढ्रस्य शस्त्रदंतनखक्षतात् ॥
काष्ठप्रहारनिश्शेषशूकानांचातिसेवनात् ॥
रेतसश्च प्रतीघाताद्ध्वजभंगःप्रवर्तते ॥ २५ ॥

अत्यन्त खटाई अत्यन्त निमक और खार विरुद्धभोजन (जैसे दूध मछली) कच्चाअन्न विना भूख भोजन करनेसे बहुत जल पीनेसे विषम अन्न, पिष्ट, भारी पदार्थ खानेसे दधी, दूध, अनूपसंचारिजीवोंके मांस खानेसे अत्यन्त कमजोरीसे १२ वर्षकी उमरसे कमउमरवालीसे मैथुन करनेसे अयोनि (गुदहस्तमुखद्वारा मैथुन) करनेसे बडे २ बालोंवाली जिसकी योनिहो, जो देरमें स्खलितहो रजस्वला, दुर्गंधयुक्तयोनि जिसको गरमी या सोम रोगहो, प्रदर आदिकोंसे दूषित गीली ऐसी योनिमें मैथुनसे, मूर्खतासे मैथुन करनेसे तथा चौपाये जानवरोंसे मैथुन करनेसे लिंगमें चोट लगनेसे लिंगको न धोनेसे अथवा लिंगमें छूरी आदि शस्त्रके लगनेसे लिंगमें घाव होजानेसे लकडीकी चोट लगनेसे कामशास्त्रोक्त प्रयोगोंके करनेसे और वीर्यके नष्ट होनेसे ध्वजभंग (लिंग सुस्त जाना) होताहै ॥ २१–२५ ॥

लक्षण ।

श्वयथुर्वेदनामेढ्रेरागश्चैवोपलक्ष्यते ॥
स्फोटाश्चतीव्राजायंतेलिंगपाकोभवत्यपि ॥ २६ ॥
मांसवृद्धिर्भवेच्चापिव्रणाःक्षिप्रंभवंत्यपि ॥
पुलाकोदकसंकाशःस्रावःश्यावारुणप्रभः ॥ २७ ॥
वलयीकुरुतेचापिकठिनंचपरिग्रहम् ॥
ज्वरस्तृष्णाभ्रमोमूर्च्छाछर्दिश्चास्योपजायते ॥ २८ ॥
रक्तंकृष्णंस्रवेच्चापिनीलमाविललोहितम् ॥
अग्निनेवचदग्धस्यतीव्रोदाहःसवेदनः ॥ २९ ॥

बस्तौवृषणयोर्वापिसीवन्यांवंक्षणेषुच ॥
कदाचित्पिच्छिलोवापिपाण्डुस्रावश्चजायते ॥ ३० ॥
श्वयथुश्चभवेन्मंदस्तिमितोल्पपरिस्रवः ॥
चिरात्सपाकंव्रजतिशीघ्रंवाथप्रपद्यते ॥ ३१ ॥
जायंतेकृमयश्चापिक्लिद्यंतेपूतिगन्धिच ॥
प्रशीर्यंतेमणिश्चास्यमेढ्रमुष्कावथापिच ॥
ध्वजभंगकृतंक्लैब्यमित्येतत्समुदाहृतम् ॥ ३२ ॥

लिंगका सूजजाना, उसमें पीडा होना, लाल रंग होजाना, घोर फोडेहों लिंग पकना, लिंगमें मांसका बधना तत्काल घाव होना उनमेंसे काले लाल या धोवनके रंगका स्राव होना, तथा लिंगमें गोल चूडीसी आंटसे कठोर जड वाले होना, वह मनुष्य इस रोगसे पीडित होनेसे ज्वर तृषा भ्रम मूर्च्छा या वमनसे पीडित हो लिंगमेंसे लाल काला लोहित स्रावहो अग्निसे जलासा दीखे; बस्ती, वृषण, सीवन, वंक्षण, इनमें दाहयुक्त दर्दहोवे । कभी इनमेंसे गाढा पीला स्रावहो, कभी इनही स्थानोंमें मन्दसूजन और अल्पस्रावहो, कभी देरमें कभी जल्दी पकजावे उसमें कीडे पडजावें सदैव गीला रहे और दुर्गंध आवे और सुपारी गलके गिरजावे अथवा लिंग और फोते दोनों गिरजा॰ यह ध्वजभंगके महा उपद्रवहैं ॥ २६-३२ ॥

जरासम्भवनपुंसकके कारण ।

जघन्यमध्यप्रवरंवयस्त्रिविधमुच्यते ॥
अथचप्रवरेशुक्रंप्रायशःक्षीयतेनृणाम् ॥ ३३ ॥
रसादीनांसंक्षयाच्चतथैवावृष्यसेवनात् ॥
बलवर्णेन्द्रियाणांचक्रमेणैवपरिक्षयात् ॥ ३४ ॥
परिक्षयादायुषश्चाप्यनाहाराच्छ्रमात्क्रमात् ॥
जरासंभवजंक्लैब्यमित्येतैर्हेतुभिर्नृणाम् ॥ ३५ ॥

बुढापेसे हुए नपुंसकके यह लक्षण हैं—अवस्था तीन प्रकारकी है अधम। मध्यम उत्तम। सो वृद्ध अवस्थामें मनुष्योंका वीर्य क्षीण होता है उसका कारण

यह है कि, रसादिकोंका क्षय होनेसे बिना वृष्य पदार्थोंके सेवन किये मैथुन करनेसे क्रमसे बल वर्ण इन्द्रियोंके क्षीण होनेसे आयुष्यके क्षीण होनेसे भोजन न करनेसे परिश्रम करनेसे इन कारणोंसे बुढापेका नपुंकत्व होता है ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

लक्षण ।

जायतेतेनसोत्यर्थंक्षीणधातुःसुदुर्बलः ॥
विवर्णोविह्वलोदीनःक्षिप्रंव्याधिमथाश्नुते ॥ ३६ ॥

बुढापेमें मनुष्य अत्यन्त क्षीण दुर्बल होजाता है, देहका वर्ण पलट जाता है, विह्वल और दीन होजावे, शीघ्रही इसको रोग घेर लेते हैं इससे यह जरा संभव नपुंसकके लक्षण हैं ॥ ३६ ॥

क्षयजके लक्षण ।

अतिप्रचिंतनाच्चैवशोकात्क्रोधाद्भयादपि ॥
ईर्ष्यौत्कंठ्यात्तथोद्वेगात्समाविंशतिकोनरः ॥ ३७ ॥
कृशोवासेवतेरूक्षमन्नपानमथौषधम् ॥
दुर्बलप्रकृतिश्चैवनिराहारोभवेद्यदि ॥ ३८ ॥
अथाल्पभोजनाच्चापिहृदयेयोव्यवस्थितः ॥
रसप्रधानधातुर्हिक्षीयेताशुनरस्ततः ॥ ३९ ॥
रक्तादयश्चक्षीयंतेधातवस्तस्यदेहिनः ॥
शुक्रावसानास्तेभ्योहिशुक्रंधामपरंमतम् ॥ ४० ॥
चेतसोवातिहर्षेणव्यवायंसेवतेतुयः ॥
शुक्रंतुक्षीयतेतस्यततःप्राप्नोतिसंक्षयम् ॥ ४१ ॥
घोरंव्याधिमवाप्नोतिमरणंवासमृच्छति ॥
शुक्रंतस्माद्विशेषेणरक्ष्यमारोग्यमिच्छता ॥
एतन्निदानलिंगाभ्यामुक्तंक्लैब्यंचतुर्विधम् ॥ ४२ ॥

अत्यंत चिंता, शोक, क्रोध, भय, ईर्ष्या, उत्कंठा, उद्वेग, इनके अत्यंत करनेसे बीस वर्षका मनुष्यभी कृश होकर रूक्ष अन्न, पान, औषधको सेवन

करे और दुर्बल प्रकृति वाला होकर निराहार रहे, अथवा बहुत थोडा भोजन करे । ऐसे करनेसे हृदयस्थ प्रधान धातु क्षीण होवे । जिनसे यह मनुष्य शीघ्र क्षीण होकर रुधिरसे वीर्य पर्यंत धातु क्षीण होजावे अथवा प्रसन्न चित्तसे जो अतिमैथुन करताहै उसका शुक्र क्षीण होजाताहै । ऐसा होनेसे मरण या घोर व्याधिको प्राप्तहो । इसवास्ते अपने आरोग्यताकी इच्छा वालेको शुक्रकी अवश्य रक्षा करनी चाहिये इसतरे निदान और लक्षणसे नपुंसक चार प्रकारकेहैं ॥ ३७–४२ ॥

साध्यासाध्यत्व ।

केचित्क्लैब्येत्वसाध्येद्वेध्वजभंगक्षयोद्भवे ॥
वदन्तिशेफसश्छेदाद्वृषणोत्पाटनेनच ॥ ४३ ॥
मातापित्रोर्बीजदोषादशुभैश्चकृतात्मनः ॥
गर्भस्थस्ययदादोषाःप्राप्यरेतोवहाःशिराः ॥ ४४ ॥
शोषयन्त्याशुतन्नाशाद्रेतश्चाप्युपहन्यते ॥
तत्रसंपूर्णसर्वांगःसभवत्यपुमान्पुमान् ॥
एतेत्वसाध्याव्याख्याताःसन्निपातसमुच्छ्रयात् ॥ ४५ ॥

कोई २ आचार्य ध्वजभंग और क्षयसे उत्पन्नकोभी असाध्य कहतेहैं कोई लिंगके कटने अथवा अंडकोशोंके न रहनेसे जो नपुंसकहो वह असाध्य ऐसा मानतेहैं । मातापिताके वीर्यदोषसे और अपने पूर्व जन्मके पाप कर्म गर्भस्थित दोषहै वह वीर्यके बहनेवाली नसोंमें प्राप्तहो नसोंको सुखादेवें उन नसोंके सूखनेसे वीर्यभी नष्ट होजाताहै । फिर जो उस गर्भसे बालकहो सर्वांग होने परभी नपुंसक होताहै । ये सब नपुंसक तीनों दोषोंकी अधिकता होनेसे असाध्यहैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

कुकर्मजन्यनपुंसकत्व ।

समयेस्मिन्प्रमादाच्चमद्यवेश्याप्रभावतः ॥
ब्रह्मचर्यविहीनत्वादयोनिमैथुनात्तथा ॥ ४६ ॥

वाजी अर्थात् घोडोंका यहां प्रकाश नहोनेसे इसजगे वाजीशब्द मैथुन संज्ञकहै जो पदार्थ मैथुनशक्तिको बढावे वह वाजीकरणहै इसलिये वाजीकरण शब्द पुरुषार्थहीका वाचकहै । या वाजी नाम प्रकाशक होनेसे मैथुन संज्ञकहै ऐसा कहना चाहिये ॥ ४ ॥

शुक्रस्रुतिकरंकिंचित्किंचिच्छुक्रविवर्द्धनम् ॥
स्रुतिवृद्धिकरंकिंचित्त्रिविधंवृष्यमुच्यते ॥ ५ ॥

कोई वस्तु वीर्य निकालने वाली कोई शुक्र बढानेवाली कोई बढाने और निकालने वाली इस प्रकार वृष्य (वाजीकरण) तीन प्रकारसे कहाहै ॥ ५ ॥

आवश्यकचिकित्सा ।

क्लैब्यानामिहसाध्यानांकार्योहेतुविपर्ययः ॥
मुख्यंचिकित्सितंयस्मान्निदानपरिवर्जनम् ॥ ६ ॥

जो साध्य नपुंसकहैं उनका हेतु (कारण सबब) विपर्यय करे अर्थात् जिनकारणोंसे नपुंसक हुवाहो उनसे उलटा कर्मकरे । क्योंकि सब रोगोंकी मुख्य चिकित्सा यहहै कि जो रोगहो उसके कारणोंको त्यागदेवे और जो नुकसान पहुँच चुका उसका प्रतीकार करे । कारणकि न छोडनेसे आगा ले उलटा नुकसान होताहै ॥ ६ ॥

चिकित्साकीआज्ञा ।

नरोवाजीकरान्योगान्सम्यक्शुद्धोनिरामयः ॥
सप्तत्यंतंप्रकुर्वीतवर्षादूर्ध्वंतु षोडशात् ॥ ७ ॥
नचैवषोडशादर्वाक्सप्तत्यापरतोनच ॥
आयुष्कामोनरःस्त्रीभिःसंयोगंकर्तुमर्हति ॥ ८ ॥
क्षयवृद्धयुपदंशाद्यारोगाश्चातीवदुर्जयाः ॥
अकालमरणंचस्याद्भजतःस्त्रियमन्यथा ॥ ९ ॥

मनुष्यको चाहिये कि पहले भलेप्रकार वमन विरेचनसे शुद्ध देहहो सोलह १६ वर्षकी अवस्थासे ऊपर और ७० सत्तर वर्षकी अवस्था तक वाजीकरण

रसायनप्रयोगाश्चसर्वानेतान्प्रयोजयेत् ॥
समीक्ष्यदेहदोषाग्निबलभेषजकालवित् ॥ १५ ॥
व्यपैतिहेतुजंक्लैब्यंयत्स्याद्धेतुविपर्ययात् ॥ १६ ॥

नपुंसकताकी शांतिके वास्ते जो क्षीणक्षतमें हितकारी औषधि हितहो सो देवे । बस्ति कर्म करे दूध, घी तथा जो पुष्टिकारक पदार्थहैं और रसायनहैं सो उपयोग करे तथा जो नपुंसकोंके कारणोंके विपरीत अर्थात् कारण के हरनेवाले हों उपयोग करे ॥ १४–१६ ॥

विशेषचि० और बीजोपघातकी चि० ।

सुस्विन्नस्निग्धगात्रस्यस्नेहयुक्तंविरेचनम् ॥
प्रदद्यान्मतिमान्वैद्यस्ततस्तमनुवासयेत् ॥ १७ ॥
पलाशैरंडमुस्ताद्यैःपश्चादास्थापयेत्ततः ॥
वाजीकरणयोगाश्चयोज्याबीजोपघातजे ॥ १८ ॥

प्रथम स्वेदन कराके स्नेहयुक्त विरेचन करावे फिर ढाक एरंड मोथा आदिके क्काथसे अनुवासन कराकर यथोचित वाजीकरण योग सेवन करावे तो बीजोपघात नपुंसक अच्छाहो ॥ १७ ॥ १८ ॥

ध्वजभंगकीचिकित्सा ।

ध्वजभंगक्षतंक्लैब्यंज्ञात्वातस्याचरेत्क्रियाम् ॥
प्रदेहान्परिषेकांश्चकुर्याद्वारक्तमोक्षणम् ॥ १९ ॥
स्नेहपानंचकुर्वीतसस्नेहंवाविशोधनम् ॥
अन्वासनंततः कुर्यादथवास्थापनंपुनः ॥ २० ॥
व्रणवच्चक्रियासर्वास्तत्रकुर्याद्विचक्षणः ॥ २१ ॥

ध्वजभंग नपुंसकका पहले निदान द्वारा निश्चय करके चिकित्सा क लेप या सेचन अथवा नस वेधन करके रुधिर निकाले या घृत दे स्नेह पान या स्नेहयुक्त विरेचन करावे फिर अनुवासन बस्ति या स्थाप

१—वमन विरेचन विधान दूसरे खण्डमें देखो ।

वस्ती कर्म करे । तथा इस ध्वजभंगकी व्रणके समान विम्लापन पाटन रोप-णादि क्रमपूर्वक करे ॥ १९-२१ ॥

जरासंभव व क्षयजकी चिकित्सा ।

जरासंभवजेक्लैव्येक्षयजेचैवकारयेत् ॥ २२ ॥
स्नेहस्वेदोपपन्नस्यसस्नेहंशोधनंहितम् ॥
क्षीरसर्पिर्वृष्ययोगाःबस्तयश्चैवयापनाः ॥
रसायनप्रयोगाश्चतयोर्भेषजमुच्यते ॥ २३ ॥

जो वृद्ध अवस्थाके कारण या क्षयज नपुंसकहों उनको स्नेहनस्वेदन करे या स्नेह युक्त शोधन करे ॥२२॥ फिर दूध घृत वृष्ययोग यापनबस्ति रसायन इनको करे यह दोनोंकी चिकित्सा करे ॥ २३ ॥

वाजीकरणपदार्थ ।

भोजनानिविचित्राणिपानानिविविधानिच ॥
वाचःश्रोत्राभिरामाश्चत्वचःस्पर्शसुखास्तथा ॥ २४ ॥
यामिनीसेंदुतिलकाकामिनीनवयौवना ॥
गीतंश्रोत्रमनोहारितांबूलंमदिरास्रजः ॥ २५ ॥
गन्धामनोज्ञारूपाणिचित्राण्युपवनानिच ॥
मनसश्चाप्रतीघातोवाजीकुर्वंतिमानवम् ॥ २६ ॥

विचित्र भोजन अनेक उत्तम दूध-शर्बत आदि पीनेके पदार्थ जो यारे प्रतीतहों. ऐसे वचन देहको सुखकारक वस्त्र आभूषण पूर्णचन्द्र नवयौवना सर्वांग सुन्दर स्त्री, कानों और मनके हरणकर्त्ता, सुन्दर का बीडा, मद्य, फूल, माला, सुन्दर सुगन्ध, मनको और नेत्रोंको, ऐसा सुन्दर रूप सुन्दर विचित्र बाग और जिससे मन न रंजहो र्त्ता पदार्थहैं ॥ २४-२६ ॥

वाजीकरणयोग ।

स्वयंगुप्तेक्षुरकयोर्बीजचूर्णंसशर्करम् ॥
धारोष्णेननरःपीत्वापयसानक्षयंव्रजेत् ॥ २७ ॥

कौंचके बीज, तालमखाना, इन दोनोंके चूर्णमें बराबरकी मिसरी मिलाके तत्काल निकाले । धारोष्ण दूधसे सेवन करे तो उस मनुष्यका वीर्य कभी क्षीण नहो ॥ २७ ॥

अथवा ।

उच्चटाचूर्णमप्येवंक्षीरेणोत्तममुच्यते ॥

इसीप्रकार उटंगणके बीजोंमें बराबरकी मिसरी मिलावे इस चूर्णको धारोष्ण दूधसे पीवे तो वीर्य क्षीण न होवे ॥

अथवा ।

शतावर्युच्चटाचूर्णंपेयमेवसुखार्थिना ॥ २८ ॥

शतावर और उटंगणके बीजोंके चूर्णमें मिसरी मिलाकर धारोष्ण दूधसे पीवे तो वीर्य पुष्ट रहे ॥ २८ ॥

अथवा ।

विदारिकन्दकल्कंतुघृतेनपयसानरः ॥
उदुंबरसमंखादन्वृद्धोपितरुणायते ॥ २९ ॥

विदारीकन्दके कल्कको घी मिसरी मिले दूधसे गूलरके फल समान खावे तो वृद्धभी तरुणकी सदृश होजावे ॥ २९ ॥

अथवा ।

चूर्णंविदार्याःसुकृतंस्वरसेनैवभावितम् ॥
सर्पिःक्षौद्रयुतं लीढ्वाशतंगच्छेद्वरांगनाः ॥ ३० ॥

विदारिकन्दके चूर्णको विदारिकन्दके रसकी भावना देकर सुखावे इसमें घी शहद मिलाके सेवन करे तो वह मनुष्य सौ स्त्रियोंसे रमण करे परंतु विदारीकंदको विदारी कन्दके स्वरसमें २१ बार भावनादेवे ॥ ३० ॥

अथवा ।

एवमामलकंचूर्णंस्वरसेनैवभावितम् ॥
शर्करामधुसर्पिर्भिर्युक्तंलीढ्वापयःपिबेत् ॥
एतेनाशीतिवर्षोपियुवेवपरिहृष्यते ॥ ३१ ॥

डालके औटावे फिर उसको शीतलकर मथानीसे मथ मिसरी मिलाके पीवे तो मनुष्य सम्पूर्ण रात्रि मैथुन करनेपर भी न थके ॥ ३९ ॥

सौभाग्यपुष्टिबलशुक्रविवर्धनानिकिंसन्तिनोभुविबहूनिरसायनानि॥कंदर्पवर्द्धनिपरंचसिताज्ययुक्ताद्दुग्धादृतेनममकोपिमतः प्रयोगः ॥ ४० ॥

वैद्यजीवनमें कहाहै सौभाग्य पुष्टी, बल, शुक्रके बधानेवाली क्या बहुतसी रसायन नहीं हैं, पर [illegible]मदेवके बधानेवाला मिसरी और घी मिले दूधसे विना मेरे मतमें दूसरा योग अच्छा नहीं है ॥ ४० ॥

अथवा ।

भुक्त्वावरींक्षीरयुतांविलासीरम्याच्छतंसुन्दरसुन्दरीणाम् ॥४१॥

शतावरके चूर्णको दूधके साथ सेवन करनेसे मनुष्य सौ स्त्रियोंसे रमण कर सक्ता है ॥ ४१ ॥

शतावरीचूर्णम् ।

शतावरीनागबलाविदारीत्रिकंटकैरामलकीफलान्वितैः ॥ विचूर्णितैःपञ्चभिरेकशःपृथक्प्रकल्पितैर्वाघृतमाक्षिकप्लुतैः ॥४२॥ इतिप्रयोगाःषडिमेभिषग्वरैरुदीरिताशर्करयासमन्विताः ॥ [illegible]मदांधप्रमदोपसर्पिणांप्रधानधातोरतिरेककारणम् ॥ ४३ ॥

[illegible]र, खिरेंटी, विदारीकन्द, गोखरू, आमले, उटंगण, इन सबका या [illegible]चर्णकर घी, सहत, मिसरी मिलाके सेवन करे। यह वैद्योंने छःयोग [illegible]प्रयोग कामसे मदान्ध करता और स्त्रीसे रमण करके वीर्यको [illegible]स ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

अथवा वानरीगुटिका ।

[illegible]नेहिकपिकच्छोःकुडवमितानितुस्वेदयेच्छनकैः॥प्रस्थेगो[illegible]ग्धेदुग्धंयावद्भवेद्गाढम् ॥ ४४ ॥ त्वग्रहितानिचकृत्वा सूक्ष्मंसंपेषयेत्तानि॥ पिष्टिकायाःसुवटिकाःकृत्वागव्येपचेदाज्ये ॥४५॥ द्विगुणितशर्करयातावटिकाःसंपक्कयालेप्याः ॥ वटिका

माक्षिकमध्येमज्जनयोगेऽखिलास्थाप्या: ॥ ४६ ॥ पञ्चटंक मितास्तास्तुप्रातःसायंचभक्षयेत्॥अनेनशीघ्रद्रावीयोयश्चस्यात्पतितध्वजः ॥ ४७ ॥ सोपिप्राप्नोतिसुरतेसामर्थ्यमतिवाजिवत् ॥ नानेनसदृशंकिंचिद्द्रव्यंवाजीकरंपरं ॥ ४८ ॥

एक एकपाव कौंचके बीजोंको १ सेर गौके दूधमें पकावे, जब दूधगाढा होजावे तो बीजोंको निकालकर उन बीजोंका छिलका दूर करके बारीक पीसडाले, फिर इस पिष्टि (पिठि) की टिकिया बना गौके घीमें पकावे, फिर आध सेर खांडकी चासनीकरके इन टिकियों पर चढावे। ... राजाशाहीकी समान खांड चढ जावे तो इनको सहतमें डुबाकर रखदे, इनमेंसे १५ मासे खाकर ऊपरसे दूध पीवे इसीतरे सबेरे और सायंकाल दोनों समय सेवन करनेसे जिसका वीर्य शीघ्र निकल जाताहो और इन्द्री सुस्तहो इसकेप्रभावसे वह मनुष्य घोडेके समान मैथुन करे इससे बढकर और दूसरा बाजीकारण योग नहीं ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

नारसिंहचूर्णम् ।

शतावरीरजःप्रस्थंप्रस्थंगोक्षुरकस्यच ॥
वाराह्याविंशतिपलंगुडूच्यापंचविंशतिः ॥ ४९ ॥
भल्लातकानांद्वात्रिंशच्चित्रकस्यदशैवतु ॥
तिलानांशोधितानांचप्रस्थंदद्यात्सुचूर्णितम् ॥ ५० ॥
त्र्यूषणस्यपलान्यष्टौशर्करायाश्चसप्ततिः ॥
माक्षिकंशर्करार्धेनमाक्षिकार्द्धेनवैघृतम् ॥ ५१ ॥
शतावरीसमंदेयंविदारीकंदजंरजः ॥
एतदेकीकृतंचूर्णंस्निग्धे भांडेनिधापयेत् ॥ ५२ ॥
पलार्द्धमुपयुंजीतयथेष्टंचापिभोजनम् ॥
मासैकमुपयोगेनजरांहंतिरुजामपि ॥ ५३ ॥
वलीपलितखालित्यमेहपांड्वाद्यपीनसान् ॥
हंत्यष्टादशकुष्ठानितथाष्टावुदराणिच ॥ ५४ ॥

भगंदरंमूत्रकृच्छ्रंगृध्रसीसहलीमकम् ॥
क्षयंचैवमहाश्वासान्पंचकासान्सुदारुणान् ॥ ९५ ॥
अशीतिवातजान्रोगांश्चत्वारिंशच्चपैत्तिकान् ॥
विंशतिश्लेष्मकांश्चैवसंसृष्टान्सान्निपातिकान् ॥
सर्वान्रोगगणान्हंतिवृक्षमिंद्राशनिर्यथा ॥ ९६ ॥
सकांचनाभोमृगराजविक्रमस्तुरंगमंचाप्यनुयातिवेगतः ॥
स्त्रीणांशतंगच्छतिसोतिरेकंप्रकृष्टदृष्टिश्चयथाविहंगः ॥ ९७ ॥
पुत्रान्संजनयेद्वीरान्नरसिंहनिभांस्तथा ॥
नारसिंहमिदंचूर्णंसर्वरोगहरंनृणाम् ॥ ९८ ॥

शतावरका चूर्ण १ सेर, दक्षिणी गोखरूका चूर्ण १ सेर, वाराही कंदकी चूर्ण १ सेर, गिलोयसत्व १ सेर, ९ छटांक मिलावे शुद्ध २ सेर चित्रककी छाल अढाई पाव, शुद्ध तिल १ सेर, सोंठ, मिर्च, पीपलका चूर्ण आधासेर, मिसरी ४॥ सेर, सहत २। सेर, गोघृत एकसेर दोछटांक इन सबको सुंदर रीतिसे मिलाकर चिकने वर्तनमें भरकर रखदेवे। इसमेंसे दोतोला प्रातःकाल भक्षण करे और इसके सेवनमें यथेच्छ भोजन करे तो एक महीनेके सेवनसे बुढापे और रोगोंको दूरकरे। देहमें गुलजट पडना, सफेद बाल होना, गज, प्रमेह, पांडु, पीनस, १८ कोढ, आठ प्रकारके उदररोग, भगंदर, मूत्रकृच्छ्र, गृध्रसी, हलीमक, क्षयरोग, महाश्वास दारुण पाँचप्रकारकी खांसी, अस्सी वातरोग, चालीस पित्तरोग, बीस कफके रोग, मिश्रितरोग; सान्निपातिकरोग, सब प्रकारके बवासीर, इन सब रोगोंको नष्ट करे, जैसे इंद्रका वज्र वृक्षोंको नष्टकरे सुवर्णके समान देहमें कांतिहो। सिंहके समान पराक्रमहो घोडेके समान वेगहो सौस्त्रियोंसे गमन करसके गृध्रकीसी दृष्टिहो इसके सेवनसे नृसिंहके तुल्य पराक्रम वालों पुत्रोंको प्रगटकरे। यह नारसिंह चूर्ण मनुष्योंके सबरोग नष्ट करनेवाला है॥ ९५–९८॥

अमृतभल्लातक।

भल्लातकानांपवनोत्थितानांतरुच्युतानांचयदाढकंस्यात् ॥
घृष्टेष्टिकाचूर्णकणैर्जलैश्चप्रक्षाल्यसंशोष्यचमारुतेन॥ ९९ ॥

शुष्काणितानिद्विदलीकृतानिविपाचयेद्प्सुचतुर्गुणासु ॥
तत्पादशेषंपुनरेवशीतंक्षीरेणतुल्येनविपाचयेत्तत् ॥ ६० ॥
तदर्धयाशर्करयाविमिश्र्यपश्चात्खजेनोन्मथनंविधाय ॥
सत्र्यूषणंत्रैफलचंद्रमासीत्रिवृच्चवांशीखदिरामृतंच ॥ ६१ ॥
सचंदनाकल्हकणाकवाबंसदेवपुष्पंमुसलीद्वयंच ॥
कंकोलमोचाह्वयदीप्ययुग्मंनतंसमातंककणाविदारी ॥ ६२ ॥
जातीफलंमुस्तकजातिपत्रीकुवेरजीरागुदसाब्धिशोषम् ॥
मेदाद्वयंलोहरसंद्रवंगमभ्रंतथाकुंकुमकंचकर्षम् ॥ ६३ ॥
तत्सप्तरात्रादतिजातवीर्यंसुधारसादप्यधिकंवदंति ॥
प्रातःसुबुद्धःकृतदेवकार्योमात्रांभजेत्सात्म्यशरीरयोग्याम् ॥ ६४ ॥
नचानुपानेपरिहार्यमस्तिनचातपेनाध्वनिमैथुनेच ॥
यथेष्टचेष्टोविचरेत्प्रयोगान्नरोभवेत्कांचनराशिगौरः ॥ ६५ ॥
अनेनमेधानरसिंहवीर्योदृढेन्द्रियोव्याधिगतःसुबुद्धिः ॥
दंताविशीर्णापुनरेवदिव्याःकेशाश्चशुभ्राःपुनरेवकृष्णाः ॥ ६६ ॥
नीलांजनालिप्रतिमाभवंतित्वचोविशीर्णापुनरेवभव्याः ॥
विशीर्णकर्णांगुलिनासिकोपिकुर्म्यार्दितोभिन्नगलोपिकुष्ठी ॥ ६७ ॥
शुष्कःपुनःस्याद्गतमूलशाखस्तरुर्यथाभातिनवाम्बुसिक्तः ॥
बृहस्पतेरप्यधिकोहिबुद्धयाग्रंथंविशालंचनवंकरोति ॥ ६८ ॥
गृह्णातिसद्योनचविस्मृतिंचकरोतिकल्पायुरनंतवीर्यम् ॥
कुर्वन्निमंकल्पमनल्पबुद्धिंजीवन्नरोवर्षशतंसुखीस्यात् ॥ ६९ ॥

पकेहुवे भिलावे जो पवनसे टूटकर गिरेहों ४ सेर लेवे इनको ईटके कुक्-चामे घिसकर शुद्धजलसे धोकर पवनसे सुखावे जब सूखजावे तब एक २ के दो २ टुकडे करदेवे फिर १६ सेर पानीमें पकावे जब ४ सेर पानी-बाकी रहे उसको उतारकर ठंडाकरले फिर उसमें चारसेर दूध मिलाके पकावे फिर २ सेर मिसरी मिलाके मथानीसे मथडाले फिर त्रिकुटा त्रिफला,

..पूर, जटामांसी, निसोथ, वंशलोचन, खैरसार, विष, सफेदचंदन, अकरकरा, पीपल, कबाबचीनी, लौंग, सफेदमुसली, कालीमुसली, कंकोल, मोचरस, अजवायन, अजमोद, छड, गजपीपल, विदारीकन्द, जायफल, नागरमोथा, जावित्री, लताकरंज, अगर जीरा, समुद्रशोष, मेदा, महामेदा, लोहभस्म, चन्द्रोदय, वंगेश्वर, अभ्रक, केशर, प्रत्येक एकएक तोला, लेवे सबको एकत्रकर उपरोक्त मिलावे मिश्रित औषधि मिलाके एक जीव करदेवे फिर एक सुन्दर चिकनेबर्तनमें ढकके रखदेवे। ७ रोज रखी रहनेदे तो यह अमृत सेभी अधिक होजातीहै। इसको प्रातःकाल उठकर शौचादिक कर्मोंसे निवृत्तहो अपने शरीरानुकूल और जितनी पचसके उतनी मात्रासे सेवन करे। इसपर किसीतरेका अनुपान नहीं न धूपका न चलनेका न मैथुनका कोई परहेज है, इसपर यथेच्छ आहार विहार करे तो मनुष्य सुवर्णके समान दिव्यदेहहो, बुद्धि बढे नृसिंहसा बलहो, इन्द्रि दृढहों, सबरोग दूरहों, गिरे दांत फिर पैदा होवें, सफेदबाल भौंरेसमान कालेहों, गुलजाटे दूरहो, त्वचा मजबूतहो, जिसके कान नाक उंगली गिरगयेहों कृमिपडगयेहों, गला बैठ गयाहो उस मनुष्यको इसके सेवनसे जैसे जड शाखा हीन वृक्ष जलके संयोगसे हरा होजाताहै इसप्रकार इसके खानेवाला मनुष्यभी सब रोगरहित होकर स्वरूपवान् होजाताहै, बृहस्पतिके समान बुद्धिहो, नयेग्रंथ रचनेकी सामर्थ्यवालाहो, बातको सुनतेही धारण करे, भूले नहीं कल्पायुहो, अधिक वीर्य वालाहो इस भिलावे कल्पको सेवन करनेसे सौवर्ष नीरोग होकर जीवे ॥५९-६९॥

रतिवर्धनमोदक।

गोक्षुरेक्षुरबीजानिवाजीगंधाशतावरी ॥
मूशलीवानरीबीजंयष्टीनागबलाबला ॥ ७० ॥
एषांचूर्णंदुग्धसिद्धंगव्येनाज्येनभर्जितम् ॥
सितयामोदकंकृत्वाभक्ष्यंवाजीकरंपरम् ॥ ७१ ॥
चूर्णादष्टगुणंक्षीरंघृतंचूर्णसमंस्मृतम् ॥

सर्वतोद्विगुणंखंडंखादेद्दासीबलंयथा ॥
वाजीकरणयोगेषुयोगोयंप्रवरोमतः ॥ ७२ ॥

गोखरु, तालमखाना, नागोरी, आसगंध, शतावरी, मूसली, कौंचके बीज, मुलेठी, नागबला, और बला, इनसबका चूर्णकर इस चूर्णको आठगुणे दूधमें डालकर खोवाकरे, फिर बराबरके गोघृतमें भूनकर दुगुनीमिसरीकी चाशनीमें मिलाकर बनावे इसके सेवनसे परमवृष्यहो यह परम वाजीकर्ता योगहै बहुतसे वाजीकरण योगोंमें उत्तमहै ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

माक्षीकधातुमधुपारदलोहचूर्णी
पथ्याशिलाजतुविडंगघृतानिलिह्यात् ॥
एकोनविंशतिदिनानिगदार्दितोपि
सोशीतिकोपिरमयेत्प्रमदांयुवेव ॥ ७३ ॥

सोनामक्खीकी भस्म, सहत, पारा, लोहभस्म, हरड, शिलाजीत, वायबि-डंग और घी इन सबको मिलाकर उचित मात्रासे २१ दिन सेवन करेतो ८० वर्षकी उमर वालाभी जवानके माफिक स्त्रीसे मैथुन करे ॥ ७३ ॥

सत्त्वंगुडूच्यागगनंसलोहंएलासितामागधिकासमेतम् ॥
एतत्समेतंमधुनावलीढंरामाशतंसेवयतीवषंढः ॥ ७४ ॥

गिलोयका सत्त्व, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, इलायचीके बीज, पीपल, मिसरी, इनका चूर्णकर सहत मिलाके चाटेतो नपुंसकभी १०० स्त्रियोंसे गमन करे ७४ ॥

शुक्रमूत्रार्तवशोधकयोग ।

क्षौद्रार्धपात्रंदत्त्वातुपात्रंतुक्षीरसर्पिषोः ॥ ७५ ॥
स्वयंगुप्ताफलंचैवतथैवेक्षुरकस्यच ॥ ७६ ॥
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तमर्धभागंप्रदापयेत् ॥
एतदैकध्यमानीयखजेनाभिप्रमन्थयेत् ॥ ७७ ॥
तस्यपाणितलंचूर्णंलीढ्वाक्षीरंततःपिबेत् ॥
एतत्सर्पिःप्रयुंजानःशुद्धदेहीनरःसदा ॥ ७८ ॥

मूत्रदोषाञ्जयेत्सर्वानन्ययोगैःसुदुर्जयान् ॥
जयेच्छोणितदोषांश्चवंध्यागर्भंलभेतच ॥
नारीचैतत्प्रयुंजानायोनिदोषात्प्रमुच्यते ॥ ७९ ॥

सहद तोला ३२ घृततोला ३२ गोदूध तोला ३२ कौंचकेबीज तोला १६ तालमखाना तोला १६ पीपल तोला १६ इन तीनोंको कपडछानकर उपरोक्त सहद घी दूधमें मिलाके रईसे खूब मथकर मिलावे इसमेंसे शुद्धदेह मनुष्य एक तोला खाकर दूध पीवे इसको वमन विरेचनाध्यायोक्त विधिसे शुद्धहो इसका सेवन करे तो सब मूत्रदोष जो अनेक यत्नसे अच्छे न होसके हों उन सबको आराम हो रक्तके सब दोष दूर होकर वंध्याभीभी गर्भ धारण करे जो स्त्री इसको सेवन करे उसके सब योनिदोष दूर हों॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥

केसरावलेह ।

व्योषंचतुर्जातफलत्रिकंचलवंगकृष्णागुरुचन्दनंच ॥
क्षूरबीजंकरहाटकंचजातीफलंमर्कटिकाफलंच ॥८०॥
शाल्मल्यानिर्यासबलाश्वगंधागोक्षूरबीजंमुसलीकामिन्नम् ॥
समुद्रशोषंविषपंजरंचपुष्पंसजात्युद्भवकंकबीजम् ॥ ८१ ॥
सर्वैःसमंयोज्यसुकुंकुमंचसुचूर्णितांविंशतिभागयुक्तम् ॥
कस्तूरिकाषोडशभागचूर्णखंडंचतुर्भागयुतांविपक्वम् ॥ ८२ ॥
वंगंरसेंद्रंगगनंसुलोहंकांतंहिताभ्रंरविभागयुक्तम् ॥
दलानिहेम्नोद्विशतानिदत्त्वातथैवदेयानिचराजतानि ॥
एकत्रसर्वांविनिधायवैद्योजयाष्टभागंविदधीतलेहम् ॥८३॥
जातीफलप्रमाणेनभक्षयेत्प्रातरुत्थितः ॥
वीर्यवृद्धिकरोत्येषसर्वव्याधिविनाशनः ॥ ८४ ॥
शतंचरमतेस्त्रीणांकामतुल्योभवेन्नरः ॥
सर्वान्वातामयान्हंतिप्रवृद्धंवातशोणितम् ॥ ८५॥
अस्थिरोगंशिरोरोगंसंधिरोगंचनाशयेत् ॥

अस्यसेवनमात्रेणवृद्धोपितरुणायते ॥ ८६ ॥
धन्यंयशस्करंसम्यगायुरारोग्यवर्द्धनम् ॥
काश्मीरकावलेहोयंबलकांतिविवर्द्धनः ॥ ८७ ॥

त्रिकुटा, चतुर्जात, त्रिफला, लौंग, कालीअगर, सपेदचन्दन, तालमखाना, अकरकरा, जायफल, कौंचके बीज, सेमलका गोंद, गुलशकरी, असगन्ध, गोखुरु, मुसली, वायबिडंग, समुद्रसोख, विषपंजर, जावित्री, कंगही के बीज यह सब समान भाग लेकर सबका बारीक चूर्ण करे।सुन्दर केशर सब दवाइयोंसे बीसवां भाग लेवे और सोलहवां भाग कस्तूरी लेवे तथा सब दवाइयोंसे चौगुनी मिसरीकी चासनी बनाकर अवलेहकी विधिसे यह केशरावलेह बनावे सिद्ध होनेपर नीचे उतारकर इसमें वंग, चन्द्रोदय, अभ्रकसार, कांतिसार, तांबेश्वर यह सब बारहवें भाग मिलावे और सोनेके वर्क २०० चांदीके वर्क २०० इनको मिलाके केशरसे आठवां भाग डाले इस अवलेहको किसी उत्तम चीनीके वर्तनमें रखे इसमेंसे नित्य प्रातःकाल जायफलके बराबर खाया करे तो यह वीर्यकी वृद्धि करे, सब रोगोंको नष्ट करे, शत स्त्री रमणकी सामर्थ्य करे, कामदेवकी समान रूपहो, सब प्रकारके वातविकारोंका नाश हो बधे हुए वात रक्तका नाश हो हड्डीके रोग, फिरंगरोग, सन्धिरोग, दूर हों इसके सेवनसे बूढा भी जवानकी सदृशहो यह केशरावलेह धन्य, यशकर्ता, आयु और आरोग्यताके बढाने वाला है ॥ ८०-८७ ॥

आम्रपाक ।

पक्वाम्रस्यरसेद्रोणेसितामाढकसंमिताम् ॥
घृतंप्रस्थमितंदद्यान्नागरस्यपलाष्टकम् ॥ ८८ ॥
मरिचंकुडवोन्मानंपिप्पलींद्विपलोन्मिताम् ॥
सलिलस्याढकंदत्त्वासर्वमेकत्रकारयेत् ॥ ८९ ॥
विपचेन्मृण्मयेपात्रेदारुदर्व्याप्रचालयेत् ॥
चूर्णान्येषांक्षिपेत्तत्रघनीभूतेवतारिते ॥ ९० ॥

धान्यकंजीरकंचित्रंपत्रकंमुस्तकंत्वचम् ॥
बृहज्जीरकमप्यत्रग्रंथिकंनागकेशरम् ॥ ९१ ॥
एलांपत्रींलवंगंचपृथग्जातीफलंपलम् ॥
सिद्धेशीतेप्रदद्याच्चमधुनःकुडवद्वयम् ॥ ९२ ॥
भक्षयेद्भोजनादर्वाक्पलमात्रामिदंनरः ॥
अथवानियतावात्रमात्राःखादेद्यथानलम् ॥ ९३ ॥
मानवःसेवनादस्यवाजीवत्सुरतेभवेत् ॥
समर्थोबलवान्पुष्टोहृष्टोनित्यंनिरामयः ॥ ९४ ॥
ग्रहणींनाशयेदेषक्षयंश्वासमरोचकम् ॥
अम्लपित्तंचपित्तंचकुष्ठंवापांडुतामपि ॥ ९५ ॥

बहुत उत्तम पके हुए आमोंका रस १६ सेर, सोंठका मैदा आधसेर, मिसरी चारसेर, कालीमिर्च एकपाव, पीपल दोछटांक, उत्तम गौका घी १ सेर, प्रथम आमका रस घी मिसरी मिलाके फिर पीपल, सोंठ, मिर्चका मैदा इसमें मिलावे और चारसेर स्वच्छ जलमिलाके किसी मिट्टीके वर्तनमें पकावे और लकडीकी कडछीसे हिलाताजावे जब गाढाहोजावे तब नीचे उतारके नीचे लिखी दवाइयोंका चूर्ण मिलावे। धनियां, जीरा, चित्रक, पत्रज, नागरमोथे, दालचीनी, कलौंजी, पीपलामूल, नागकेशर, इलायची, पत्रज, लौंग, जायफल प्रत्येकका चूर्ण १ छटांक और आधसेर उत्तम सहत मिलावे और कडछीसे खूब मिलाकर उत्तम चीनी या मट्टीके चिकने वर्तन रखे इसमेंसे भोजनके प्रथम उचित मात्रासे नित्य खाना चाहिये इसके सेवनसे पुरुष स्त्रियोंसे घोडेके समान मैथुन करे सामर्थ्यवान् हृष्टपुष्ट सदैव नीरोग रहे संग्रहणी, क्षय, श्वास, अरुचि, अम्लपित्त, पित्तरोग, कुष्ठ, पांडु यह सब रोग दूरहों ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥९३॥९४॥९५॥

महासुगंधितैलम् ।

कर्पूरागरुचोचपत्रनलिकालाजाशटीधातुकी
पुष्पैःसतदलैलवालुसरलैःशैलेयमांसीप्लवैः ॥

एलाकुंकुमरोचनाद्वमरुकैःश्रीवासजातीफलैः
कंकोलक्रमुकोच्चटामदमुराकान्तालवंगानलैः ॥ १६ ॥
वालोशीरहरेणुकानलदजस्थौणेयचंडानखैः
जातीकोशकुलीरपद्मकनतैःस्पृक्कान्वितैःपालिकैः ॥
लाक्षायोजनवाह्लिकोध्रसलिलैस्तैलंविपाच्याढकम्
तैलाभ्यक्ततनुर्जरत्यपिभवेत्स्त्रीणांपरंवल्लभः ॥ १७ ॥
शुक्राढ्योमतिमाननल्पतनयःषंडोपिरत्युत्सुको
वंध्यागर्भवतीभवेदपितथावृद्धापिसूतेसुताम् ॥
कण्डूस्वेदविचर्चिकामलहरंदौर्गंध्यकुष्ठापहम्
अश्विभ्यांपरिकीर्तितंबहुगुणंतैलंसुगंधंमहत् ॥ १८ ॥

कपूर, अगर, दालचीनी, पत्रज, नलिका, लाख, कचूर, धावेके फूल, सतवन, एलवालुक, सुगन्धद्रव्य, सरल, छड, जटामांसी, सुगन्धवाला, इलायची, केशर, गोरोचन, दोनों मरुवा, श्रीवास, जायफल, कंकोल, सुपारी, सुफेद चिरमटी, कस्तूरी, मुरा, प्रियंगु, लौंग, कुट, नेत्रवाला, खस, रेणुक, चन्दन, थुनेर, गठौना, नख, जावित्री, ककडासिंगी, पद्माख, छड, स्पृक्का, लाख, असवर्ग, प्रत्येक ४ तोले लेकर कपडछान करके कल्क बनावे तिलतैल १६ सेर ले लाख, मँजीठ, लोध, इनका क्काथ १६ सेर लेकर सबको विधिवत् तैल सिद्ध करे इस तैलकी मालिससे बूढाभी स्त्रियोंका प्यारा हो; शुक्रयुक्त, कांतिवाला, पुत्रयुक्त, नपुंसकभी मैथुनाभिलापी हो; वन्ध्याकेभी सन्तान हो बुड्ढी स्त्रीभी पुत्र जने और देहकी खुजली, पसीना, विचर्चिका, मैल दुर्गंधि, कोढभी दूर हो । यह अश्विनीकुमारका बनाया और अनेक गणवाला महा सुगंधी तैल है ॥ १६॥१७॥१८ ॥

शतावरीमोदकम् ।

शतावरीश्वदंष्ट्राचबलाचातिबलातथा ॥
मर्कटीक्षुरबीजंचविदारीकंदजंरजः ॥ १९ ॥

एतानिसमभागानिपलिकानिविचूर्णयेत् ॥
चूर्णाच्चतुर्गुणंचैवत्रैलोक्यविजयारजः ॥ १०० ॥
एतदेकीकृतंयावत्तदर्धंमाहिषंपयः ॥
तावन्मात्रेणदातव्यंशतावर्यारसंतथा ॥ १०१ ॥
विदार्याः स्वरसंप्रस्थंसितापलशतद्वयम् ॥
गोलयित्वासितांचैवपात्रेताम्रमये दृढे ॥ २ ॥
पाचयेत्पाकविद्वैद्योलोहकःपरमोहितः ॥
चूर्णंत्रिफलाशृंगीत्रिजातंसैंधवंशटी ॥ ३ ॥
धान्यकंबालकंमुस्तंद्विजीरंकुन्दरुमुरा ॥
काकोलीक्षीरकाकोलीकस्तूरीमृद्धिकातुगा ॥ ४ ॥
जातीकोषफलंमांसीपत्रंवोरद्वयंथिकम् ॥
शतपुष्पाचवीदारुप्रियंगुसलवंगकम् ॥ ५ ॥
सरलंशैलजंकुष्टंजातिपुष्पंरसांजिकाम् ॥
कट्फलंकेशरंमेथीमधुकंदेवताडकम् ॥ ६ ॥
पिपीतालीसपत्रंचखर्जूररसगन्धकम् ॥
त्रिसुगंधिसमायुक्तंकर्पूरेणाधिवासयेत् ॥ ७ ॥
शिवंसंपूज्यसगणंधन्वंतरिमथापरम् ॥
कोलप्रमाणंकर्तव्यंक्षीरंचापिपिबेन्नरः ॥ ८ ॥
प्रातर्भोजनकालेवाभोजयेच्चविचक्षणः ॥
प्रमदानांशतंगच्छेन्नचशुक्रक्षयंभवेत् ॥ १०९ ॥

शतावर, गोखरू, बला, अतिबला, कौंचबीज, तालमखाना, विदारी कन्द, प्रत्येक एक पल शुद्ध भांगका चूर्ण २८ पल, बूरा सौ पल, भैंसका दूध, सतावरका रस, विदारीकन्दका रस प्रत्येक ३२ पल इन सबको मिलाके तांबेके पात्रमें मन्द२ अग्निसे पकावे। जब पकते २ गाढा होजावे तो त्रिफला, त्रिकुटा, शृंगी, त्रिजात, सेंधा, कचूर, धनियां, मोथा, सुगन्धवाला, दोनों

जीरे, कुंदरु, कपूरकचरी, काकोली, क्षीरकाकोली, कस्तूरी, दाख, वंश-लोचन, जावित्री, जायफल, छड, वारेंद्रपत्र, गठिवन, सोया, चव्य, देवदारु, प्रियंगु, लौंग, सरलधूप, भूरिछरीला, कूठ, चमेलीके फूल, अजवायन, कायफल, नागकेसर, मुलेठी, मेथी, देवताड, सौंफ, तालीशपत्र, खजूर, शुद्धपारा; व शुद्धगंधककी कजली, तगर, लालचन्दन, सज्जी, प्रत्येक एक २ तोला इन सबके चूर्णको उपरोक्त दवाईमें मिलादेवे । फिर एक २ तोलेका मोदक बनाकर त्रिजात, त्रिकटा, कपूरके चूर्णमें लठावे इनमेंसे प्रातःकाल या भोजनसे पहले या सायंकाल खाकर ऊपरसे दूध पीवे तो पुरुष १०० स्त्रियोंसे भोग करे तो भी शुक्रक्षय नहो यह परमोत्तम योगहै ॥९९-१०९॥

रतिवल्लभम् ।

समूलपत्रशाखायास्तुलांशक्राशनस्यच ॥
संकुट्योलूखलेछित्त्वाऽपांद्रोणेहितथाचवै ॥ ११० ॥
क्वाथंपादावशिष्टंतुवस्त्रपूतंचकारयेत् ॥
क्षीरप्रस्थंसमादायखंडस्याद्धशतंन्यसेत् ॥ ११ ॥
शतावरीरसस्याष्टौपिप्पल्याकुडवस्तथा ॥
सर्वमेतत्समालोड्यघृतप्रस्थेनमेलयेत् ॥ १२ ॥
औषधानांततश्चूर्णंदापयेत्कार्षिकंपृथक् ॥
त्रिकटु त्रिफलांचव्यमेलात्वक्पत्रकेशरम् ॥ १३ ॥
चित्रकंपिप्पलीमूलंधान्यकाजाजिमेथिका ॥
कुष्ठाब्दरेणुकाव्योषभार्ङ्गीतालीशकेशरम् ॥ १४ ॥
तालमूलीत्रिवृद्दन्तिश्रेयसीहिंगुपौष्करम् ॥
लवंगजातिकोषंचयमानिकारवीतथा ॥ १५ ॥
शुभाजातीफलंचन्द्रंशृंगिचैवविदारिका ॥
अष्टवर्गंचकाकोलंश्लक्ष्णचूर्णंचकारयेत् ॥ १६ ॥
कुडवद्विपचेद्वैद्योमोदकंकारयेत्ततः ॥
अक्षमात्रंचजग्धेषांशीतलंपाययेज्जलम् ॥ १७ ॥

नाशयेच्छुक्रदोषंचषंडंचैवातिदारुणम् ॥
श्रीकरंलाघवकरंमेधाबुद्धिप्रवर्द्धकम् ॥ ११८ ॥

भांगके मूलपत्ते शाखासमेत सब लेकर कटले ऐसी कूटी हुई ६। सेर भाँगको बत्तीस ३२ सेर पानीमें औटावे जब ८ सेर रहे शुद्ध वस्त्र में छानले, फिर इसमें गोदुग्ध २ सेर, बूरा ६। सेर, शतावरीका रस १ सेर, पीपलका क्वाथ एकसेर, घी २ सेर, मिलाके पकावे; जब पकते २ गाढा होने लगे तो त्रिकुटा, त्रिफला, चव्य, छोटी इलायची, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, चीता, पीपलामूल, धनियाँ, जीरा, मेथी, कठ, मोथे, रेणुका, त्रिकुटा, भांग, तालीशपत्र, नागकेशर, मुसली, निशोत, दंती, गजपीपल, हींग, पोहकरमूल, लौंग, जावित्री, अजवायन, सौंफ, पीपल, जायफल, कपूर, कक्कडासिंगी, विदारीकन्द, अष्टवर्ग[1] शीतलचीनी, प्रत्येकका चूर्ण ४ तोले गुडपाककी विधिसे सबको मिलाके पाक करके दोतोलेके लड्डुवा बनाके प्रतिदिन एक लड्डू खाके ऊपरसे शीतल जल पीवे तो अतिदारुणषंढताको दूर करे; लक्ष्मी जनक और शरीरमें हलकापन हो ॥ बुद्धि बढे ॥ ११० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ११८ ॥

चन्द्रोदयरस ।

पलंमृदुस्वर्णदलंरसेंद्रात्पलाष्टकंषोडशगन्धकस्य ॥
शोणैःसुकार्पासभवप्रसूनैःसर्वंविमर्द्याथकुमारिकाद्भिः ॥११९॥
तत्काचकुंभेनिहितंप्रगाढंमृत्कर्पटैस्ताद्दिवसत्रयंच ॥
पचेत्क्रमाग्नौसिकताख्ययन्त्रेततोरसःपल्लवरागरम्यः ॥१२०॥
संगृह्यचैतस्यफलंपलानिचत्वारिकर्पूररजस्तथैव ॥
जातीफलंशोषणमिंद्रपुष्पंकस्तूरिकायाइहशाणएकः ॥१२१॥

१–अष्टवर्ग–जीवक ऋषभकमेदा महामेदा, ऋद्धिवृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली, इनके न मिलने पर प्रतिनि० शतावर, विदारीकन्द, वाराहीकन्द, असगंध लेना चाहिये ।

चंद्रोदयोयंकथितोस्यमाषःभुक्तोहिवल्लीदलसंयुतो ॥
मदोन्मदानांप्रमदाशतानांगर्वाधिकत्वंश्लथयत्यनल्पम् ॥२८॥

सोनेके वर्क ४ तोले, शुद्ध पारा ८ पल शुद्ध गन्धक १६ पल, इन तीनोंको कपासके फूलोंके रसमें और घीकुवारके रसमें खरल करके सुखालेवे, फिर आतसी सीसीमें भरके सीसीको कपडामिट्टीकरके सुखादेवे, फिर वालुका यन्त्रमें रखके तीनदिन क्रमसे मन्द, मध्यम, तेज, आँच देवे तो यह रस लाल वर्णका होजाताहै, इसको शीसीमेंसे निकाललें यह चन्द्रोदयरसहै । चन्द्रोदय रस ४ तोले, भीमसेनीकपूर ४ तोले, जायफल, मिर्च, लौंग, कस्तूरी, प्रत्येक ४ मासे इनको एकत्र पीसकर एक मासा पानमें रखकर नित्य खानेसे सैकडों स्त्रियोंके गर्वको तोडे और जितेन्द्रीरहनेसे वलीपलितादि दूरहों १९-२२॥

वसंततिलकोरसः ।

हेम्नोभस्मकतोलकंद्विगुणितंलौहात्त्रयःपारदाः
चत्वारोनियतंतुवंगयुगलंचैकीकृतंमर्दयेत् ॥
मुक्ताविद्रुमयोरसेनसमतागोक्षूरवासेक्षुणाम् ॥
सर्वंवन्यकरीषकेणसुदृढंतत्संपचेत्सप्तधा ॥ २३ ॥
कस्तूरीघनसारमर्दितरसःपश्चात्सुसिद्धोभवेत्
कासश्वाससपित्तवातकफजित्पांडुप्रमेहादीन्हरेत् ॥
हृद्रोगादिहरंज्वरादिशमनंवृष्यंवयोवर्द्धनम् ॥ २४ ॥

सुवर्णभस्म २ तोला, लोहभस्म ३ तोले, पारेकीभस्म ४ तोले, वंगभस्म २ तोले, मूँगेकी भस्म २ तोले मोतीकीभस्म २ तोले, इन सबको एकत्र कर गोखरू अडूसा, ईख, इन तीनोंके रसमें खलरकर शराव संपुटमें आरनेउपलोंकी आंचमें ७ बार पकाकर पश्चात् कपूर और कस्तूरीके साथ खलर करे-इसको यथायोग्य अनुपानसे सेवन करनेसे कास, श्वास, पित्त, वात, कफ,

---

१—सब रसोंमें विना शोधन किया पारा गंधक न डाले यदि पारा शुद्ध न मिले या शोधन न कर सके तो सिंगरफमेंसे निकाला हुवा पाराही वर्तावमें लावे ।

पांडु और क्षय आदि रोग नष्ट हों । हृद्रोगादि सब दूरहों सब ज्वरोंके शमन करने वाला परम वाजीकर्ता, आयुके बढाने वाला, यहः वसंततिलकरस है ॥ २३ ॥ २४ ॥

अकरभादि ।

आकारकरभःसुंठीलवंगंकुंकुमंकणा ॥
जातीफलंजातिपुष्पंचंदनंकार्पिकंपृथक् ॥ २५ ॥
चूर्णयेदहिफेनंतुतन्नदद्यात्पलोन्मितम् ॥
सर्वमेकीकृतंमाषमात्रंक्षौद्रेणभक्षयेत् ॥ २६ ॥
शुक्रस्तंभकरंपुंसामिदमानंदकारकम् ॥
नारीणांप्रीतिजननंसेवेतनिशिकामुकः ॥ २७ ॥

अकरकरा, सोंठ, लौंग, केशर, पीपल, जायफल, जावित्री, चंदन, सफेद ये प्रत्येक एक २ तोला लेवें; इन सबका बारीक चूर्णकरके चारतोला इस चूर्णमें शुद्ध अफीम मिलावे। सबको एकजीव करके इसमेंसे दो उडद प्रमाण चूर्णको सहतमें मिलाके रात्रिको भक्षण करे ऊपरसे यथेच्छ दूध पीवे तो वीर्य स्तंभनहो । पुरुषको आनंदहो, स्त्रियोंको प्रीतिदायकहै, इसको रातको सोते समय खाना चाहिये ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

खंडकूष्मांडावलेह ।

पुराणंपीनमानीयकूष्मांडस्यफलंमहत् ॥
तद्बीजाधारबीजत्वक्शिराशून्यंसमाचरेत् ॥ २८ ॥
ततस्तस्यतुलांनीत्वापचेज्जलतुलाद्वये ॥
तस्मिन्नीरेऽर्धशिष्टेतुयत्नतःशीतलीकृते ॥ २९ ॥
तानिकूष्मांडखंडानिपीडयेद्दृढवाससा ॥
यत्नतस्तज्जलंनीत्वापुनःपाकायधारयेत् ॥ ३० ॥
कूष्मांडंशोषयेद्धर्मेताम्रपात्रेततःक्षिपेत् ॥
क्षिप्त्वातत्रघृतंप्रस्थंकूष्मांडंतेनभर्जयेत् ॥ ३१ ॥

मधुवर्णंतदालोक्यतज्जलंतत्रनिःक्षिपेत् ॥
सितायाश्चतुलांतत्रक्षिप्त्वातल्लेहवत्पचेत् ॥ ३२ ॥
सुपक्वेपिप्पलीशुंठीजीराणांद्विपलेपृथक् ॥
पृथक्पलार्धंधान्याकंपत्रैलामारिचत्वचम् ॥ ३३ ॥
चूर्णमेषांक्षिपेत्तत्रघृतार्धंक्षौद्रमावपेत् ॥
एतत्पलमितंखादेद्यथवाऽग्निबलंयथा ॥ ३४ ॥
खंडकूष्मांडलेहोयंरक्तपित्तंचनाशयेत् ॥
पित्तज्वरंतृषांदाहंप्रदरंकृशतांवमीम् ॥ ३५ ॥
श्वासंकासंचहृद्रोगंस्वरभेदंक्षतंक्षयम् ॥
नाशयत्येववृद्धिंचबृंहणोबलवर्द्धनः ॥ ३६ ॥

बडे पक्के पेठेके साफ छिलेहुवे टुकडे १०० पलले २०० पल जलमें पकावे, जब जल आधा रहे उतारकर ठंडा करले, फिर मोटे वस्त्रमें बाँधके खूब निचोड डाले, उस निचोडे हुवे जलको दूसरे पात्रमें रखेरहनेदे, फिर उन पेठेके टुकडोंको कुछेक धूपमें सुखाके एक तांबेके पात्रमें १ सेर घी डालकर भूने, जब यह टुकडे घीमें भुनकर लालहोजावें फिर जो पहले इन पेठेके टुकडोंमेंसे पानी निचोडकर रखाथा वही पानी इसमें डालदे और सौ १०० पल मिसरीभी इसमें डालकर अवलेह सिद्ध करे, फिर इसमें पीपल, सोंठ, जीरा, प्रत्येक दोदो पल धनियां, पत्रज, इलायची, मिर्च, तेजपत्र, प्रत्येक दो २ तोले सबका चूर्णकर उपरोक्त अवलेहमें मिलावे, जब ठीक मिलजावे इसको शीतल करके इसमें आधसेर सहत डाले, यह खंडकूष्मांड अवलेह बना, इसको ४ तोले या जितना माफिक हो उतना खावे तो रक्तपित्त, पित्तज्वर, तृषा, खाँसी, श्वास, हृद्रोग, दाह, प्रदर, कृशपना, वमन, स्वरभेद, उरःक्षत, राजरोग ये सब रोग नष्टहों बलको बढावे, देह पुष्टकरे और बृंहणहै ॥ २८–३६ ॥

वसंतकुसुमाकर ।

प्रवालरसमौक्तिकांबरमिदंचतुर्भागभाक्
पृथक्पृथगथस्मृतेरजतहेमताद्व्यंसके ॥

अथोभुजगरंगकंत्रिलवकंविमर्द्योखिलम्
शुभेहनिविभावयेद्भिषगिदंधियासत्तशः ॥ ३७ ॥
द्रवैर्वृषनिशेक्षुजैःकमलमालतीपुष्पजैः
पयःकदलिकंदजैर्मलयजैणनाभ्युद्भवैः ॥
वसंतकुसुमाकरोरसपतिर्द्विवल्लोशितः
समस्तगदहृद्भवेत्किलनिजानुपानैरयम् ॥ ३८ ॥

मूँगा, मोती, रससिंदूर, अभ्रक, प्रत्येककी भस्म ४ तोले, रूपा, सुवर्ण-इन दोनोंकी भस्म दो २ तोला लोह, शीसा, रांगा, इनकी भस्म तीन ३ तोला इन सबको एकत्र कर अडूसा, हलदी, ईख, कमल, चंदन, चमेलीके फूल, केलाकंद, इन सबके रसकी तथा दूध और कस्तूरीकी भावना देकर दो २ रत्तीकी गोलियाँ बनावे, इसको दोषानुकूल अनुपानसे देवेतो अनेक रोग हद्रोग आदि शांत हों ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

पूर्णचंद्रोरसः ।

मृताभ्रलोहंसशिलाजतुस्याद्विडंगताप्येमधुनाघृतेन ॥
पिष्टंप्रशस्तंखलुपूर्णचन्द्रोमाषोस्यपुष्टयैभवतिप्रशस्तः ॥ ३९ ॥

रससिंदूर, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, शुद्धशिलाजीत, वायविडंग, सुवर्णमाक्षिकभस्म, प्रत्येक बराबर लेकर सहत और घृतके साथ १ मासा सेवन करनेसे अत्यंत पुष्टाई करताहै इसको पूर्णचंद्र कहतेहैं ॥ ३९ ॥

अध्यायका उपसंहार ।

संतानोत्पादकेशुक्रेयेरोगाविघ्नकारकाः ॥
तेषांशांतिकरायोगावाजीकरणकीर्तिताः ॥ १४० ॥

संतानके उत्पादक शुक्रमें जो रोग विघ्नकारकहैं उनकी शांतिके करनेवाले योग इस वाजीकरण अध्यायमें लिखेहैं ॥ १४० ॥

इति श्रीशुभसन्ततियोगप्रकाशे वाजीकरणो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथातोवंध्याचिकित्सितंनामाध्यायंव्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

अब हम वंध्याचिकित्सित नामक अध्यायका व्याख्यान करते हैं ॥ १ ॥

वन्ध्याचिकित्सितंनामह्यध्यायंसर्वसंमतम् ॥
आयुर्वेदाच्चतंत्राच्चलेखयिष्येप्रयत्नतः ॥ २ ॥

वंध्याचिकित्सित नामक सर्व सम्मत अध्यायको आयुर्वेद व तन्त्र शास्त्रसे यत्न पूर्वक लिखताहूँ ॥ २ ॥

पूर्वार्जितैर्महापापैःपीडितामानवाभृशम् ॥
आर्दिताश्चमहारोगैरनपत्याभवंतिवै ॥ ३ ॥

पूर्वले जन्मके या इस जन्मके इकट्ठे किये हुए पापोंसे पीडित हुए मनुष्य अनेक महा व्याधियोंसे दुःखित हुए बिना संतान अर्थात् निरपत्य होते हैं ॥ ३ ॥

गोब्रह्मबालघातीचप्रपाऽऽरामादिघातकः ॥
परद्रव्याऽपहर्तारःपरदाराभिगामिनः ॥ ४ ॥
शास्त्रवर्ज्यकुकर्मसुयेरतानिरपत्रपाः ॥
तेवैस्वोपार्जितैःपापैर्वंचिताःपुत्रनामतः ॥ ५ ॥

गौ, ब्राह्मण, बालक, आदिकोंके मारने वाला, प्रपा, बाग, मन्दिर, आदिके नष्ट करनेवाला, पराये द्रव्यके हरनेवाला, परायीस्त्रीसे गमन करनेवाला और जो शास्त्रोंमें त्याज्य कर्म लिखे हैं । निर्लज्जहोकर उन निन्दनीय कर्मोंके करनेवाले अपने इकट्ठे किये पापोंसे पुत्र नामसेही ठगे जाते हैं । अर्थात् जब रोगग्रसित और पापी मनुष्योंके सन्तान नहीं होती तो वह बिचारे पुत्र किसको कहें ॥ ४ ॥ ५ ॥

अच्छायःपूतिकुसुमःफलेनरहितोद्रुमः ॥
यथैकश्चैकशाखश्चनिरपत्यस्तथानरः ॥ ६ ॥

छाया रहित, दुर्गंधित फूलोंवाला, फलसे विना एक शाखावाला, जैसे वृक्ष होता है ऐसेही सन्तानके बिना मनुष्य होता है ॥ ६ ॥

स्खलद्गमनमव्यक्तवचनंधूलिधूसरम् ॥
अपिलालाविलमुखंहृदयाऽऽह्लादकारकम् ॥ ७ ॥
अपत्यंतुल्यताकेनदर्शनस्पर्शनादिषु ॥
किंपुनर्यद्यशोधर्ममानश्रीकुलवर्द्धनम् ॥ ८ ॥

चलते २ गिरजानेवाले जो समझा न जाय ऐसे तुतलान युक्त बोलने वाले धूलिसे धूसर लालोंसे आविलरूप मुख वाले हृदयमें आनन्दके करने वाले सन्तानके बराबर दर्शन स्पर्शन आदिकोंमें और कौन वस्तु है जिससे तुल्यता करें अर्थात् कोई नहीं। फिर यश, धर्म, मान, शोभा, कुलको बढाने-वाले पुत्रकी तो क्या गणना है ॥ ७ ॥ ८ ॥

चिकित्साक्रम।

प्रायश्चित्तंतुकर्तव्यंसमाहूयविपश्चितम् ॥
पुत्रेष्टिश्चततःकुर्याद्रुद्रस्नानंतथैवच ॥ ९ ॥

पहले पुत्रकी कामनावाला मनुष्य, पंडितसे पूछकर विधिवत् पापोंकी शांतिके लिये प्रायश्चित्त करके फिर रुद्रस्नान और पुत्रेष्टी यज्ञ करे ॥ ९ ॥

ततो दोषबलंज्ञात्वाप्रत्यक्षादिभिरेवच ॥
विधिवदौषधिंकुर्याद्वन्ध्यादोषनिवृत्तये ॥ १० ॥

फिर दोष बलको प्रत्यक्ष अनुमान आगमसे जानकर वंध्यादोषकी शांतिके वास्ते विधिवत् औषधिका उपचार करे ॥ १० ॥

वन्ध्यानष्टार्तवाज्ञेयाह्यथवार्तवदोषतः ॥
अतस्तद्दोषशांत्यर्थंचिकित्सालिख्यतेमया ॥ ११ ॥

जिसका ऋतुधर्म अर्थात् महीने २ ऋतुका आना जिस स्त्रीका बन्द हो गयाहो उसको बांझ कहते हैं। अथवा जिसकी ऋतुमें वायुआदि किसी दोषकी खराबी हो स्त्रीके भी उस सन्तान नहीं होती इसलिये उस वन्ध्या दोषकी शांतिके वास्ते अब यत्न अर्थात् चिकित्सा लिखतेहैं ॥ ११ ॥

नष्टार्तवाका यत्न ।

ज्योतिष्मतीकोमलपत्रमग्नौभृष्टंजवान्याःकुसुमंचपिष्टम् ॥
शुक्तांबुनापीतमिदंयुवत्याःकरोतिपुष्पंस्मरमन्दिरस्य ॥ १२ ॥

मालकांगुनीके कोमल भुनेहुवे पत्र और अजवायनके फूल इन दोनोंको कांजीमें पीसकर पीनेसे स्त्रियोंका रज प्रवर्तन होताहै ॥ १२ ॥

अथवा

लांगलीकन्दचूर्णवामूलंवैवापमार्गजम् ॥
इन्द्रवारुणिकामूलंयोनिस्थंपुष्पबंधनुत् ॥ १३ ॥

कलहारीकी जडका चूर्ण, अथवा अपामार्गकी जडका चूर्ण, या इन्द्रायण की जडका चूर्ण, तीनोंमेंसे किसीएकका चूर्ण लेकर पानीमें गाढा २ रगडकर कपडेकी बातीमें लपेटकर योनीमें रखनेसे स्त्रियोंका रजधर्म खुलकर आने लगताहै ॥ १३ ॥

तिलमूलकषायंतुब्रह्मदण्डीयमूलकम् ॥
यष्टीत्रिकटुकंचूर्णंक्वाथयुक्तंचपाययेत् ॥
पुष्परोधेरक्तगुल्मेस्त्रीणांसद्यःप्रशस्यते ॥ १४ ॥

तिलकी जडका क्वाथ, अथवा ब्रह्मदंडीकी जडका क्वाथ, बनाकर उसमें मुलेठी और त्रिकटुकका चूर्ण डालकर पीनेसे रजका अवरोध और रक्तगुल्म नष्ट होताहै ॥ १४ ॥

दूर्वादलंतंदुलतुल्यभागंनिष्पिष्यपिष्टंपरिपाचितंच ॥
तद्भक्षयित्वावनिताप्रणष्टंपुष्पंलभेतस्वबलानुरूपम् ॥१५॥

दूबके पत्ते और चावल दोनोंको बराबर लेकर पिट्ठी बनावे इस पिट्ठीको घीमें भूनकर खानेसे अपनी ताकतके सदृश स्त्री गये पुष्पको फिर प्रकाश करे ॥ १५ ॥

योनिशुद्धीकरण ।

प्रथमंभगमध्येतुचाणक्यींपोटलींक्षिपेत् ॥
एकाहंतंप्रकुर्वीताद्वितीयेह्निचमेथिकाम् ॥ १६ ॥

तृतीयेदिवसेभृंगीपोटलींतुविनिःक्षिपेत् ॥
ततएलात्वक्तमालंजातीफललवंगकम् ॥ १७ ॥
जातीपत्रंकट्फलंचबदरीमूलजत्वचम् ॥
पूतनाफटकींचैवधातकींनलदानिच ॥ १८ ॥
पद्मांशर्करयाचैवकरंजफलकांगुकौ ॥
कपीफलसमेतानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ १९ ॥
मधुनागुटिकांकृत्वाधात्रीफलप्रमाणतः ॥
अनेनयोनिशुद्धिःस्यात्गर्भयोग्यानसंशयः ॥ २० ॥

पहले दिन चणोंकी पोटली बनाकर योनीमें रक्खे दूसरे दिन मेथीकी पोटली रखे, तीसरे दिन भांगकी पोटली रखे, फिर चौथे दिन इलायची, तज, तेजपत्र, जायफल, लौंग, जावित्री, कायफल, बेरीके जडकी छाल, हरड, फटकडी, धावेके फूल, जटामासी, कमल, मिसरी, करंजके फूल, गुड, पारस पीपलके फल, इन सबको कपडछानकर सहतमें गोली बनाके आमलेकी समान भगमें रखे तो भगके सब दोष दूर होकर गर्भाधान योग्य होजावे॥ १६–२०॥

स्त्रीपुरुषकी दोषकी परीक्षा।

येषांमूत्रेणमुद्गाश्चप्रस्फुटानचसांकुराः ॥
वन्ध्यत्वंतत्रविज्ञेयंस्त्रीणांवापुरुषस्यच ॥ २१ ॥

दो ठीकरोंमें अलग अलग मूँग भिगोकर उस स्त्री और पुरुषसे पेशाब करावे। जिसके मूत्रमें मूँग न फूटे उसकी चिकित्सा करे, जो मूँग फूट निकले मूँगके आकार सही ठीक पैदा हो तो समझना कि कोई दोष नहीं ॥ २१ ॥

अष्टवन्ध्यावर्णन।

अष्टौदोषास्तुनारीणांनवमःपुरुषस्यच ॥
रक्तात्पित्तात्तथावाताच्छ्लेष्मणःसन्निपातकात् ॥ २२ ॥
ग्रहदोषविकारेणदेवतानांप्रकोपनात् ॥
व्यभिचारकृताच्चैवरेतोहीनस्तथापुमान् ॥ २३ ॥

आठ प्रकारसे स्त्रीमें वंध्यादोष होतेहैं और नवमा पुरुषका दोष होताहै। जैसे १ रक्तसे, २ पित्तसे, ३ वायुसे, ४ कफसे, ५ सन्निपातसे, ६ ग्रहोंके दोषसे, ७ देवताओंके कोपसे, ८ गुरुजनोंके शापसे, ९ पुरुषके वीर्यविकारसे ॥ २२ ॥२३॥

वातविकारका निदानचिकित्सा।

अतिसूक्ष्मतररक्तंकुंकुमोदकसन्निभम् ॥
कटिशूलंभवेत्तस्यायोनिशूलंतथाज्वरः ॥ २४ ॥
मारुतस्यविकारोयंचिकित्सालिख्यतेऽधुना ॥

अतिसूक्ष्म (थोडा) रक्त आवे, अथवा केशरके पानीकी सदृश रज हो, कमरमें और योनिमें शूलहो और ज्वरहो, यह वायुसे दूषित रजके लक्षणहैं। अब इसकी चिकित्सालिखते हैं ॥ २४ ॥

मूलंतुसहकारस्यतथाव्याघ्रपदस्यच ॥ २५ ॥
बृहतीजंबुमूलेचक्षीरेणालोड्यसापिबेत् ॥
सप्ताहंपंचरात्रंवायावत्स्रवतिशोणितम् ॥ २६ ॥
ततोयोन्यांविशुद्धायांलक्ष्मणाक्षीरसंयुता ॥
नस्येपानेचदातव्यातेनसालभतेसुतम् ॥ २७ ॥

आमकी जड दोनों कटेलियोंकी जड, जामुनकी जड, इन चारोंकी जडकी छाल बराबर लेकर दूधमें पीसकर वातविकार दूषित रजवाली स्त्री पीवे ५ या ७ दिन जबतक उसके रक्त स्रवतारहै। फिर योनि शुद्धहोनेके अनंतर लक्ष्मणाको गोदुग्धमें रगडकर पीवे और नस्यलेवे तो वह स्त्री गर्भ धारणकर पुत्र जनेगी ॥ २५-२७ ॥

पित्त दू० ल०।

पक्कजंबूफलाकारंकृष्णंस्रवतिशोणितम् ॥
कटिशूलंभवेत्तस्याउदरंचप्रदह्यते ॥
पुष्पस्रावंकरोत्युष्णमेतत्पित्तस्यलक्षणम् ॥ २८ ॥

जो स्त्री पक्क जामुन फल सदृश काला और गर्म रजस्राव करे और कमरमें शूलहो पेटमें दाहहो उसके पित्तदूषित रजके लक्षण जानने ॥ २८ ॥

पित्तदू० ल० ।

पित्तदूषितरक्तेचक्रियामेतांसमाचरेत् ॥
उत्पलंतगरंकुष्ठंयष्टीमधुकचन्दनम् ॥ २९ ॥
छागीक्षीरेणसंपिष्ट्वापिबेन्नारीसशोणिता ॥
ततोयोन्यांविशुद्धायामिमांदद्यान्महौषधिम् ॥ ३० ॥
लक्ष्मणांक्षीरसंयुक्तांपूर्ववद्धिप्रदापयेत् ॥
तेनसालभतेपुत्रंरूपवन्तंगुणान्वितम् ॥ ३१ ॥

जिस स्त्रीका रक्त पित्तसे दूषित हो उसको कमल गट्टा तगर कूठ मुलेहटी सफेद चन्दन यह बकरीके दूधमें पीसकर जबतक औरतका रजधर्म रहे, तब तक पिलावे। फिर जब योनि शुद्ध होजावे इस महा औषधिको देवे।लक्ष्मणाको दूधमें रगडकर नस्य दे और पिलावे तो वह स्त्री गुणवान् व रूपवान् पुत्रको जनती है ॥ २९-३१ ॥

कफदूषितके लक्षण ।

कफेनदूषितेपुष्पेलक्षणानिनिबोधवै ॥
बहुलंपिच्छिलंरक्तंनातिरक्तंभवेत्तदा ॥ ३२ ॥
नाभिमण्डलमूलेतुशूलंभवतिदारुणम् ॥
अर्कमूलंप्रियंगूंचकुसुमंनागकेशरम् ॥ ३३ ॥
बलाचातिबलाचैवछागीदुग्धेनवापिबेत् ॥
त्रिफलात्रिकटुंचैवचित्रकंसमभागकम् ॥ ३४ ॥
पूर्ववद्धिप्रदातव्यालक्ष्मणाक्षीरसंयुता ॥

जिस स्त्रीका रज कफसे दूषितहो उसके यह लक्षण हैं। रजद्रव अधिकहो चिकना और गाढाहो जादे लाल न हो नाभिमण्डलमें दारुण शूलहो इसमें आककी जड, प्रियंगु, लौंग, नागकेशर, बला, अतिबला, इनको बकरीके दूधमें रगडकर अथवा त्रिफला त्रिकुटा चित्रक इनको समभाग लेकर बकरीके

दूधमें रगडकर तीन दिन या पांच दिन या जबतक रक्तका स्राव रहे कफ दूषित स्त्री पीवे, फिर योनि शुद्ध होनेपर लक्ष्मणाका सेवन करनेसे अवश्य पुत्रहो ॥ ३२-३४ ॥

सन्निपातदूषित ।

सन्निपातहतेपुष्पेज्वरस्तीव्रश्चजायते ॥ २५ ॥
शोणितंतुभवेत्कृष्णमत्युष्णंपिच्छिलंबहु ॥
कुक्षिकोदरयोन्यांचकट्यांशूलंचजायते ॥ २६ ॥
गात्रभंगोभवेत्तस्यबहुनिद्रातथैवच ॥
गंधर्वहस्तमूलंचसहकारंत्रिवृत्तथा ॥ २७ ॥
उत्पलंतगरंकुष्ठंयष्टीमधुकचन्दनम् ॥
अजाक्षीरेणपिष्टंतुसप्तरात्रंततःपिबेत् ॥ २८ ॥
ततोयोन्यांविशुद्धायांश्वेतार्कक्षुद्रिणींतथा ॥
लक्ष्मणांबन्ध्यककोटींश्वेतांचगिरिकार्णिकाम् ॥ २९ ॥
गवांक्षीरेणसंपिष्यनस्येपानेप्रदापयेत ॥
दक्षिणेलभतेपुत्रंवामेपुत्रींनसंशयः ॥ ४० ॥

सन्निपातसे दूषित रजहो तो उस स्त्रीको तीव्र ज्वरहो; रजद्रव काला, अत्यन्त उष्ण और चिकना, गाढाहो, कुक्षिमें, पेटमें, योनिमें, कमरमें, दर्द हो, शरीर टूटे, नींद अधिक आवे, यह त्रिदोषके लक्षण हैं । उस स्त्रीको एरण्डकी छाल, आमकी छाल, निशोद, कमल, तगर, कूठ, चन्दन, मुलेठी, इन सबको बकरीके दूधसे रगडकर सातरोज या जबतक रजद्रव रहे तो पीवे, इसके अनन्तर जब योनि शुद्धहो तो सफेद आककी जड, छोटी कटेलकी जड, लक्ष्मणाकी जड, बांझककौडा, विष्णुकान्ता सुफेद फूलकी जड, इन सबको गौके दूधमें पीसकर सुंघावे और पिलावे तो अवश्य सन्तानहो। दक्षिण नासिकासे सुघांवे तो पुत्र, वाम नासिकासे पुत्री होतीहै॥ ३५-४०॥

गुरुदेवादिदोषेषुतेषांप्रतिक्रियाहितम् ॥ ४१ ॥

गुरु या देवता आदिके कोपसे बन्ध्यादोष हो तो उनकी प्रतिक्रिया अर्थात् उनके पूजन आराधन आदिसे प्रसन्न करना हितकारक है ॥ ४१ ॥

और मतसे बन्ध्याओंका वर्णन ।

अन्यद्वंध्याष्टकंवक्ष्येसचिकित्संप्रयत्नतः ॥
त्रिपक्षीशुभ्रतीसज्जात्रिमुखीव्याघ्रिणीवकी ॥ ४२ ॥
कमलीव्यक्तिनीचैवतासांचिह्नंलिखाम्यहम् ॥
त्रिपक्षीनामयावन्ध्यात्रिपक्षेपुष्पिताभवेत् ॥ ४३ ॥
द्वजीरकेश्वेतवचाककोंटयाश्चफलंसमम् ॥
तण्डुलोदकसंपिष्टंचोत्थितासूर्यसन्मुखी ॥ ४४ ॥
त्रिदिनंचापिबेन्नारीदुग्धभक्तंचभोजनम् ॥
तेनगर्भोभवेन्नार्याःसत्यमेतन्नसंशयः ॥ ४५ ॥

अब और आठ प्रकारकी बांझ और उनकी चिकित्सा यत्नपूर्वक लिखताहूँ । उनके यह नाम और लक्षण हैं–१ त्रिपक्षी, २ शुभ्रती, ३ सज्जा, ४ त्रिमुखी ५ व्याघ्रिणी ६ वकी, ७ कमलिनी, ८ व्यक्तिनी । इनके अब मैं लक्षण यत्नसे लिखताहूँ । जो स्त्री तीन पक्षमें अर्थात् १॥ महीनेमें रजोवती हो उसको त्रिपक्षी कहते हैं उसका यह यत्न करे । दोनों जीरे, सफेदवच, ककोडेके फल, ये सब समान भाग लेकर तण्डुलजलमें पीसकर सूर्यके सामने खडी होकर तीन दिन पीवे और दूध चावल खावे त्रिपक्षीवंध्या दोष दूर होकर पुत्रहो ॥ ४२–४५ ॥

गात्रंसंकुचतेनित्यंदेहेचैवाविवर्णता ॥
शुभ्रीतिनामसावंध्यागर्भस्तस्यनजायते ॥ ४६ ॥

शुभ्री नाम वंध्याका शरीर सदा सकुचासा रहै, देहमें नित्य विवर्णताहो, इसको कभी गर्भ नहीं होता ॥ ४६ ॥

अप्रमाणैश्चदिवसैः सज्जापुष्पंप्रसूयते ॥
जीरेवचासमंगांचगृह्णीयाच्छुभवासरे ॥ ४७ ॥

कर्कोटींशृंखलाकारींपिष्ट्वातंडुलवारिणा ॥
दिनत्रयंयतानारीसूर्यस्यसंमुखीपिबेत् ॥
दुग्धभक्तंचभुंजीतभवेद्गर्भोनसंशयः ॥ ४८ ॥

विनाप्रमाणसे कभी आगे कभी पीछे कभी महीनेमें कई दफा सज्जानामक वंध्या पुष्पवती होतीहै। दोनों जीरे, वच, मँजीठ, ककोडा, हडजोरी, इन सबको चावलोंके जलसे रगड कर सूर्यके सन्मुख खडी होकर तीन दिन पीवे दूध और चावल पथ्य खावे तो अवश्य गर्भ धारण करे ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

त्रिमुखीनामयावंध्यामैथुनेसलिलंस्रवेत् ॥
भोजनेमैथुनेलौल्यंगर्भस्तस्यानजायते ॥ ४९ ॥

त्रिमुखी नाम वंध्यासे मैथुनके समय नित्य पानी चलता है और यह भोजन और मैथुनमें चपलता व स्नेह रखतीहै इसकेभी सन्तान नहीं होताहै ॥ ४९ ॥

व्याघ्रिण्याउत्तरेकालेऽपत्यमेकंप्रजायते ॥
त्रिपक्ष्युक्तंप्रदातव्यमौषधंपुत्रदायकम् ॥ ५० ॥

व्याघ्रिणी नामक वंध्या अधिकावस्थामें एक पुत्र उत्पन्न करतीहै इसको त्रिपक्षीकी चिकित्सामें जो दवा लिखीहै वही देनी चाहिये ॥ ५० ॥

बक्यसृक्स्रवतेश्वेतंअष्टमेदशमेदिने ॥ ५१ ॥

बकी वंध्याके आठवें दशवें दिन सफेद धातुकी सदृश स्राव होताहै । इस स्त्रीके संतान नहींहोती ॥ ५१ ॥

सलिलंस्रवतेयोन्याःकमलिन्यांनिरंतरम् ॥ ५२ ॥

कमलिनी वंध्याकी योनिसे निरन्तर जल स्रवताहै यहभी निःसन्तान होतीहै ॥ ५२ ॥

व्यक्तिनीनामयावंध्याप्रमेहोभवतिस्फुटम् ॥
रक्तापामार्गजंबीजंशर्करामर्दकीफलम् ॥ ५३ ॥
औषधींरत्नमालांचगोदुग्धेनप्रपेशयेत् ॥
त्रिसप्तदिवसंपीत्वाप्रमेहंनाशयेद्ध्रुवम् ॥ ५४ ॥

कृष्णागुरुकेशरंचककोंटींसफलांतथा ॥
द्वेजीरकेसवत्सागोक्षीरेणालोड्यसापिबेत ॥ ५५ ॥

व्यक्तिनी नाम वंध्याके प्रमेहकी समान सफेद धातु गिरतीहै इसको लाल अपामार्गके बीज मिसरी कौंचकेबीज रत्नजोत, इन सबको बारीक पीसकर गोदूधसे सात दिन पीवे। फिर काली अगर नागकेशर, ककौडा कालाजीरा, सफेद जीरा, इन सबको बछडे वाली गायके दूधके साथ सात दिन पीवे दूध चावल पथ्य करे तो अवश्य गर्भ हो ॥ ५३–५५ ॥

वैद्यकसे वंध्याके आठप्रकार।

जन्मवंध्याकाकवन्ध्यामृतवत्सातथैवच ॥
स्रवद्गर्भागलद्गर्भाकन्यापत्यंप्रसूयते ॥ ५६ ॥
मूढगर्भारजोहीनाह्यष्टौवंध्याःप्रकीर्तिताः ॥
उक्तांचिकित्सितांकिंचित्किंचिदग्रेप्रवक्ष्यते ॥ ५७ ॥

जिस स्त्रीके कोई सन्तान नहीं उसको जन्मवंध्या कहतेहैं १ जिसके सिर्फ एकपुत्र होकर फिर संतान नहीं उसको काकवंध्याकहते हैं। २ जिसके संतान हो हो कर मरजावे वह मृतवत्सा कहाती है ३ जिसका दो महीनेबाद गर्भस्राव होजायाकरे उसको स्रवद्गर्भा कहतेहैं ४ जिसके चार महीनेतक गर्भ रहकर गिरजाया करे उसको गलद्गर्भा और पतितगर्भा भी कहतेहैं ५ जिस स्त्रीके कन्याही कन्याहो और पुत्र न हो उसको कन्या प्रजा कहतेहैं ६ जिसके गर्भ होकर बढे नहीं और दूसरा गर्भभी नहो उसको मूढगर्भा कहतेहैं ७ जो स्त्री पुष्पवती न होतीहो उसको रजोहीना कहतेहैं८ये आठ प्रकारकी वंध्याहैं उनमें रजोहीनाकी चिकित्सा कहचुके बाकी आगे कहेंगे ॥५६ ॥ ५७ ॥

अथगर्भप्रदायोगा—लक्ष्मणाद्यंघृतम्।

लक्ष्मणांचंदनंलोध्रंउशीरंपद्मकंशठी ॥
द्वेहरिद्रेवचाकुष्ठंपद्मकेशरमुत्पलम् ॥ ५८ ॥
शारिवेद्वेविडंगानिसुमनःकुसुमानिच ॥
मांसीदारश्वदंष्ट्राचरेणुकंचोत्पलंतथा ॥ ५९ ॥

मधुकंशतपुष्पाचमात्रैषांकार्षिकाभवेत् ॥
एभिर्वाजघृतप्रस्थंक्षीरंदत्त्वाचतुर्गुणम् ॥ ६० ॥
तत्कषायंदशगुणंस्नेहपाकविधिंपचेत् ॥
गुणांस्तस्यप्रवक्ष्यामिघृतस्यास्यमहात्मनः ॥ ६१ ॥
गर्भिणीनांचनारीणांपानाऽभ्यंजनभोजनैः ॥
बालानांग्रहजुष्टानांघृतमेतत्प्रशस्यते ॥ ६२ ॥
वंध्यापुष्टिप्रदंपौष्टचमपुत्राणांचपुत्रदम् ॥
श्रेष्ठंवायोनिरोगेस्यादसृग्दरविनाशनम् ॥
यन्मयालिखितंह्येतल्लक्ष्मणाद्यंघृतंमहत् ॥ ६३ ॥

अब गर्भप्रद योग कहतेहैं लक्ष्मणा, चंदन, लोध, खस, पद्माख, कचूर, हलदी, दारुहलदी, वच, कूठ, कमलकेशर, कमल, दोनों सारिवा, विडंग, चमेलीके फल, बालछड, देवदारु, गोखरु, रेणका, कमोदनी, मुलैठी, सौंफ, इन सबको एक २ तोला लेकर कल्क बनावे। ब .रीका घृत १ प्रस्थ दूध ४ प्रस्थ उपरोक्त कल्क वाली औषधियोंका क्वाथ १० प्रस्थ इन सबको एकत्र कर स्नेह पाक विधिसे पकावे । सिद्ध होनेपर इस घृतको स्त्रियोंके पान और अभ्यंग तथा भोजनमें प्रयोग करे । यह घृत बालकोंको अत्यंत हितकारीहै । वंध्या स्त्रीको और अपुत्रिणीको पुष्टकर्ता और पुत्र देने वालाहै योनिरोगमें अतिश्रेष्ठहै, प्रदरको नष्ट करताहै ॥ ५८—६३ ॥

फलघृत ।

सहचरंद्वेत्रिफलांगुडूचींसपुनर्नवाम् ॥
शुकनासांहरिद्रेद्वेरास्नांमेदांशतावरीम् ॥ ६४ ॥
कल्कीकृत्यघृतप्रस्थंपचेत्क्षीरचतुर्गुणम् ॥
तत्सिद्धंप्रपिबेन्नारीयोनिशूलनिपीडिता ॥ ६५ ॥
पीडिताचलितायोनिर्निःसृताविवृताचया ॥
पित्तयोनिश्चविस्रस्ताषण्डायोनिश्चयास्मृता ॥ ६६ ॥

प्रपद्यंतेतुतास्थानंगर्भंगृह्णंतिचासकृत् ॥
एतत्फलघृतंनामयोनिदोषहरंपरम् ॥ ६७ ॥

दोनों प्रकारका पियाबाँसा । त्रिफला, गिलोय, पुनर्नवा, स्योनाक, दोनों हलदी, रास्ना, मेदा और शतावर, इनका कल्क बनाकर एकप्रस्थ घी, चौगुने दूधसे सिद्ध करे । सिद्ध होनेपर इसके सेवनसे योनिशूल, पीडितयोनि चलायमान योनि, निसृतयोनि, पित्तजयोनि, विस्रस्तयोनि, षंढयोनि, यह सब योनिरोग दूर होकर शीघ्रही गर्भ होनेकी सामर्थ्यहो । यह फलघृत सब योनि रोगोंको दूर करताहै ॥ ६४–६७ ॥

बृहत्फलघृत ।

मञ्जिष्ठामधुकंकुष्ठंत्रिफलाशर्करावला: ॥
मेदापयस्याकाकोलीमूलंचैवाश्वगंधजम् ॥ ६८ ॥
अजमोदाहरिद्रेद्वेहिंगुकटुकरोहिणी ॥
उत्पलंकुमुदंद्राक्षाकाकोल्यौचंदनद्वयम् ॥ ६९ ॥
एतेषांकार्षिकैर्भागैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥
शतावरीरसक्षीरंघृताद्देयंचतुर्गुणम् ॥ ७० ॥
सर्पिरेतन्नर:पीत्वास्त्रीषुनित्यंवृषायते ॥
पुत्रंजनयतेनारीमेधाढ्यंप्रियदर्शनम् ॥ ७१ ॥
याचैवाऽस्थिरगर्भास्याद्यावाजनयतेमृतम् ॥
अल्पायुषंवाजनयेद्याचकन्यांप्रसूयते ॥ ७२ ॥
योनिदोषेरजोदोषेपरिस्रावेचशस्यते ॥
प्रजावर्द्धनमायुष्यंसर्वग्रहनिवारणम् ॥ ७३ ॥
नाम्नाफलघृतंचैतदश्विभ्यांपरिकीर्तितम् ॥
अनुक्तंलक्ष्मणामूलंक्षिपंत्यत्रचिकित्सका: ॥ ७४ ॥

मँजीठ, मुलेठी, कट, त्रिफला, मिसरी, खरेंटी, मेदा; काकोली, क्षीरकाकोली, असगंधकी जड, अजमोद, दोनों हलदी, हींग, कुटकी, कमल, कमो-

दनी, मुनक्का, दोनों काकोली, दोनों चंदन, प्रत्येक एक २ तोला लेकर कल्क बनावे । गोघृत एकप्रस्थ, शतावरका रस ४ प्रस्थ गौका दूध ४ प्रस्थ, लेकर घृत सिद्ध करे । इस घीको पान करनेसे पुरुष स्त्रीसे वृषभ समान रमणकरे । स्त्री इस घृतको पान करनेसे मेधा संपन्न प्रियदर्शन पुत्रको जने । जिन स्त्रियोंका गर्भ स्थिर न रहे, जिसके मरीहुई संतानहो, या अल्पायु पुत्रहो, या कन्याही कन्याहोतीहों, तथा योनिरोग, रजोदोष, योनिस्राव, आदि इस घृतसे सबरोग दूरहों । संतानके बढानेवाला अवस्थाको स्थापन करनेवाला सब ग्रहोंको दूर करनेवाला अश्विनीकुमारका निर्माणकिया यह फलघृतहै । बिना कहेभी वैद्यलोग इसमें लक्ष्मणाकी जड मिलातेहैं ॥ ६८–७४ ॥

शतावरीघृत ।

शतावर्य्याविदार्य्याश्चतथामापात्मगुप्तयोः ॥
श्वदंष्ट्रायाश्चनिःक्काथेनल्वणेचपृथक्पृथक् ॥ ७५ ॥
साधयित्वाघृतप्रस्थंपयश्चतुर्गुणंपचेत् ॥
शर्करामधुसंयुक्तंमिलित्वातत्प्रयोजयेत् ॥ ७६ ॥

शतावर, विदारीकन्द, उडद, कौंच, गोखरू इनका अलग २ क्काथ एक २ प्रस्थ बनाकर १ प्रस्थ घी दूध ४ प्रस्थ इस घीको साधन करके इसमें शहद और मिसरी मिलाकर खानेसे वन्ध्या स्त्री गर्भवती होतीहै ॥ ७५–७६ ॥

वृद्धदारुकघृत ।

वृद्धदारुकमूलेनघृतंपक्कंपयोन्वितम् ॥
एतद्वृष्यतमंसर्पिःपुत्रकामःपिबेन्नरः ॥ ७७ ॥

विधारेकी जडके क्काथसे दूधयुक्त सिद्ध किया घृत, अत्यन्त वृष्य, और वन्ध्या स्त्रीको गर्भप्रदहै ॥ ७७ ॥

बृहत्कल्याणघृत ।

मुस्ताकुष्ठंहरिद्रेद्वेपिप्पलीकटुरोहिणी ॥
काकोलीक्षीरकाकोलीविडंगंत्रिफलावचा ॥ ७८ ॥

मेदारास्नाऽश्वगंधाचविशालाचप्रियंगुका ॥
द्वेशारिवेशताह्वाचदन्तीमधुकमुत्पलम् ॥ ७९ ॥
अजमोदामहामेदाचन्दनंरक्तचंदनम् ॥
जातीपुष्पंतुगाक्षीरीशर्कराहिंगुकट्फलम् ॥ ८० ॥
चतुर्गुणेनपयसाविपचेद्धोमयाग्निना ॥
नक्षत्रेपुष्यसंपन्नेभांडेताम्रमयेदृढे ॥ ८१ ॥
कलशेवापिकल्याणेकृतकौतुकमंगलः ॥
सर्पिरेतन्नरःपीत्वास्त्रीषुनित्यंवृषायते ॥ ८२ ॥
एतद्वंध्यापिबेन्नारीयाचकन्याप्रजायिनी ॥
याचैवास्थिरगर्भास्याद्याचसूतापुनःस्थिता ॥ ८३ ॥
अनायुषंवाजनयेद्याचजनयतेमृतम् ॥
सानारीजनयेत्पुत्रंवेदवेदांगपारगम् ॥ ८४ ॥
रूपलावण्यसंपन्नमजरंचशतायुषम् ॥
बृहत्कल्याणकंनामभारद्वाजेननिर्मितम् ॥
अनुक्तंलक्ष्मणामूलंक्षिपेच्चैवविशेषतः ॥ ८५ ॥

मोथा, कूठ, दोनों हलदी, पीपल, कुटकी, दोनों काकोली वा त्रिफला, वच, रास्ना, मेदा, असगंध, इन्द्रायण, फूल, प्रियंगु, दोनों शारिवा शतावर दंती, मुलैठी, कमल, अजमोद, महामेदा, दोनों चन्दन चमेलीके फूल, वंशलोचन, मिसरी, हींग, कायफल इन सबका कल्क बनाकर चौगुने दूधसे घृत सिद्ध करे। पुष्य नक्षत्रमें तामेके पात्रमें घृत सिद्ध करके मंगल मनाके इस घृतको सेवन करे। इसके सेवनसे पुरुष स्त्रियोंमें वृष समान रमण करे । इस घृतको स्त्री पीवे तो बन्ध्यादोष, कन्याप्रजात्व, जिसके गर्भ न रहताहो, या रहकर नष्ट हो जिसके मरी हुई सन्तानहो, जिसके अल्पायु पुत्रहो, यह सब दोष नष्ट होकर उस स्त्रीके वेद वेदांग जाननेवाला, रूप लावण्ययुक्त, अजर, शतायु पुत्र होता है। यह बृहत्कल्याण घृत भारद्वाजका निर्माण किया हुवा है इसमें लक्ष्मणाकी जड अवश्य डालनी चाहिये ॥७८--८५॥

अन्यगर्भप्रदयोग ।

बलामतिबलांचैवशर्करांमधुयष्टिकाम् ॥
क्षीरंमधुघृतंचैवपीतंगर्भप्रदंपरम् ॥ ८६ ॥

खिरैंटी, कंगही, मिसरी, मुलैठी, दूध, सहत, इनको मिलाकर पीनेसे स्त्री गर्भवती होती है ॥ ८६ ॥

अथवा ।

नागकेशरपूगास्थिचूर्णंगर्भप्रदंपरम् ॥ ८७ ॥

नागकेशर, सुपारी, हाथीदांतका बुरादा इस चूर्णके सेवनसे अवश्य गर्भ होता है ॥ ८७ ॥

क्राथेनहयगंधायाःसाधितंसघृतंपयः ॥
ऋतुस्नाताऽबलाऽपीत्वागर्भंधत्तेनसंशयः ॥ ८८ ॥

असगन्धके क्राथसे सिद्ध किया घृत युक्त दूध, ऋतु स्नाता स्त्री पीकर अवश्य गर्भ धारण करती है ॥ ८८ ॥

पिप्पलीशृंगवेरंचमरीचंकेसरंतथा ॥
घृतेनसहपातव्यंवंध्यागर्भप्रदंपरम् ॥ ८९ ॥

पीपल, अदरक, कालीमिर्च, और नागकेशर, इन सबका र्ण करके घृतके साथ पीनेसे बन्ध्या स्त्रीके गर्भ होता है ॥ ८९ ॥

पुष्योद्धृतंलक्ष्मणायामूलंपिष्टंचकन्यया ॥
ऋत्वंतेघृतदुग्धाभ्यांपीत्वाप्नोत्यबलासुतम् ॥९०॥

पुष्य नक्षत्रमें उखाडी हुई लक्ष्मणाकी जडको कन्यासे पिसवाकर घी और दूधसे पीवे तो अवश्य पुत्रहो ॥ ९० ॥

जीवकपुत्रकबीजंक्षीरेणापिबेत्सपत्रमूलंच ॥
दारकनष्टावनिताजनयतिदीर्घायुषंपुत्रम् ॥ ९१ ॥

जीयेपोतेके बीज पत्र, मल, इनको दूधके साथ रगडकर पीनेसे नष्ट सन्तती बन्ध्या दीर्घायु पुत्रको जनमती है ॥ ९१ ॥

क्षीरेणश्वेतबृहतीमूलंनासिकयापिबेत् ॥
दक्षिणयाऽऽत्मजार्थंवाकन्यार्थंवामयातथा ॥ ९२ ॥

सफेद कटेलीकी जडको दधमें पीसकर दहने नथनेसे पीनेसे पुत्र, बामे नथनेसे पीनेसे कन्या उत्पन्न होतीहै ॥ ९२ ॥

तिलतैलंकुडवमेकंवृषसलिलसंयुतंपक्कम् ॥
ऋतुकालांतेपीत्वागर्भंविदधातिवंध्यापि ॥ ९३ ॥

एक कडव परिमाण तिलके तेलको अडूसेके क्वाथसे सिद्ध करे और ऋतुस्नाता स्त्री पीवे तो अवश्य वंध्याभी गर्भ धारण करे ॥ ९३ ॥

अथवा ।

न्यग्रोधशुङ्गासनकंप्रवालचूर्णंचसवर्णवत्सायाः ॥
गोक्षीरंपरिपीतंपुत्रंप्रकरोतिपुष्यर्क्षे ॥ ९४ ॥

पुष्यनक्षत्रमें वडके अंकुर विजयसार मूंगेका चर्ण, एकवर्णके बछडेवाली गौके दूध साथ पीनेसे अवश्य पुत्र होताहै ॥ ९४ ॥

पुष्योद्धृतंलक्ष्मणायाश्चक्रांगायास्तुकन्यया ॥
पिष्टंमूलंहविर्दुग्धंपीतमृतौतुपुत्रदम् ॥ ९५ ॥

लक्ष्मणाकी जड और सुदर्शनकी जडको पुष्य नक्षत्रमें उखाडकर कन्यासे पिसवाकर ऋतुस्नाता स्त्री पीवे तो अवश्य पुत्रहो ॥ ९५ ॥

पुत्रसंजीविकामूलंविष्णुक्रांतांसलिंगिकाम् ।
पीत्वापुत्रमवाप्नोतिनकन्याजायतेस्फुटम् ॥ ९६ ॥

जीयेपोतेकी जड, विष्णुक्रांता, शिवलिंगी, इन तीनों औषधियोंको गायके दूधसे पीसकर ऋतुसे शुद्धहो स्त्री खावे तो अवश्य पुत्रहो कन्या न हो ॥ ९६ ॥

श्वेतकुलित्थसंभूतंमूलंनागबलोद्भवम् ॥
अपराजितामृतुस्नातागोदुग्धेनसमंपिबेत् ॥ ९७ ॥

सफेद कुलथीकी जड, गंगेरनकी जड, अपराजिताकी जड, इन सबको समान भाग लेकर गौके दधमें पीसके ऋतुस्नाता स्त्री पीवे तो गर्भधारण करे ९७ ॥

मूलंशिखायाःखलुलक्ष्मणायाऋतौनिपीयत्रिदिनंपयोभिः ॥
क्षीरान्नचर्य्यानियमेनभुंक्तेपुत्रंप्रसूतेऽवनिताचचित्रम् ॥ ९८ ॥

लक्ष्मणाकी जड पत्ते लेकर ऋतुमें शुद्ध होकर स्त्री गौके दूधमें पीवे तो अवश्य बुद्धिवान् पुत्रको उत्पन्न करे ॥ ९८ ॥

गर्भाधानक्रम ।

आर्तवदोषतःशुद्धामुक्तायोनिविकारतः ॥
पूर्वोक्तेनविधानेनपतिंप्राप्यवरांगना ॥ ९९ ॥
विधिवद्गर्भमाधायपतिधर्मपरायणा ॥
उत्तानदेहास्त्रीतिष्ठेद्रत्याश्रमंत्यजेत् ॥
एवंसासुतमाप्नोतिरूपायुर्बलशालिनम् ॥ १०० ॥

आर्तवदोष अर्थात् ऋतुकी खराबीसे शुद्ध होकर और योनिविकारसे छूटकर अर्थात् फलघृत आदि योनिविकार नाशक औषधियोंसे सब योनिविकार से मुक्त होकर पूर्वोक्त (स्त्रीचर्यामें जो पहले कह चुकेहैं) विधानसे पतिव्रता स्त्री अपने पतिसे विधिवत् (वाजीकरणसे पुष्टवीर्यवाले ऋतुगामी पतिसे)गर्भको धारण करके मैथुनके अन्तमें सीधी उत्तान होकर शयन करके रतिके श्रमको छोडे इस प्रकार करनेसे रूपवान् बलवान् पुत्रको उत्पन्न करतीहै९९॥१००॥

संजातगर्भके लक्षण ।

छर्दिरम्लेरुचिर्नित्यंष्ठीविकारोमराजिका ॥ १ ॥
अरुचिस्तनयोःकार्ष्ण्यंग्लानिराटोपवर्जितम् ॥
कुक्षेरक्ष्णोः पक्ष्मलत्वंगर्भिणीस्फुटलक्षणम् ॥ २ ॥

वमन होना, खट्टे पदार्थोंपर रुचि, थूकना, रोमोद्गम, भोजनमें अरुचि स्तनोंका मुख काला होना, ग्लानि, पेटमें गुडगुडाहट, कोख और आंखोंकी पलकें भारी होना, ये गर्भवतीस्त्रीके लक्षणहैं ॥ १ ॥ २ ॥

गर्भस्राव—गर्भपात—मृतवत्सा ।

स्रवद्गर्भापतद्गर्भामृतवत्साचयातथा ॥
तासांचिकित्सितंवक्ष्येगर्भव्यापच्चिकित्सके ॥ ३ ॥

उक्ताघृतादयोवैयेहितं तेषांहिसेवनम् ॥
योगद्वयंप्रसंगाच्च अधुनाप्यत्रलिख्यते ॥ ४ ॥

गर्भस्राव और गर्भपात और मृतवत्साकी चिकित्सा आगे गर्भव्यापत्ति चिकित्साके अध्यायमें लिखेंगे और जो फल घृत आदि घृत हम इसी अध्यायमें लिख चुकेहैं उनका सेवन परम हितकर और गर्भ दोष निवारकहै। फिरभी हम प्रसंगवश दो योग लिख देतेहैं ॥ ३॥४ ॥

प्राङ्मुखः कृत्तिकानक्षेवन्ध्याकार्कोटकीहरेत् ॥
तत्कन्दंपेषयेत्तोयेकर्षमात्रंसदापिबेत् ॥
ऋतुकालेतुसप्ताहंदीर्घजीवीसुतोभवेत् ॥ ५ ॥

कृत्तिका नक्षत्रमें पूर्वको मुख करके बांझककौडेकी जडको उखाड लावे फिर उसके कन्दको जलमें पीसकर ऋतु स्नानके दिनसे ७ दिन तक पीवे तो दीर्घायु पुत्र पैदा होताहै ॥ ५ ॥

अथवा

याबीजपूरद्रुममूलकंवाक्षीरेणसिद्धंहविषाविमिश्रम् ॥
ऋतौनिपीत्वासुपतिंप्रयातिदीर्घायुषंसातनयंप्रसूते ॥ ६ ॥

जो स्त्री बिजौरेनींबूकी जडको दूधमें पकाकर घी मिलाके ऋतुसे शुद्ध होकर भक्षण करके पतिके निकट जावे उस स्त्रीके दीर्घायु पुत्र उत्पन्न होताहै ॥ ६ ॥

उपसंहार ।

वंध्याचिकित्सिताध्यायंकथयित्वाविधानतः ॥
गर्भव्यापच्चिकित्सांवैवक्ष्येतद्धितकाम्यया ॥ ७ ॥

वंध्याचिकित्साका अध्याय विधानपूर्वक लिखचुके अब गर्भव्यापकचिकित्सा गर्भमें निर्विघ्नताके लिये अर्थात् बच्चा गर्भसे सुन्दररीतिसे सुसमय पैदाहो इसलिये गर्भव्यापच्चिकित्सा कहेंगे ॥ ७ ॥

इति श्रीशुभसंततियोगप्रकाशे वंध्याचिकित्सितं नाम सप्तमाध्यायः ॥ ७ ॥

अथातोगर्भव्यापच्चिकित्सिताऽध्यायंव्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

अब इसके अनंतर गर्भव्यापत्ति चिकित्साका अध्याय वर्णन कर्ते हैं॥ १॥

गर्भवतीके कृत्य ।

तदाप्रभृत्यैवव्यायामंव्यवायमतर्पणमतिकर्पणं
दिवास्वापंरात्रिजागरणंशोकंयानारोहणं
भयमुत्कटकासनंचैकांततःस्नेहादिक्रियां
शोणितमोक्षणंचाकालेवेगविधारणंनसेवेत ॥ २ ॥

जबसे गर्भ मालूमहो तभीसे व्यायाम, अतिपरिश्रम, मैथुन, दाहादिजनक पदार्थ, अतिकर्षण (तिजविरेचनादि) कृशकर्ता, आहार, विहार, दिनमें सोना, रात्रिको जागना, शोक, यान आरोहण, भय, जोरसे खांसना या उत्कट आसन, अकाल नियमसे तैलाभ्यंग अर्थात् आठ महीनेसे पहले तथा रक्तनिकलवाना वेगोंका रोकना इन सबको गर्भवती स्त्री त्यागदेवे ॥ २ ॥

गर्भ क्यावस्तु है ।

शुक्रशोणितंगर्भाशयस्थमात्मप्रकृतिविकारसंमूर्च्छितंगर्भइत्युच्यते ३॥

माताके गर्भाशयमें जो जीव और प्रकृति तथा पञ्चमहाभूत एकादश इंद्रिय, इनसे मिश्रित शुक्र और शोणितका घनीभूत मिलाहुवा जो आकारहै वह गर्भ कहाजाताहै ॥ ३ ॥

तञ्चचेतनावस्थितंवायुर्विभजति तेजएनंपाचयति आपःक्लेदयंति
पृथिवीसंहंतिआकाशंविवर्द्धयतिएवंविवर्द्धितःसयदाहस्तपादाजि-
ह्वाघ्राणकर्णानितंबादिभिरंगैरुपेतस्तदाशरीरमितिसंज्ञांलभते ॥४॥

उस चेतनायुक्त गर्भको वायु विभाग कर्ताहै अर्थात् दोष धात्वादिको जुदा २ यथावस्थित कर्ताहै । तेज अर्थात् अग्नितत्व पकाताहै । जल क्लेदन करताहै । पृथ्वीतत्त्व करडा मूर्तिमान् करदेताहै । आकाश उसको बढाताहै । जब इस प्रकारसे बनता और बढता हुवा गर्भ हाथ, पाँव, जिह्वा, नासिका, कर्ण, नितंब, आदि अंगोंसे उपयुक्त होताहै तब यह शरीर संज्ञाको प्राप्त होताहै ॥ ४ ॥

गर्भावतरणक्रम ।

प्रथमेमासिकललंजायते ॥ ५ ॥ द्वितीयेशीतोष्णानिलैरभिप्रप च्यमानानांमहाभूतानांसंघातोघनःसंजायतेयदिपिंडःपुमानस्त्री चेत्पेशीनपुंसकंचेदर्बुदमिति ॥ ६ ॥

गर्भका आकार पहले महीनेमें कलल द्रव रूप होता है । दूसरे महीने में शीत और उष्ण तथा वायुसे परिपाक हुए पृथिव्यादि महाभूतोंका संघात होकर पिंडासा होजाता है वह पिंडा यदि गोलहो तो, पुत्रका गर्भ जाने जो लम्बी पेशीसी हो तो कन्याका गर्भ जाने, यदि आधे कटे फलके समान हो तो नपुंसक गर्भ होता है ॥ ५ ॥ ६ ॥

तृतीयेहस्तपादशिरसांपञ्चपिण्डकानिर्वर्तते अंगप्रत्यंगविभागश्चसूक्ष्मोभवति ॥ ७ ॥

तीसरे महीनेमें हाथ, पांव, शिर, इन पांचोंके पांच शाखासी निकलने लगती हैं और थोडा थोडा अंग प्रत्यंगका विभाग प्रगट होने लगता है॥ ७॥

चतुर्थेसर्वांगप्रत्यंगविभागोहृदयप्रव्यक्तभावाच्चेतनधातुर भिव्यक्तोभवत्यतःनारींदौर्हृदिनीमाचक्षते ॥ ८ ॥

चौथे महीनेमें सम्पूर्ण अंगों और प्रत्यंगोंका विभाग होता है, गर्भमें हृदय-के प्रगट होनेसे चेतन धातु (जीव) प्रगट प्रतीत होने लगता है, इसलिये चेतन इंद्रियोंके अर्थ रुचि करताहै तभीसे चौथे महीनेसे एक गर्भस्थ बालक का हृदय और स्त्रीका हृदय दो होनेसे स्त्रीको दौहृदिनी कहा जाता है ॥ ८ ॥

दौहृदके न मिलनेसे हानि ।

दौर्हृदविमाननात्कुब्जंखंजंजडंवामनंविकृताक्षंनारीजनयति । तस्मात्सायद्यदिच्छेत्तत्तस्मैदापयेत् ॥ ९ ॥

दौहृद न मिलनेसे (दो हृदय वाली स्त्रीके वांछितको दौहृद कहते हैं) कुबडा खंज, पांगुला, बौना, मूर्ख, विकारयुक्तनेत्रोंवाला, पुत्र पैदा होता है इसलिये दौहृदा स्त्री जो जो इच्छा करे सो सो देना चाहिये ॥ ९ ॥

दौहृदके लाभ ।

लब्धदौहृदाहिवीर्यवन्तंचिरायुषंपुत्रंजनयति ॥ १० ॥

दौहद मिलनेसे पराक्रमवाला दीर्घायु पुत्र पैदा होता है ॥ १० ॥

इंद्रियार्थास्तुयान्यान्साभोक्तुमिच्छतिगर्भिणी ॥
गर्भबाधाभयात्तांस्तान्भिषगाहृत्यदापयेत् ॥ ११ ॥

जिन जिन इंद्रियोंके अर्थोंको गर्भिणी स्त्री भोगना चाहे गर्भके बाधा होनेके भयसे वैद्य उन उन सब भोगोंको दिलावे ॥ ११ ॥

राजसंदर्शनेयस्यादौहृदंजायतेस्त्रियाः ॥
अर्थवंतंमहाभागंकुमारंसाप्रसूयते ॥ १२ ॥

जिस गर्भवतीका मन राजाके देखनेको चाहे उस स्त्रीके भाग्यवान् धन वाला पुत्र होता है ॥ १२ ॥

आश्रमेसंयतात्मानंधर्मशीलंप्रसूयते ॥
दर्शनेव्यालजातीनांहिंसाशीलंप्रसूयते ॥ १३ ॥

जिस गर्भवती स्त्रीका मन महात्माओंके आश्रम और तीर्थादि देखना चाहे उसके धर्मात्मा पुत्र होताहै । जो स्त्रीका चित्त सर्पादि हिंसक जीवोंको देखनेको चाहे उसके हिंसक पुत्र होताहै ॥ १३ ॥

अतोनुक्तेषुयानारीसमभिध्यातिदौहृदम् ॥
शरीराचारशीलैस्सासमानंजनयिष्यति ॥ १४ ॥
कर्मणाचोदितंजंतोर्भवितव्यंपुनर्भवेत् ॥
यथातथादैवयोगाद्दौहृदंजनयेद्ध्रुवम् ॥ १५ ॥

इससे सिवाय जो यहां नहीं कहेहैं उन पर स्त्रीका दौहृद होनेसे उन्हींके शरीर आचार और स्वभावकी समान या जिस वस्तु फल आदिके ऊपर चित्त चले उसके अनुरूप गुण प्रकृतिका पुत्र होताहै ॥ १४ ॥ कर्मका प्रेरणा किया हुवा और होनहार जैसा होताहै दैवयोगसे वैसा वैसाही स्त्रीका मन चलताहै ॥ १५ ॥

पांचवेंमे ।

पंचमेमनःप्रतिबुद्धतरंभवतिषष्ठेबुद्धिः
सप्तमेसर्वांगप्रत्यंगविभागःप्रव्यक्ततरः ॥ १६ ॥

पांचवें महीनेमें मनसें अधिक चैतन्यता होजातीहै और छठेमें बुद्धि उत्पन्न होतीहै, सातवेंमें संपूर्ण अंग प्रत्यंग स्पष्ट रूपसे स्फुट होजातेहैं ॥ १६ ॥

अष्टमेऽस्थिरीभवत्योजस्तत्रजातश्चेन्नजीवेन्निरोजस्त्वान्नैर्ऋतभागत्वाच्च ततोबालंबलिमांसौदनमस्मैदापयेत्

नवमदशमैकादशद्वादशेनाजायते ऽन्यथाविकारोभवति ॥ १७ ॥

आठवेंमें ओज स्थिर नहींहोता, इसलिये आठवें महीनेका जन्माहुवा बालक अल्पायु होताहै नवमें दशमें ग्यारहवें बारहवें महीने तकभी बालक जन्मताहै इससे अन्यथा विकार होताहै ॥ १७ ॥

गर्भकी पुष्टी ।

मातुस्तुखलुरसवहायांनाड्यांगर्भनाभिनाडीप्रतिबद्धासास्यमा-
तुराहाररसवीर्यमभिवहतितेनोपस्नेहेनास्याभिवृद्धिर्भवति ॥ १८ ॥

माताके कियेहुवे भोजन आदिके रसके बहानेवाली नाडियोंमें बालककी नाभि (नाल) लगी हुई होतीहै, वह माताके किये आहारके रस वीर्यको प्राप्त करलेतीहै उसके सारभूत स्नेहसे गर्भस्थ बालककी वृद्धि होतीहै ॥ १८ ॥

असंजातांगप्रत्यंगविभागमानिषेकात्प्रभृतिसर्वशरीरावयवानुसा-
रिणीनांरसवहानांतिर्यग्गतानांधमनीनामुपस्नेहोजीवयति ॥ १९ ॥

जबतक गर्भके अंग प्रत्यंग नाभि नाडी आदि कुछ नहींहोते केवल पिंड रूपही गर्भ होताहै । तब अर्थात् स्थितिके समयसे लेकर गर्भवतीके सारे शरीरके अनुसरण करनेवाली रस बहानेवाली तीर्यग्गमन करनेवाली धमनियोंका उपस्नेह गर्भको जीवन (पोषणादि) करताहै ॥ १९ ॥

गर्भके अंगोंकी उत्पत्ति ।

सर्वांगप्रत्यंगानियुगपत्संभवंतिसूक्ष्मत्वान्नो-
पलभ्यंतेवंशांकुरवच्चूतफलवच्च ॥ २० ॥

बालकके गर्भमें सब अंग प्रत्यंग एककालहीमें पैदा होतेहैं । सूक्ष्म होनेके कारण जाने नहीं जासक्ते । जैसे बांसके अंकुर और छोटे आममें सब अवयव होतेहुवेभी प्रत्यक्ष दीखते नहीं फिर ठीक समयपर बाँसमें सबशाखा और आममें पकनेपर सूफ और गुठली आदि स्फुट दिखाई देते हैं ऐसेही गर्भमें एकही कालमें सब अंग होते हुवेभी समयपरही दिखाई देते हैं ॥ २० ॥

गर्भके पितृजअवयव ।

गर्भस्यकेशश्मश्रुलोमास्थिनखदन्ताशिरास्नायुधमनीरेतः प्रभृतीनिस्थिराणिपितृजानि ॥ २१ ॥

बाल, डाढी, मूंछ, रोम, अस्थि, नख दाँत शिरा, स्नायु, धमनी, वीर्य आदि स्थिर अवयव पितृज होतेहैं ॥ २१ ॥

मातृजअवयव ।

मांसशोणितमेदोमज्जाहृन्नाभियकृत्प्लीहान्त्रगुदप्रभृतीनिमृदूनि मातृजानि ॥ २२ ॥ उपचयादयःरसजानिसुखादयआत्मजानि ॥ २३ ॥

मांस, रुधिर, मेद, मज्जा, हृदय, नाभि, यकृत, प्लीहा; अंत्र, गुदा, आदि कोमल पदार्थ मातृजहैं ॥ २२ ॥ उपचयापचय बलवर्णादि रसजहैं सुख दुःख ज्ञानआदि आत्मजहैं ॥ २३ ॥

गर्भकी सौंदर्यासौंदर्यता ।

देवताब्राह्मणपराशौचाचारहितेरता ॥
महागुणान्प्रसूयन्तेविपरीतांस्तुनिर्गुणान् ॥ २४ ॥

जो गर्भवती स्त्री गर्भके समय देवता, ब्राह्मण, आदिकोंका सेवन करे शौच और आचार और अच्छेकाम परोपकारादिकरनेमें तत्पर रहे तो महागुणवाले धर्मात्मापुत्रको उत्पन्न करे । पापकर्मोंमें रत हो तो पापी कुकर्मी कंगाल पुत्रको पैदा करे ॥ २४ ॥

गर्भस्राव और पातके कारण ।

भयाभिघातात्तीक्ष्णोष्णपानाशननिषेवणात ॥
गर्भःपततिरक्तस्यसशूलंदर्शनंभवेत ॥ २५ ॥

भयसे चोट आदिके लगनेसे, तीक्ष्ण और गर्म वस्तुके खानेपीने (सेवन करने)से, गर्भका स्राव या पात होताहै उस समय महान्‌शूल होता है और रक्त गिरने लगता है ॥ २५ ॥

गर्भस्राव और पातकी अवधि ।

आचतुर्थात्ततोमासात्प्रस्रवेद्गर्भविद्रवः ॥
ततःस्थिरशरीरस्यपातःपंचमषष्ठयोः ॥ २६ ॥

चौथे महीने पर्यन्त जो गर्भका रुधिररूपसे स्राव होता है उसको गर्भस्राव कहते हैं। पांचवें अथवा छठे महीनेमें स्थिरशरीर होकर जो गर्भ गिरता है उसको गर्भपात कहते हैं ॥ २६ ॥

अकालमें गर्भपात ।

गर्भोऽभिघातविषमाशनपीडनाद्यैः
पक्वंद्रुमादिवफलंपततिक्षणेन ॥ २७ ॥

जैसे वृक्षपर पक्व फल हिलानेसे या चोट लगनेसे झट नीचे गिरजाताहै अथवा अभिघातसे कच्चा भी गिरजाता है उसी तरहसे अभिघात तथा विषम आसनसे या विषम खानेसे और दबानेसे अकालमेंही गर्भ गिर जाताहै॥ २७॥

गर्भस्रावकी चिकित्सा ।

गुर्विण्यागर्भतोरक्तंस्रवेद्यदिमुहुर्मुहुः ॥
तन्निरोधायसाधुग्धमुत्पलादिसृतांपिबेत् ॥
सेकावगाहनालेपाःशस्यंतेतत्रशीतलाः ॥ २८ ॥

गर्भवतीके गर्भसे यदि बार बार रक्तस्राव हो तो उसके रोकनेके लिये उत्पलादि गणसे सिद्ध किया क्राथ पीवे और शीतल पदार्थोंका सेचन अवगाहन लेपन भी श्रेष्ठ है ॥ २८ ॥

गर्भस्रावउपद्रव ।

प्रस्रंसमानेगर्भेस्याद्दाहःशूलंचपार्श्वयोः ॥
पृष्ठरुक्प्रदरानाहौमूत्ररोधश्चजायते ॥ २९ ॥

जब गर्भगिरनेको होता है तो दाह, दोनों पसवाडोंमें शूल, पीठमें पीडा, प्रदर, अफारा, मूत्रका रुकना; यह उपद्रव होते हैं ॥ २९ ॥

उत्पलादिगण ।

उत्पलरक्तोत्पलकुमुदसौगन्धिककुवलयपुंडरीकाणि
मधुकंचेति ॥ ३० ॥

नीलाकमल, लालकमल, कमोदिनी, सौगन्धी कमल, आसमानी रंगका कमल, श्वेतकमल, मुलेठी इन सात औषधियोंको उत्पलादि गण कहतेहैं ३० ॥

गर्भके स्थानांतरमें हटजानेके उपद्रव ।

स्थानात्स्थानांतरंतस्मिन्प्रयात्यपिचजायते ॥
आमपक्वाशयादौतुक्षोभःपूर्वेऽप्युपद्रवाः ॥ ३१ ॥

जब गर्भ अपने स्थानसे दूसरे स्थानमें हटजाताहै तब आमाशय और पक्वाशय आदिकोंमें क्षोभहो. और जो गर्भ स्रावके उपद्रवोंमें पसवाडेकी पीडा आदि कहीहै वह हो ॥ ३१ ॥

उसका यत्न ।

स्निग्धशीतक्रियास्तेषुदाहादिषुसमाचरेत् ॥ ३२ ॥
कुशकाशोरुबूकानांमूलैर्गोक्षुरकस्यच ॥
शृतंदुग्धंसितायुक्तंगर्भिण्याःशूलहृत्परम् ॥ ३३ ॥

गर्भपात और स्थानांतरके रुक जानेमें जो दाहादि उपद्रव होतेहैं उनमें स्निग्ध और शीतल क्रियाको करे ॥ ३२ ॥ अथवा कुशा, कांश, अरड, गोखरू इनकी जडोंसे सिद्ध कियाहुवा दूध ठंढा करके मिसरी मिलाके पिलावे ॥ ३३ ॥

श्वदंष्ट्रामधुकंक्षुद्राम्लानैःसिद्धंपयःपिबेत् ॥
शर्करामधुसंयुक्तंगर्भिणीवेदनापहम् ॥ ३४ ॥

गोखरू, मुलेठी, कटेरी, बाणपुष्प इनसे सिद्ध किये दूधमें मिसरी और सहत मिलाकर पीनेसे गर्भवतीके गर्भकी पीडा दूर होती है ॥ ३४ ॥

मासानुमासिक यत्न ।

मधुकंशाकबीजंतुपयस्यासुरदारुच ॥
अश्मंतककृष्णतिलास्ताम्रवल्लीशतावरी ॥ ३५ ॥

पहले महीनेमें यदि गर्भस्राव हो या गर्भशूल होय तो मुलेठी, शाक बीज (सांगौनके बीज) क्षीरकाकोली, देवदारु इनके कल्कसे सिद्ध किये दूधको शीतल करके पीवे । दूसरे महीनेमें अश्मंतक (अम्ललोन नामसे प्रसिद्धहै) कालेतिल, ताम्रवल्ली, (रामकांता या मँजीठ) शतावरी इनके कल्कसे सिद्ध किया दूध शीतल करके देवे ॥ ३५ ॥

वृक्षादनीपयस्याचलताचोत्पलसारिवा ॥
अनंतासारिवारास्नापद्मामधुकमेवच ॥ ३६ ॥
बृहत्योकाश्मरीचापिक्षीरीशुंगास्त्वचोबिसम् ॥
पृष्ठपर्णीबलाशिग्रुश्वदंष्ट्रामधुयष्टिका ॥
शृंगाटकंबिसंद्राक्षाकसेरुमधुकंसिता ॥ ३७ ॥

तीसरे महीनेमें—बांदा, क्षीरकाकोली, लताप्रियंगु, अनंतमूल, कमल, सारिवा इनको देवे । चौथेमहीनेमें अनंतमूल,सारिवा, रास्ना, ब्रह्मदंडी,मुलेठी इन्हको देवे। पांचवेंमहीनेमें दोनोकटेरी, कंभारिके फल बरोटेकीसुंग(कलि) और छाल, कमलकी जड (भिस) इन्हको देवे । छठेमहीनेमें पृष्ठपर्णी, खरटी, सहजना, गोखरु, मुलठी, इन्हको देवे । सातवें महीनेमें सिंवाडे,भिस, मुनका कसेरु, मुलठी, मिसरी इनको देवे ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

कपित्थबृहतीबिल्वपटोलेक्षुनिदिग्धिका ॥
मूलानिक्षीरसिद्धानिपाययेद्भिषगष्टमे ॥ ३८ ॥
नवमेमधुकाऽनंतापयस्यासारिवापिबेत् ॥
क्षीरंशुंठीपयस्याभ्यांसिद्धंस्याद्दशमेहितम् ॥ ३९ ॥
क्षीरिकामुत्पलंदुग्धंसमंगामूलकंशिवाम् ॥
पिबेदेकादशेमासिगर्भिणीशूलशांतये ॥
एवमाप्यायतेगर्भस्तीव्रारुक्चोपशाम्यति ॥ ४० ॥

कैथ, बडीकटेरी, बिल, पटोल, ईख, छोटीकटेली इनकी जडको रगडकर चूर्ण करे । इस चूर्णसे सिद्धकिया दूध आठवेंमहीनेकी वेदना या स्रावमें देवे ।

नवमें महीनेमें मुलेठी अनंतमूल क्षीरकाकोली सारिवा इनसे सिद्धकिया दूध देवे । दशवें महीनेमें सोंठ क्षीरकाकोली इन दोनोंसे सिद्ध किया दूध देवे । ग्यारहवें महीनेमें, क्षीरकाकोली, कमलगट्टा, दूध, लाजवंतीकी जड, आमले इनको औटाके दूधसे ठंडा करके पीवे। इसप्रकार करनेसे गर्भ पुष्ट हो और तीव्रवेदना शांतहो ॥ ३८—४० ॥

वक्तव्य ।

सातमहीनेतक जो औषधि हैं वह एक तोलाकी मात्रा लेकर शीतल जलसे गुडके चार तोले दूधमें मिलाके पीवे। आठवेंसे २ तोला दवा२० तोले दूध २० तोले पानी पकाकर दूध रहनेपर ठंडा करके पिलावे ॥

गर्भिणीकी अन्य चिकित्सा ।

कशेरुशृंगाटकजीवनीयैःपद्मोत्पलैरंडशतावरीभिः ॥
सिद्धंपयःशर्करयाविमिश्रंसंस्थापयेद्गर्भमुदीर्णशूलम् ॥ ४१ ॥

कसेरू, सिंघाडे, जीवनीय[1], दशककी औषधी, कमल, कमोदनी, एरंड, शतावर इनको तीन २ मासे लेकर एक पाव दूधमें एकपाव पानी मिलाके पकावे । जब पानी जलकर दूध रहे तो ठंडा करके छानकर खांड मिलाकर पीनेसे गर्भ स्थित होताहै और शूल नष्ट होताहै ॥ ४१ ॥

कशेरुशृंगाटकपद्मकोत्पलंसमुद्गपर्णीमधुकंसशर्करम् ॥
सशूलगर्भस्रुतिपीडितांगनापयोविमिश्रंपयसान्नभुक्पिबेत् ॥ ४२ ॥

कसेरू, सिंघाडे, पद्माख, कमल, मुद्गपर्णी, मुलेठी इन सबका चूर्णकर बराबरकी मिसरी मिलाके १ तोला खाकर ऊपरसे ठंडा दूध पीवे और दूध चावल भोजन करे तो गर्भशूल, गर्भस्राव, आदि विकार दूर हों ॥ ४२ ॥

"व्यवस्थितेचगर्भेगव्येनोदुंबरशलाटुसिद्धेनपयसाभोजयेत् । पतितेतीक्ष्णंमद्यंपेयंतस्योपद्रवशांत्यै । त्यागोपवशाद्यानपिबाति मद्यंयातुसाचकोलसाधितांपेयामेवाश्नातु । अतीतस्नेहलवण-

[1] जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मापपर्णी, मुद्गपर्णी, जीवंती, मुलेठी ये १० जीवनीय औषधी हैं ।

वर्ज्याभिर्यवागूभिरुद्दालकादीनांपाचोपसंस्कृताभिरुपक्रमेत ।
यावंतोमासागर्भस्यतावंत्यहानि ॥"

गर्भके चलायमान होनेपर गायके दूधमें कच्चे गूलरोंको पकाकर उस दूधको पीवे। यदि गर्भपात होगया होतो उसके उपद्रवोंकी शांतिके लिये तीक्ष्ण मद्य पिलावे। जो जाति मद्य नहीं पीती और मद्यको जिन स्त्रियोंने त्याज्य माना है वह बेरेसे सिद्ध कीहुई अथवा पंचकोल (पीपल पीपलामूल, चव्य, चित्रक सोंठ) से सिद्धकी पेया पिलावें। गर्भपतित होनेके पीछे घी, चिकनाई, नमक रहित यवागू पीवे या कुद्दालक (कोदों) आदिसे पकाकर जितने महीनेका गर्भहो उतने दिनतक पीवे ॥

मूढ गर्भ ।

मूढःकरोतिपवनःखलुमूढगर्भंशूलंचयोनिजठरादिषुमूत्रसंगम् ॥ ४३ ॥

अपने कारणोंसे कुपित हुई वायु गर्भाशयमें प्राप्त होकर गर्भकी गतिको रोक देतीहै उसको मूढगर्भ कहतेहैं। उससे योनि और पेट आदिमें शूल होता है तथा मूत्रभी रुक जाताहै ॥ ४३ ॥

मूढगर्भकी गति ।

भुग्नोऽनिलेनविगुणेनततःसगर्भःसंख्यामतीत्यबहुधासमुपैतियोनिम्॥
द्वारंनिरुध्यशिरसाजठरादिकेनकश्चिच्छरीरपरिवर्तनकुब्जदेहः ॥ ४४ ॥

दुष्ट हुए वायुसे गर्भ टेढा होकर अनेक प्रकारसे योनिके मुखपर आकर अडजाता है, कोई गर्भ शिरसे कोई पेट बांह आदि अनेक अंगसे कोई घूम कर ठेढा होकर कुबडा या गोल होकर इस प्रकारसे योनिद्वारमें अडता है कि, उससे निकलना मुश्किल होता है और गर्भवतीको प्राणतकका कष्ट होता है ॥ ४४ ॥

असाध्यमूढगर्भ और गर्भिणीके लक्षण ।

अपविद्धाशिरायातुशीतांगीनिरपत्रपा ॥
नीलोद्भूतशिराहंतिसागर्भंचसतांतथा ॥ ४५ ॥

---

१ उन्नाभ ।

जिस मूढ गर्भ स्त्रीका शिर नीचेको नमगयाहो शरीर शीतल होगयाहो लज्जा नष्ट होगईहो, और कोखमें नीले रंगकी नसें दीखतीहों, तो वह स्त्री गर्भको नष्ट करे और गर्भ अपनी माताको नष्ट करे ॥ ४५ ॥

योनिसंवरणके लक्षण ।

वातलान्यन्नपानानिग्राम्यधर्मप्रजागरम् ॥
अत्यर्थसेवमानायांगर्भिण्यांयोनिमार्गगः ॥ ४६ ॥
मातरिश्वाप्रकुपितोयोनिद्वारस्यसंवृतिम् ॥
कुरुतेरुद्धमार्गत्वात्पुनरंतर्गतोनिलः ॥ ४७ ॥
निरुणद्ध्याशनद्वारंपीडयन्गर्भसंस्थितिम् ॥
निरुद्धवचनोच्छ्वासोगर्भश्चाशुविपद्यते ॥ ४८ ॥
उच्छ्वासरुद्धहृदयान्नाशयत्यथगर्भिणिम् ॥
योनिसंवरणंनामव्याधिमेतत्प्रचक्षते ॥ ४९ ॥

गर्भवतीको वातकारी अन्न, जल, मैथुन, रात्रिमें जागना, इनके अत्यन्त सेवनसे वायु कुपित होकर योनिके मार्गको रोक देता है । फिर भीतरकी रुकी हुई पवन भीतरको प्रवेश कर गर्भाशयको रोककर गर्भकी स्थितिको पीडा देती है उससे गर्भवतीका बोलना बन्दहो ऊर्ध्व श्वासहो जिससे गर्भनष्ट होजाय और हृदयकी गति रुककर गर्भिणी नष्टहो । इस व्याधीको योनिसंवरण कहते हैं ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

गर्भमरनेके कारण ।

मानसागन्तुभिर्मातुरुपतापैःप्रपीडितः ॥
गर्भोव्यापद्यतेकुक्षौव्याधिभिश्चप्रपीडितः ॥ ५० ॥

माताके मानसिक और आगंतुक (प्रहार आदि) दुःखोंसे पीडित होनेसे तथा माताके रोगोंसे गर्भ पेटमेंही मरजाता है ॥ ५० ॥

मृतगर्भके लक्षण ।

गर्भास्पंदनभावीनांप्रणाशःश्यावपांडुता ॥
भवेदुच्छ्वासपूतित्वंशूनतांतर्मतेशिशौ ॥ ५१ ॥

गर्भ फड़के नहीं प्रसवकी पीड़ा नहो, शरीरका रंग काला पीलासा हो जाय, श्वासमें दुर्गंध आवे, पेटमें सूजनहो, यह मृतगर्भके लक्षणहैं ॥ ५१ ॥

अन्य असाध्यलक्षण ।

योनिसंवरणंसंगःकुक्षौमारुतएवच ॥
हन्युस्त्रियंमूढगर्भोयथोक्ताश्चाप्युपद्रवाः ॥ ५२ ॥

जिसके योनिसंवरणहोय, योनि सकुचजाय, गर्भ योनिद्वारपर अडजाय, वायु कोखमें भरजावे, वातविकार, श्वास आदिहो, ऐसा मूढगर्भ गर्भिणीको नष्ट कर्ताहै ॥ ५२ ॥

मूढगर्भम चिकित्सा ।

गर्भस्यगतयश्चित्राजायन्तेऽनिलकोपतः ॥
तत्रानल्पमतिर्वैद्योवर्ततेमतिपूर्वकम् ॥५३॥

वातके प्रकोपसे गर्भकी अनेकप्रकारकी गति होतीहै सो इसमें अत्यंतबुद्धिमान् वैद्य (या लायक सर्जन) अत्यन्तबुद्धिसे काम किया करे ॥ ५३॥

मृतंगर्भंभिषक्प्राज्ञश्छित्वाकर्षेत्प्रयत्नतः ॥
धान्वंतरिमतात्प्राज्ञःसाध्यज्ञातश्चशल्यवित् ॥ ५४॥

मरेहुवे गर्भको अच्छीतरह जाननेवाला और साध्य समझकर धन्वंतरिके मतसे यत्नपूर्वक काटकर निकाले ॥ ५४ ॥

अभिघातान्मृतायास्तुगर्भःप्रस्पंदतेयदि ॥
जन्मकालेततःशीघ्रंपाटयित्वोद्धरेच्छिशुम् ॥ ५५ ॥

जो बालकके जन्मकाल अर्थात् आठवें नवमें दशमें आदिमहीनेमें गर्भिणी स्त्री चोट आदि किसीकारणसे मरगईहो और उसके पेटमें गर्भ फड़कता हो तो उसी समय स्त्रीके पेटको चीरकर गर्भ निकालले ॥ ५५ ॥

अथवा

याभिःसंकटकालेपिबह्वयोनार्यःप्रसाविताः ॥
सम्यक्लब्धयशस्तास्तुनार्यःकुर्युरिमांक्रियाम ॥ ५६॥

जिन लायक (जिसनें यह काम सीखा और अनेक समय कियाहो) दा इयोंने अनेक स्त्रियोंका प्रसव करायाहो अनेक संकटके समय यह काम कियाहो जिनका सब जगे यश फैलाहुवाहो वह दाइयां इस क्रियाको करें ५६

हस्तेनसर्पिषाक्तेनयोनेरंतर्गतेनसा ॥
गर्भेजीवतिमूढेतुगर्भंयत्नेननिर्हरेत् ॥ ५७ ॥

जिस स्त्रीका मूढगर्भ जीताहो उसको सावधानीकेसाथ दोनों हाथोंमें घी लगाके सहजसे योनिमें प्रवेश करके धीरेसे बालकको सीधा करके निकाल लेवे ॥ ५७ ॥

मृतेतुगर्भेगर्भिण्यायोनौशस्त्रंप्रवेशयेत् ॥
शस्त्रशास्त्रार्थविदुषीलघुहस्ताभयोज्झिता ॥ ५८ ॥
सचेतनंतुशस्त्रेणनकथंचनदारयेत् ॥
सदीर्यमाणोजननीमात्मानंचापिमारयेत् ॥ ५९ ॥
नोपेक्षेतमृतंगर्भंमुहूर्तमपिपण्डितः ॥
तदाशुजननींहंतिप्रभूतान्नंयथापशुम् ॥ ६० ॥

यदि गर्भ पेटमें मरगयाहो तो जो शस्त्रविधामें कुशल और शास्त्रमें विद्वान् जिसका हाथ हलका हो सावधानीसे विनाडरे (जिसका डरकर हाथ न कांपे अर्थात् अनजान नहो) चतुराईके साथ मरेहुवे गर्भको युक्तिसे गर्भमेंही काटकर निकालदेवे ॥५८॥ जो अज्ञानतासे जीताहुवा बालक शस्त्रसे गर्भमें कटजावे तो वह गर्भमें कटाहुवा बालक आप तो मरताहीहै, परंतु अपनी माताकोभी नष्टकरदेताहै इसलिये जीतेको कभी शस्त्र न लगावे। जीतेहुवेको भूलकरभी गर्भमें न काटे ॥ ५९ ॥ यदि बालक गर्भमें मरगयाहो तो उसको गर्भमें क्षणमात्रभी न रहने देवे । क्योंकि मराहुवा बालक अपनी माताको तत्काल मारदेताहै जैसे बहुतसा अन्न पशुको मारदेताहै ॥ ६० ॥

यद्यदंगंहिगर्भस्ययोनौशक्तंतुतद्भिषक् ॥
सम्यग्विनिर्हरेच्छित्वारक्षेन्नारींप्रयत्नतः ॥ ६१ ॥

एवंनिर्हृतशल्यांतांसिंचेदुष्णेनवारिणा ॥
ततोऽभ्यक्तशरीरायायोनौस्नेहंविधारयेत् ॥
एवंमृद्वीभवेद्योनिस्तच्छूलंचोपशाम्यति ॥ ६२ ॥

स्त्रीकी योनिमें मूढगर्भका जो जो अंग अटकरहाहो उसको कुशलवैद्य (सर्जन) काटके निकालले और उस गर्भवतीकी यत्नपूर्वक रक्षा करे।इसप्रकार जब मरे बालकके सब अंग निकल आवें तब उस स्त्रीको गर्मजलसे सेचन करे। फिर देहमें योग्य तेलकी मालिश कर योनिमें स्नेह अर्थात् योग्यतैल का फोहा रक्खे तो योनि नरम हो और पीडा शांतहो ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

आवश्यक आज्ञा।

नमयालिखिताचात्रशस्त्रकर्मक्रियाशुभा ॥
प्रसंगाल्लिखितंयच्चकर्तव्यंनाल्पबुद्धिभिः ॥ ६३ ॥
योऽज्ञानतःक्रियामेतांकरोतित्वल्पकर्मवित् ॥
सोनिंदांप्राप्यदुष्टात्मादंड्यःस्यादुभयलोकतः ॥ ६४ ॥

मैंने यहाँपर शस्त्रक्रिया जो शुभशल्य तंत्रहै नहीं लिखा । सिर्फ इसीको देखकर कोई अज्ञ इस कर्मका साहस न करे । क्योंकि पूरे शल्यके अंगोंको विना, पढे, जाने, सीखे यह काम नहीं आता। इसमें शस्त्रक्रियाके जाननेवालेको इशारा मात्र है और कुछ क्रम और विधान नहीं लिखा और यह जो कुछ लिखाहै यहभी प्रसंगवश कुछ थोडासा इशारा लिखाहै । इसको अज्ञानी और पूरीविद्या न जाननेवाला न करे ॥ ६३ ॥ जो अज्ञानतासे इस क्रियाको करताहै और शल्य शालाक्य चिकित्सामें निपुण नहीं है वोह मूर्ख निंदाको प्राप्त होकर इस लोकमें राजासे परलोकमें परमात्मासे दंडको प्राप्त होताहै ॥ ६४ ॥

सच्चाशोक।

आयुर्वेदकशास्त्रेषुलिखितायाक्रियाशुभा ॥
शल्यज्ञानंचशालाक्यंचिकित्साअष्टधाथत्रा ॥ ६५ ॥

---

१ बलातैल।

यापुराभारतेवर्षेक्रियाआशुफलप्रदा ॥
हाद्यभूसुग्विमुखत्वाल्लोपायसमुपस्थिता ॥ ६६ ॥
किंकुर्मःकस्यवाब्रूमोवाताशोकप्रकाशिनी ॥
देवैःसंमानिताविद्यानश्यतेद्यनिराश्रया ॥ ६७ ॥

आयुर्वेद शास्त्रोंमें जो शुभविद्या लिखीहुई है और शल्यचिकित्सा तथा शालाक्यचिकित्सा अथवा आठों किस्मकी चिकित्सा जो पहले भारतवर्षमें मानीहुईथी जिसकी क्रिया शीघ्रफलदायक थी । हा दुःखकी बातहै आज वह राजाओंके विमुखहोनेसे लोपहोनेकेलिये तैयारहै । क्या करें किससे अपने हृदयके शोकप्रकाश करनेवाली बात सुनावें । जिस वैद्यक विद्याकी देवताभी बडी श्रद्धासे प्रशंसा करतेथे।आज वह बिना आश्रयसे नष्टहुईजातीहै ६५–६७॥

गर्भिणीके ज्वरादिकोंकी चिकित्सा ।

मधूकचंदनोशीरशारिवापद्मयष्टिकैः ॥
शर्करामधुसंयुक्तःकषायोगर्भिणीज्वरे ॥ ६८ ॥

मुलेठी, चंदन, खस, शारिवा, पद्माख इनके क्वाथमें मिसरी और सहद मिलाके पीनेसे गार्भिणीका ज्वर दूर होताहै ॥ ६८ ॥

चंदनंशर्करालोध्रंमृद्वीकाशर्करान्वितम् ॥
क्वाथंकृत्वाप्रदातव्यंगर्भिणीज्वरशांतये ॥ ६९ ॥

चन्दन, मिसरी, लोध, दाख इनका क्वाथ मिसरी मिलाकर पीनेसे गर्भवतीका ज्वर शांत होताहै ॥ ६९ ॥

पिबेद्विश्वामजाक्षीरेनाशयेद्विषमज्वरम् ॥ ७० ॥

सोंठको बकरीके दूधमें पकाकर पीनेसे विषमज्वर नष्ट हो ॥ ७० ॥

आम्रजंबूत्वचंक्वाथ्यलेहयेल्लाजसक्तुभिः ॥
अनेनलीढमात्रेणगर्भिणीग्रहणींजयेत् ॥ ७१ ॥

आम और जामुनकी छाल का क्वाथ बनाकर उसमें धानोंकी खीलोंके सत्तू मिलाकर चाटनेसे गार्भिणीका संग्रहणीरोग नष्ट होताहै ॥ ७१ ॥

ह्रीबेराऽरलुरक्तचन्दनबलाधान्याकवत्सादनी
मुस्तोशीरयवासपर्पटविषाक्वाथं पिबेद्गर्भिणी ॥
नानावर्णरुजातिसाररुगदेरक्तस्रुतौ वा ज्वरे
योगोऽयं मुनिभिः पुरा निगदितः सूत्यामयेसत्तमः ॥ ७२ ॥

सुगन्धबाला, अरलु, लालचन्दन, खरेंटी, धनियां, गिलोय, मोथा, खस, जवासा, पापडा, अतीस इनका क्वाथ गर्भिणी स्त्री पान करे तो अनेक प्रकारके अतिसार, रक्तस्राव, ज्वर यह सब दूर होतेहैं। यह योग पूर्वकालमें सूतिका रोगके दूर करनेको मुनियोंने कहाहै ॥ ७२ ॥

वातशुष्कगर्भकी चिकित्सा।

गर्भो वातेन संशुष्को नोदरं पूरयेद्यदि ॥
सा बृंहणीयैः संसिद्धं दुग्धमाज्ययुतं पिबेत् ॥ ७३ ॥

यदि गर्भवतीका गर्भ वादीसे सूखकर उदरकी पूर्ति न हो तो बृंहणीय (पुष्टकारी) औषधोंसे सिद्ध किया दूध घृत मिलाके पीवे ॥ ७३ ॥

नागोदरके लक्षण।

यस्याः कुक्षौ भवेद्ग्लानिः पुनराध्मानमेव च ॥
गर्भिण्याहश्यते नार्यास्तस्या नागोदरं विदुः ॥ ७४ ॥
व्यवायस्वेदवर्जिन्यास्तस्याः स्याद्दोहदं हितम् ॥
पश्चाच्च समये प्राप्ते हितं वै धान्यकुट्टनम् ॥ ७५ ॥

जिसकी कोखमें ग्लानि होकर अफारा हो और गर्भिणीसी प्रतीत होती है, कारण इसका वायु शुक्र आर्तवको बिगाडके आफारा करता है और लोग उसको गर्भवती कहेहैं, इसको नागोदर कहतेहैं। इसमें मैथुन और स्वेदन करनेदे और जिस चीजपर इच्छाहो सो देवे, पुष्ट और स्निग्ध पदार्थ देवे फिर धान कुटावे ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

प्रसवमें विलंबकी चिकित्सा।

परूषकशिफालेपः स्थिरामूलकृतोऽपि वा ॥
नाभिबस्तिभगे लेपः सुखं नारी प्रसूयते ॥ ७६ ॥

फालसेकी जड अथवा शालपर्णीकी जडको रगडकर नाभि बस्ती भग पर लेप करनेसे सुखपूर्वक प्रसवहो ॥ ७६ ॥

तुषाम्बुपरिपिष्टेनकंदेनपरिलेपयेत् ॥
लांगल्याश्चरणौसूतेक्षिप्रमापन्नगार्भिणी ॥ ७७ ॥

अग्निशिखाके कन्दको कांजीमें पीसकर गर्भिणीके पांवोंपर लेप करे तो सुखपूर्वक प्रसव होवे ॥ ७६ ॥

पाठामूलन्तुतद्वत्स्यादाटरूपकमूलकम् ॥
लेपनाद्धारणाद्वापिसुखंप्रसवकारकम् ॥ ७८ ॥
मूलंहिशालपर्ण्यास्तुपिष्टंवातण्डुलांबुना ॥
नाभिबस्तिभगालेपात्सुखंनारीप्रसूयते ॥ ७९ ॥
मातुलुंगस्यमूलानिमधूकंमधुसंयुतम् ॥
घृतेनसहपातव्यंसुखंनारीप्रसूयते ॥ ८० ॥

पाठ अथवा अडूसेकी जडको पीसकर योनिपर लेप या योनिमें धारण करनेसे सुखपूर्वक प्रसव हो ॥ ७८ ॥ शालपर्णीकी जडको चावलोंके धोवनमें पीसकर नाभि बस्ती भगपर लेप करनेसे सुखपूर्वक प्रसवहो ॥७९॥ बिजौरेकी जड और मुलेठीको पीसकर सहत और घी मिलाकर खानेसे सुखपूर्वक प्रसवहो ॥ ८० ॥

प्रसूताकी योनिके घावोंकी चिकित्सा ।

तुंबिपत्रंतथालोध्रंसमभागंसुपेपयेत् ॥
तेनलेपोभगेकार्यःशीघ्रंस्याद्योनिरक्षता ॥ ८१

तूँबेके पत्र और लोध दोनोंको जलमें पीसकर भगपर लेप करनेसे योनिके चीरे (घाव) अच्छे हों ॥ ८१ ॥

आंवल (जेर) गिरनेके यत्न ।

कटुतुंब्यहिनिर्मोककृतवेधनसर्षपैः ॥
कटुतैलान्वितैर्योनेर्धूमःपातयतेपराम् ॥ ८२ ॥

भूर्जगुग्गुलधूपेनश्रोण्याश्चास्याःप्रधूपनम् ॥
अपरापातनंशस्तंसद्यःशूलनिवारणम् ॥
लेपनेपाणिपादौवामूलंलांगलिकंहितम् ॥ ८३ ॥

कडुवी तुंबी, सांपकी केंचुली, कडवी तोरी, सरसों इनको कडवेतेलमें पीसके इनकी योनिमें धूमि देनेसे आंवल गिरजाती है ॥ ८२ ॥ भोजपत्र और गूगल इन दोनोंको पीसकर प्रसूताकी कमरको धूनी देनेसे आंवल गिर जाती है और दर्द नष्ट होता है। अथवा लांगलीको रगडकर हाथ पावोंमें लेप करनेसे शीघ्र आंवल (जेर) गिरजाती है ॥ ८३ ॥

अथवाऽपततिपरांपातयेत्पूर्ववद्भिषक् ॥
हस्तेनापहरेद्वापिपार्श्वाभ्यांपरिपीडयन् ॥ ८४ ॥

जो जेर न गिरे तो पहले कही हुई विधिसे गिरावे, चतुराईसे दोनों हाथों को चिकनाई लगाकर दोनों पसवाडोंको दबाकर आंवको हाथसे निकाल देवे। बुद्धिवान् दाई इस क्रियाको करे फिर आंवल गिरनेके बाद गर्म जलसे सेचनकर और योनिमें स्नेहका फंभा रक्खे तो पीडा शान्तहो ॥ ८४ ॥

मक्कल्लनिदान ।

वायुःप्रकुपितःकुर्य्यात्संरुध्यरुधिरंस्रुतम् ॥
सूतायाहृच्छिरोबस्तिशूलंमक्कल्लसंज्ञकम् ॥ ८५ ॥

प्रसवके समय स्त्रीकी योनिमें पवनके लगनेसे वायु कुपितहोकर गिरतेहुवे रुधिरको रोकदेतीहै और उसके हृदय, शिर, और बस्तिमें मक्कल्लनामक शूलको पैदा करतीहै ॥ ८५ ॥

पृथिव्यांपतितेगर्भेयोनौपीडनमिष्यते ॥
अप्रवेशोयथावायोस्तस्यसंरक्षणाक्रिया ॥
हृद्बस्तिशूलमाध्मानंप्रविष्टेतत्रजायते ॥ ८६ ॥

प्रसवके समय बालकके गिरतेही योनिको इसप्रकार दबावे जिससे बाहरकी पवन योनिके अंदर प्रवेश न करे इसप्रकार रक्षा करे। क्योंकि उस समय योनिमें

वायुका प्रवेश होनेसे हृदय और बस्तीमें शूल और अफारा आदि उपद्रव होतेहैं ॥ ८६ ॥

मक्कल्लकी चिकित्सा ।

संचूर्णितंयवाक्षारंपिबेत्कोष्णेनवारिणा ॥
सर्पिषावापिबेन्नारीमक्कल्लस्यनिवृत्तये ॥ ८७ ॥

जवाखारके चूर्णको गर्मजल अथवा घीके साथ मक्कल्लशूलकी निवृत्तिके लिये स्त्री पीवे ॥ ८७ ॥

त्रिकटुचारुजातककुस्तंबरीचूर्णसंयुक्तम् ॥
खादेद्गुडंपुराणंनित्यंनारीमक्कल्लदलनाय ॥ ८८ ॥

सोंठ, मिर्च, पीपल, दालचीनी, इलायची, तेजपत्र, नागकेशर, धनियाँ, इन सबका चूर्ण करके पुराने गुडमें मिलाके खानेसे मक्कल्लशूल दूरहोताहै ८८

प्रसूताकेशिरके दर्दकी दवाई ।

मातुलुंगस्यमूलंतुमल्लिकामूलमेवच ॥
बिल्वमुस्तमिदंलेपंशिरोरोगविनाशनम् ॥ ८९ ॥

बिजौरेकी जड, मोतियेकी जड, बेलगिरी, नागरमोथा इनचारोंको जलमें रगडकर प्रसूताके मस्तकपर लेप करनेसे शिरका दर्द दूर हो ॥ ८९ ॥

सूतिकारोग ।

मिथ्योपचारात्संक्लेशाद्विषमाजीर्णभोजनात् ॥
सूतिकायाश्चयेरोगाजायंतेदारुणाश्चते ॥ ९० ॥

प्रसूता स्त्रीके मिथ्या उपचार (अनुचितपवनआदि)के करनेसे संक्लेश अर्थात् अत्यंत क्रोध या दोषकर्ता पदार्थ और विषम भोजन तथा अजीर्णमें भोजन आदि करनेसे प्रसूता स्त्रीको दारुण प्रसूतरोग पैदा होताहै ॥ ९० ॥

लक्षण ।

अंगमर्दोज्वरःकासःपिपासागुरुगात्रता ॥
शोथःशूलातिसारौचसूतिकारोगलक्षणम् ॥

अंगोंका टूटना, ज्वर, खांसी, प्यास, देहका भारी होना, सूजन, शूल, अतिसार, ये सूतिका रोगके लक्षण हैं ॥

यथा—

प्रलापोवेपथुर्यस्याः सूतिकासाऽदाहृता ॥ ११ ॥

बकवाद, और कंप जिसके हो उसको सूतिकारोग कहतेहैं ॥ ११ ॥

ज्वरादिकोंकी प्रसूतसंज्ञा ।

ज्वरातिसारशोथाश्चशूलानाहबलक्षयाः ॥
तन्द्रारुचिप्रसेकाद्यावातश्लेष्मसमुद्भवाः ॥ १२ ॥
कृच्छ्रसाध्याहितेरोगाःक्षीणमांसबलाश्रिताः ॥
तेसर्वेसूतिकानाम्नारोगास्तेचाप्युपद्रवाः ॥ १३ ॥

ज्वर, अतिसार, शोथ, शूल, अफारा, बलकी क्षीणता, तंद्रा, अरुचि, मुखसे पानी पडना इत्यादि वात कफके विकार जिसका मांस, बल, क्षीण होगयाहो उसके ज्वरादिक रोग और उपद्रव कष्टसाध्य होतेहैं। ये सब ज्वरादि एक प्रधान बाकी उपद्रव होतेहैं इन सबकी प्रसूतसंज्ञाहै ॥१२ ॥ १३ ॥

चिकित्सा ।

सूतिकारोगशांत्यर्थंकुर्याद्वातहरींक्रियाम् ॥
दशमूलकृतंकाथंकोष्णंदद्याद्घृतान्वितम् ॥ १४ ॥

प्रसूतरोगकी शांतिके लिये वातनाशक क्रिया करे अथवा दश मूलके कोष्ण क्वाथमें घृत मिलाकर पिलावे ॥ १४ ॥

देवदार्वादिकाथ ।

देवदारुवचाकुष्ठंपिप्पलींविश्वभेषजम् ॥
भूनिंबकट्फलंमुस्तंतिक्ताधान्यंहरीतकी ॥ १५ ॥
गजकृष्णसदुस्पर्शागोक्षुरूधन्वयासकः ॥
बृहत्यातिविषाछिन्नाकर्कटःकृष्णजीरकः ॥ १६ ॥
समभागान्वितैरेतैः सिंधुरामठसंयुतम् ॥
काथमष्टावशेषंतुप्रसूतांपाययेत्स्त्रियम् ॥ १७ ॥

शूलकासज्वरश्वासमूर्च्छाकंपशिरोर्तिभिः ॥
युक्तंप्रलापतृड्दाहतंद्रातीसारवांतिभिः ॥ ९८ ॥
निहंतिसूतिकारोगंवातपित्तकफोद्भवम् ॥
कषायोदेवदार्वादिःसूतायाःपरमौषधम् ॥ ९९ ॥

देवदारु, वच, कूठ, पीपल, सोंठ, चिरायता, कायफल, मोथा, कुटकी, धनियाँ, हरड, गजपीपल, कटेरी, गोखरू, धमासा, बडी कंटेरी, अतीस, गिलोय, काकडसिंगी, कलौंजी, जीरा, इन सबको बराबर लेकर अष्टावशेष क्वाथ करे (ये सबको एक २ मासा लेकर आठ छटांक जलमें पकावे १ छटांक रहनेपर) इसमें २ रत्ती भुनी हींग और ३ रत्ती सेंधानमक बुरकाकर प्रसूता स्त्री पीवे तो इस क्वाथके पीनेसे शूल, खाँसी, ज्वर, श्वास, मूर्च्छा, कंप, शिरकी पीडा प्रलाप (वृथाबकना) तृषा, दाह, तंद्रा, अतिसार, वमन, इनरोगों करके युक्त प्रसूतके रोग और वात, पित्त, कफके विकारोंको यह देवदार्वादि क्वाथ नष्ट करे । यह प्रसूतरोगकी परमदिव्य औषधि है ॥ ९५–९९ ॥

अथवा

अमृतानागरसहचरभद्रोत्कटपंचमूलजलदजलम् ॥
शृतशीतंमधुयुक्तंशमयत्याचिरेणसूतिकातंकम् ॥ १०० ॥

गिलोय, सूंठ, कटसरैया (पियावासा) प्रसारणी, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी बडी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू इन सबको डेढ २ मासा लेकर कूटकर ४ छटांक पानीमें पकावे। जब १ छटांक रहे तो इसमें छानकर ८ मासे शहद मिलाके पिलावे तो प्रसूतरोग नष्टहों ॥ १०० ॥

पञ्चजीरकपाक ।

जीरकंस्थूलजीरश्चशतपुष्पद्वयंतथा ॥
यवानीचाजमोदाचधान्याकंमेथिकापिच ॥ १ ॥
शुंठीकृष्णाकणामूलंचित्रकंहवुषापिच ॥
बदरीफलचूर्णंचकुष्ठंकांपिल्लकंतथा ॥ २ ॥

एतानिपलमात्राणिगुडंपलशतंमतम् ॥
क्षीरप्रस्थद्वयंदद्यात्सर्पिषःकुडवंतथा ॥ ३ ॥
पूज्यतेसूतिकारोगेयोनिरोगेज्वरेक्षये ॥
कासेश्वासेपांडुरोगेकार्श्येवातामयेषुच ॥ ४ ॥

जीरा, कलौंजी, सौंफ, बडीसौंफ, अजवायन, अजमोद, धनियाँ, मेथी सोंठ, पीपल, पीपलमूल, चित्रक, हाऊबेर, बेरका चूर्ण, कूठ, कबीला ये एकपल गुड १०० पल, दूध २ सेर, गोघृत एकपाव, सबको एकत्रकर पाक बनावे । यह पाक प्रसूतिकारोगमें देवे इससे योनिरोग, ज्वर, क्षय खाँसी, श्वास, पांडु, कृशपना और वायुके रोग ये सब नष्ट होतेहैं ॥ १–४ ॥

अथवा

सहचरमुस्तगुडूचीभद्रोत्कटविश्वबालकैःक्वथितम् ॥
पेयमिदंमधुमिश्रंसद्योज्वरशूलनुत्सूत्याः ॥ ५ ॥

पियावासा, मोथा, गिलोय, गंधप्रसारिणी, सोंठ, सुगंधवाला इनका क्वाथ शहद मिलाकर पीनेसे प्रसूतास्त्रीका ज्वर और शूल शीघ्र नष्ट होताहै ॥ ५ ॥

सौभाग्यशुंठी ।

आज्यस्यांजलियुग्ममत्रपयसःप्रस्थद्वयंखंडतः
पञ्चाशत्पलमत्रचूर्णितमथोप्रक्षिप्यतेनागरम् ॥
प्रस्थार्धंगुडवद्विपाच्यविधिनामुष्टित्रयंधान्यकात्
मिश्याःपंचपलंपलंकृमिरिपोःसाजाजिजीरादपि ॥ ६ ॥
व्योषांभोददलोरगेंद्रसुमनस्त्वग्द्राविडीनांपलं
पक्वंनागरखण्डसंज्ञकमिदंतत्सूतिकारोगहृत् ॥
तृट्छर्दिज्वरदाहशोषशमनंसश्वासकासापहं
प्लीहव्याधिविनाशनंकृमिहरंमंदाग्निसंदीपनम् ॥ ७ ॥

उत्तम घाडकी सोंठका चूर्ण, आधसेर, गोघृत, आधसेर, गौका दूध २ सेर खाण्ड सफेद देशी २॥ सेर, सबको एकत्रकर गुडपाकविधिसे पकावें ।

जब पक जावे फिर इसमें धनियाँ ३ पल, कलौंजी ५ पल, बायबिडंग १पल, सफेदजीरा, कालाजीरा, सोंठ, मिर्च, पीपल, नागरमोथा, नागकेशर, दालचीनी, छोटी इलायचीके बीज, प्रत्येक एक पल इन सबका चूर्णकरके पाकमें मिलावे तो यह नागरखण्ड (सौभाग्यशुंठी) प्रमाद, वमन, ज्वर, दाह, शोष, श्वास, खाँसी, प्लीहा, कृमिरोग इन सबको नाश करे तथा जठराग्निको चैतन्य करे ॥ ६ ॥ ७ ॥

घृत।

समूलपत्रशाखंतुशतंभद्रोत्कटस्यतु ॥
वारिद्रोणेनसाध्यंस्यात्स्थाप्यंपादावशेषितम् ॥ ८ ॥
घृतप्रस्थंविपक्तव्यंगर्भेदत्त्वाचकार्षिकम् ॥
सव्योषंपिप्पलीमूलंचित्रकोजीरकंतथा ॥ ९ ॥
पञ्चमूलंकनिष्ठंतुरास्नैरंडसमायुतम् ॥
बलासिंधुयवक्षारंस्वर्जिकाकृष्णजीरकम् ॥ ११० ॥
सिद्धमेतद्घृतंसद्योनिहन्यात्सूतिकागदान् ॥
ग्रहणींपांडुरोगंचअर्शांसिजठरंतथा ॥
अग्निंचकुरुतेदीप्तंस्त्रीणांस्तन्यस्यशोधनम् ॥ ११ ॥

प्रसारणीको मूलपत्र शाखासहित १०० पल लेवे और एक द्रोण जलमें पकावे; जब चौथाई जल रहजावे तब उतारकर छान लेवे। फिर इस क्वाथमें त्रिकुटा, चित्रक, पीपलामूल, जीरा, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, गोखरू, रायसन, एरंडकी छाल, खिरैंटी, सेंधा, जवाखार, सज्जी, कालाजीरा प्रत्येक दवाईका कल्क एक तोला डाल एक प्रस्थ घीको विधि, पूर्वक पकावे। सिद्ध होनेपर इसके सेवनसे समस्त प्रसूतरोग, संग्रहणी, पांडु, बवासीर,उदररोग ये सब दूर होवें। अग्नि दीपन होती है और स्त्रीके स्तनोंका दूध शुद्ध होता है ॥ ८ ॥ ९ ॥ ११० ॥ ११ ॥

प्रसूतरोगमें यूष ।

पिप्पलीदेवकाष्ठंचभद्रमुस्तकमेवच ॥
अगुरुपिप्पलीमूलंश्लक्ष्णंपिष्टंचकारयेत् ॥ १२ ॥
तक्रेण सहसंयुक्तंपचेद्यूषंविचक्षणः ॥
अयंतुघृतसंयुक्तःपीतमात्रोनसंशयः ॥ १३ ॥
वातिकंपैत्तिकंचैवश्लैष्मिकंसान्निपातिकम् ॥
सूतिकोपद्रवंहंतिवृक्षानिंद्राशनिर्यथा ॥ १४ ॥

पीपल, देवदारु, नागरमोथा, अगर, पीपलामूल इन सबको बारीक पीसके तक्रके साथ इनका यूष बनावे अर्थात् सब दवाई मिलाके या सब दवाइयोंका क्वाथ मिलाके तक्रको पकाकर यूष बनावे । फिर इस यूषको घृतयुक्त करके पीनेसे वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक और सान्निपातिक सब प्रकारके प्रसूतरोग दूर होतेहैं ॥ १२–१४ ॥

अथवा—यवादियूष ।

यवकोलकुलित्थानांशालिमूलंतथैवच ॥
शस्तोयंसूतिकातंकेयूषःसर्वज्वरापहः ॥ १५ ॥

जौ, उन्नाब, कुलथी, शालीचावलोंकी जड, इनका यूष सूतिकारोगमें ज्वरादिकोंका हरनेवालाहै ॥ १५ ॥

प्रसूताके नियमसमयकी अवधि ।

सर्वतःपरिशुद्धास्यात्स्निग्धपथ्याल्पभोजना ॥
स्वेदाभ्यंगपरानित्यंभवेन्मासमतंद्रिता ॥ १६ ॥
प्रसूतासार्धमासांतेदृष्टेवापुनरार्तवे ॥
सूतिकानामहीनास्यादितिधन्वंतरेर्मतम् ॥ १७
उपद्रवविशुद्धांचविज्ञायवरवर्णिनीम् ॥
ऊर्ध्वंचतुर्भ्योमासेभ्यःपरिहारंविवर्जयेत् ॥ १८ ॥

प्रसूतास्त्री सर्वतः शुद्धहोकर (सकलदुष्टरुधिरादिसे साफ होकर) चिकना हलका हितकारी और थोडा भोजन करे । नित्य स्वेदन और तैलकी मालिश

करायाकरे एकमहीनेतक सावधानीसे अतिपथ्यपूर्वक रहे । इसप्रकार प्रसूताको १॥ महीनेके बाद अथवा जबतक फिर रजोदर्शन नहो तबतक स्त्री प्रसूता नामसे रहित होतीहै, यह धन्वन्तरिका मतहै। जब प्रसूता स्त्री सब उपद्रवोंसे रहित होजाय और निर्विघ्नतासे चार महीने लंघजावें तो परहेज छोडदेवे ॥ १६-१८ ॥

स्तनरोग निदान ।

सक्षीरौवाप्यदुग्धौवादोषःप्राप्यस्तनौस्त्रियाः ॥
रक्तंमांसंचसंदूष्यस्तनरोगायकल्पते ॥ १९ ॥

वातादिदोष गर्भिणी अथवा प्रसूतास्त्रीके दुग्धयुक्त अथवा बिना दूधवाले स्तनोंमें प्राप्तहो मांस और रक्तको दुष्टकरके स्तनरोगको पैदा करतेहैं ॥ १९॥

स्तनरोगके लक्षण ।

यत्सरक्तंतनुस्रावंरुधिरामिषगन्धकम् ॥
शोथवृद्धिसमायुक्तंसरुजंचपयोधरम्॥ १२० ॥
पञ्चानामपितेषांतुहित्वाशोणितविद्रधिम् ॥
लक्षणानिसमानानिबाह्यविद्रधिलक्षणैः ॥ २१ ॥

उन स्तनोंमें पतला और मांसकी गन्धवाला रक्त स्रवे और सूजनकीवृद्धि और पीडा होती है ॥ १२० ॥ यह स्तन वात, पित्त, कफ, सन्निपात, और आगंतुक भेदसे पांच प्रकारका है । इसके लक्षण आगंतुजविद्रधि और रक्तज विद्रधि छोडके बाह्यविद्रधिकी सदृश जानना ॥ २१ ॥

विद्रधिकी चिकित्सा ।

शोथंस्तनोत्थितमवेक्ष्यभिषग्विदध्याद्योविद्रधावभिहितंबहुधा विधानम् ॥ आमेविदाहिनितथैवगतेचपाकंतस्यास्तनौसततमेवविनिर्दुहीतः ॥ २२ ॥

स्त्रीके स्तनोंमें सूजन उत्पन्न होतो वैद्य विद्रधि (अन्य ग्रन्थोंमें देखो कि विद्रधिकी विशेष निदान चिकित्सा लिखी है) की समान जैसी अन्य ग्रन्थोंमें लिखी चिकित्सा करे । जो स्तनकी सूजन पक्क अथवा अपक्क हो या दाह युक्तहो तो स्तनोंमेंसे दूध निकालदेवे ॥ २२ ॥

पित्तघ्नानितुशीतानिद्रव्याण्यत्रप्रयोजयेत् ॥
जलौकाभिर्हरेद्रक्तंनस्तनावुपनाहयेत् ॥ २३ ॥
लेपोविशालमूलेनहंतिपीडांस्तनोत्थिताम् ॥
निशाकनककल्काभ्यांलेपःप्रोक्तस्तनार्तिहा ॥ २४ ॥

पित्तनाशक शीतल द्रव्योंका शोथघ्न दाहनाशक उपयोग करै अथवा जोंके लगाकर स्तनोंका दुष्टरक्त निकाल देवे, परन्तु स्वेदन न करे। जो पीडा होतीहो तो इन्द्रायणकी जडका लेप करे तो स्तनकी पीडा दूरहो अथवा हलदी और धतूरेके पत्तोंको रगडकर लेप करे तो स्तनोंकी पीडा दूरहो २३ ॥ २४ ॥

अथवा

लेपोनिहंतिमूलंस्तनरोगंवन्ध्यकर्कोटयाः ॥
निर्वाप्यतप्तलोहंसलिलेतद्वापिबेत्तत्र ॥ २५ ॥

अथवा बांझककौडेकी जडको पीसके लेप करे तो स्तनोंकी पीडा दूरहो । अथवा लोहेको तपाकर जलमें बुझाकर वह जल पिलाना हितकारकहै ॥ २५ ॥

यष्टिर्निंबंहारिद्राचनिर्गुण्डिधातकीसमम् ॥
चूर्णस्तनव्रणेदेयंरोपणंकुरुतेभृशम् ॥ १२६ ॥

मुलेठी, निंब, हलदी, सम्भालू, धावेके फूल, इन सबके चूर्णको बारीक करके स्तनोंके जख्मोंके भरनेके लिये व्रणोंपर भुरकावे तो व्रण भरजाते हैं ॥ १२६ ॥

इति श्रीशुभसंततियोगप्रकाशे प्रथमखंडे गर्भव्यापच्चिकित्सतं नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथबालहितोपचारनामाध्यायंव्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

अब हम बालहित उपचारक नाम अध्यायका व्याख्यान करते हैं ॥ १ ॥

जन्मादारभ्यबालानामाषोडशामिताक्रिया ॥
बालहितोपचारेऽस्मिन्विधिवाल्लिख्यतेमया ॥ २ ॥

जन्मसे आरम्भ करके षोडश वर्ष पर्यंत बालकोंके कल्याणके लिये जो उपचार करना चाहिये वह हम इस बालहितोपचारक अध्यायमें विधि-पूर्वक लिखेंगे ॥ २ ॥

जातमात्रंविशोध्योल्वाबालंसैंधवसर्पिषा ॥
प्रसूतक्लेशितंचानुबलातैलेनसेचयेत् ॥
अश्मनोर्वादनंचास्य कर्णमूले समाचरेत् ॥ ३ ॥

तत्कालके पैदा हुवे बालकको दाई (योग्य स्त्री जो बच्चा जनातीहो) अपने नख रहित दोनों हाथोंको किञ्चित् सेंधानमकयुक्त उत्तम घी लगाकर इन घी लगे हुवे हाथोंसे बालकको उल्व (जेर) से साफ करके निकाले । तदनन्तर प्रसूतके क्लेशसे क्लेशित बालकको बलातैलसे सेचन करे और इस बालकके कानके समीप दो पत्थरोंको बजावे। जिसके शब्दसे यह चैतन्य होवे तथा और भी चैतन्य होनेके उपचार करै इस तरह करनेसे बालकके प्राण प्रफुल्लित होते हैं ॥ ३ ॥

अथास्यदक्षिणेकर्णेमंत्रमुच्चारयेदयम् ॥ ४ ॥

फिर यदि यह बालक द्विजन्मा (ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य) के घरमें पैदा हुवा हो तो इस बालकका पिता बालकके दक्षिण कानमें नीचे लिखा मन्त्र उच्चारण करे ॥ ४ ॥

मन्त्र ।

अंगादंगात्संभवासिहृदयादभिजायसे ॥
आत्मावैपुत्रनामासिसजीवशरदांशतम् ॥ ५ ॥
शतायुःशतवर्षोसिदीर्घमायुरवाप्नुहि ॥
नक्षत्राणिदिशोरात्रिरहश्चत्वाभिरक्षतु ॥ ६ ॥

अंग अंगसे तू है हृदयसे तू उपजाहै निश्चयही तू पुत्रनामसे आत्मा है सौ १०० वर्षतक तू जीता रहे, सौवर्षकी आयुवालाहो और शतवर्षवाला तू

१ आगे अन्यखण्डमें देखो ।

है, दीर्घआयुको प्राप्तहो । सब नक्षत्र, दिशा, रात्रि, दिन सब तेरी रक्षा करनेवाले हों अर्थात् तेरी रक्षा करें ॥ ५ ॥ ६ ॥

स्वस्थीभूतस्यनाभिंचसूत्रेणचतुरंगुलात् ॥
बद्ध्वोर्ध्वंछेदयित्वाचग्रीवायामवसंजयेत् ॥ ७ ॥
नाभिंचकुष्ठतैलेनसेचयेत्स्नपयेदनु ॥
क्षीरिवृक्षकषायेणसर्वगंधोदकेनवा ॥
कोष्णेनतप्तरजततपनीयनिमज्जनैः ॥ ८ ॥

स्वस्थ हुए उस बालककी नाभि चार अंगुलसे ऊपर उत्तम सूत्रके धागोंसे बाँधे । फिर ऊपरकी तर्फसे काट देवे और जो सूत्र नाभिसे बँधा हुआ है इस को धीरेसे बालकके गलेमें बांधे ताकी नाभि भी ऊपरको होकर लिपटी रहे और नाभिको कूठसे सिद्ध किये हुए तैलसे सेचन करे फिर वट, पीपल, गूलर आदि क्षीरिवृक्षोंके काथसे अथवा सर्वप्रकारके गंधोदकसे अथवा जिस जलमें चांदी या सोना तपातपाकर बुझायागयाहो जिससे वह जल गर्म होगयाहो उससे स्नान करावे ॥ ७ ॥ ८ ॥

ततोदक्षिणतर्जन्यातालून्मृज्यावगुंठयेत् ॥
शिरसिस्नेहयुक्तंवैपिचुंचास्यप्रयोजयेत् ॥ ९ ॥

फिर दहनेहाथकी तर्जनीको रुईका फोहा लपेटकर इस बालकके ताल्वादि सब स्थानोंको धोवे और शिरके ऊपर चिकनाई(तेल)युक्त फोहा रक्खे॥९॥

गर्भांभःसैंधववताप्सर्पिषावामयेत्ततः ॥
मेधायुभ्यांबलार्थंवैप्राश्यंचास्यप्रयोजयेत् ॥
ऐंद्रीब्राह्मीवचाशंखपुष्पीकल्कंघृतंमधु ॥ १० ॥

फिर सेंधानमकयुक्त घीसे गर्भके पानीको वमनद्वारा निकाले । फिर बुद्धि और आयु तथा बलकी कामनासे उस बालकको इंद्राणी, ब्राह्मी, वच,

शंखपुष्पी इनको शहद और घीमें मिलाकर एकरत्तीसेभी कम मिकदारमें या एकरत्ती चटावे ॥ १० ॥

लिह्यान्मधुघृतोपेताहेमधात्रिरजोथवा ॥ ११ ॥

अथवा घी और शहदमें मिलाके उत्तम स्वर्णभस्म आमलेका चूर्ण सम मिलाके २ चावलकी मात्रासे चटावे ॥ ११ ॥

प्राजापत्येनविधिनाजातकर्माणिकारयेत् ॥ १२ ॥

वेदविहित प्राजापत्य विधानसे जातकर्मादिक करावे ॥ १२ ॥

शिराणांहृदयस्थानांविवृतत्वात्प्रसूतितः ॥
तृतीयेह्निचतुर्थेवास्त्रीणांस्तन्यंप्रवर्तते ॥ १३ ॥
प्रथमेदिवसेतस्मात्त्रिकालेमधुसर्पिषी ॥
अनंतामिश्रितेमंत्रपावितेप्राशयेच्छिशुम् ॥ १४ ॥

प्रसूत होनेसे हृदयमें स्थित नाडियोंके विवृत होनेसे तीसरे या चौथे दिन तक स्त्रियोंके स्तनोंमें दूध प्रवृत्त होताहै इसलिये बालकको जबतक स्तनोंमें दूध प्रवृत्त नहो तबतक इन तीन या चारदिनोंमें इसप्रकार नीचेलिखी औषधिका सेवन करावे । बालकको प्रथमदिन अनंतमूलयुक्त घी और शहदको मंत्रसे पवित्र करके प्राशन करावे ॥ १३ ॥ १४ ॥

द्वितीयेलक्ष्मणासिद्धंतृतीयेचघृतंततः ॥
शुद्धस्तन्यानुपानेननवनीतंप्रयोजयेत् ॥ १५ ॥

फिर दूसरे और तीसरे दिन लक्ष्मणासे सिद्धकिये घृतको सेवन करावे । फिर जब स्तनोंमें दूध आजावे तो स्तनोंका पहला दूध जमीनपर निकाल देवे। फिर बालकको किंचित् ताजा मक्खन चटाकर नीचेलिखे मन्त्रसे स्तनोंको अभिमंत्रित करके स्तनका दूध पिलावे ॥ १५ ॥

स्तन्यपानविधि ।

ततःप्रशस्तायांतिथौशिरस्नातामहतवाससमुदङ्मुखंशिशुमुप-

१—सब शहद घी दवाईमिलाकरके एक रत्ती होनाचाहिये या रत्तीसे भी कमनहो ।

वेश्यधात्रींप्राङ्मुखीमुपवेश्यदक्षिणंस्तनंधौतमीषत्परिस्रुतमाभि-
मंत्र्यमंत्रेणानेनपाययेत् ॥ १६ ॥

फिर अच्छे समय श्रेष्ठ, तिथि नक्षत्रादिमें शिरसमेत स्नान कराके अच्छे वस्त्र पहनके माता या धायको पूर्वाभिमुख बैठायकर उसकी गोदमें उत्तराभिमुख बालकको स्थापन करे और धायके थोडे धोयेहुवे दहने स्तनमेंसे थोडाशा दूध निकाल देवे । फिर नीचे लिखे मंत्रसे अभिमंत्रित कर बालकको स्तन चुवावे ॥ १६ ॥

मंत्र ।

चत्वारःसागरास्तुभ्यंस्तनयोःक्षीरवाहिणः ॥
भवंतुसुभगेनित्यंबालस्यबलवृद्धये ॥ १७ ॥
पयोऽमृतरसंपीत्वाकुमारस्तेशुभानने ॥
दीर्घमायुरवाप्नोतुदेवाःप्राश्यामृतंयथा ॥ १८ ॥

हे सुभगे इस बालकके बलकी वृद्धिके लिये चारों समुद्र तेरे स्तनोंमें नित्य क्षीरवाही होकर रहें और हे शुभानने तेरे दूधरूपी अमृतरसको पीकर यह बालक दीर्घआयुको प्राप्तहो । जैसे देवता अमृतको पीकर दीर्घायु होतेहैं ॥ १७ ॥ १८ ॥

मातुरेवपिबेत्स्तन्यंतत्परंदेहवृद्धये ॥
स्तन्यधात्र्यावुभेकार्येतदसंपादिवत्सले ॥ १९ ॥
अव्यंगेब्रह्मचारिण्यौवर्णप्रकृतितःसमे ॥
नीरुजेमध्यवयसौजीवद्वत्सेनलोलुपे ॥
हिताहारविहारेणयत्नादुपचरितेचते ॥ २० ॥

बालककी देहकी वृद्धिके लिये इस स्तन्यपानके दिनसे लेकर बालककी माताही दूध पिलावे । यदि माताके स्तनोंमें दूध कमहो तो दूध चुंवानेवाली दो धाय जो योग्य हों और बालकसे स्नेह रखतीहों, बालकको दूसरा समझकर दुःस्वभाव न रखतीहों, व्यभिचार न करतीहों, ब्रह्मचर्यसे रहनेवालीहों,

हस्ताभ्यांग्रीवयामूर्ध्नाविशेषात्सततंवचाम् ॥
आयुर्मेधास्मृतिस्वास्थ्यकरींरक्षोभिरक्षिणीम् ॥ २५ ॥

फिर वह बालक जीते हुवे गैंडेके कटे सींगकी निकाली हुई मणिको धारण करे और शुभरूप ब्राह्मी, इन्द्रायण, जीवक आदि श्रेष्ठ औषधिको धारण करे । विशेष करके वचको निरंतर धारण करना शुभहै । क्योंकि वच आयु और बुद्धि, स्मृति, स्वस्थपणा इनको करनेवाली और राक्षस भूत इसकी गन्धसे भागजातेहैं इसलिये यह उनसे रक्षा करनेवालीहै ॥ २४-२५ ॥

धरण्युपवेशन और अन्नप्राशन ।

पञ्चमेमासिपुण्येह्नि धरण्यामुपवेशयेत् ॥
षष्ठेन्नप्राशनंमासिक्रमात्तत्रप्रयोजयेत् ॥ २६ ॥

पांचवे महीनेमें शुभनक्षत्र मुहूर्तमें पृथ्वीपर बैठावे और छठे महीनेमें विधिपूर्वक अन्नप्राशन अर्थात् बालकके मुखको अन्न छुवावे इससे पहले अन्न न देवे ॥ २६ ॥

कर्णवेधन ।

षट्सप्तमाष्टमासेषुनिरुजस्यशुभेहनि ॥
कर्णौहिमागमेविध्येद्धात्र्यंकस्थस्यसांत्वयन् ॥ २७ ॥
प्राग्दक्षिणंकुमारस्यभिषग्वामंतुयोषितः ॥
दक्षिणेनदधत्सूचींपालिमन्येनपाणिना ॥ २८ ॥
जरायुमात्रप्रच्छन्नेरविरश्म्यवभासिते ॥
विध्येद्दैवकृतेछिद्रेसकृदेवर्जुलाघवात् ॥ २९ ॥
स्नेहाक्तंसूच्यनुस्यूतंसूत्रंचानुनिधापयेत् ॥
त्र्यहात्र्यहात्ततोवर्त्तिःस्थूलयेच्चशनैःशनैः ॥ ३० ॥

फिर छठे या सातवें तथा आठवें महीनेमें रोगरहित बालकको शुभदिन मुहूर्तमें मार्गशीर्ष महीनेमें माता या धायकी गोदमें बैठाकर आश्वासन करताहुवा बालकके कान वींधे (वेधनकरे)। कानवेधन करनेवाला यदि कुमारका कान वेधन करे तो पहले दक्षिण कान वेधन करे और कन्याका वाम कर्ण पहले

वेधन करे । वेधन कर्ता दहने हाथमें सूचीलेकर वामे हाथसे कानकी पाली पकडकर सूर्यके सामने करे। पालीमें दैवकृत जो सामान्य जालेसे छिपा हुवा छिद्रहै वह सूर्यकी किरणोंसे देखकर हलके पनेसे एकहीवार वेधन करदेवे । फिर तेललगाहुवा जो सूईमें धागाहै वह उस बालकके कानमें पहना देवे और तेल लगादेवे । इस धागेको तीसरेरोज बदलताजावे और मोटाधागाशनैः २ पहनादेवे ॥ २७--३० ॥

जातदशनका कृत्य ।

अथैनंजातदशनंक्रमेणापनयेत्स्तनात् ॥
पूर्वोक्तंयोजयेत्क्षीरमन्नंचलघुबृंहणम् ॥ ३१ ॥

इसके उपरांत जब बालकके दांत पैदा होगये हों तो पहले कहेहुवे बकरी या गौके दूधको तथा हलके और बृंहण अन्नको भोजन कराते २ स्तनोंके चूंघनेसे हटादेवे और उक्त दूध और अन्नको भोजन करावे ॥ ३१ ॥

प्रियालमज्जमधुकमधुलाजासितोत्पलैः ॥
अपस्तन्यस्यसंयोज्यःप्रीणनोमोदकःशिशोः ॥ ३२ ॥

चिरौंजिकी मज्जा, मुलेठी, शहद, धानकी खील, मिसरी, कमल, इन करके बनायेहुवे लड्डू स्तनोंसे हटे बालकको पुष्टकरनेकेलिये देवे ॥ ३२ ॥

दीपनोबालबिल्वैलाशर्करालाजसक्तुभिः ॥
संग्राहीधातकीपुष्पशर्करालाजतर्पणैः ॥ ३३ ॥

कच्ची बेलगिरी, इलायची, खाँड, धानकी खीलोंके सत्तू इनसे बनायाहुवा दीपन मोदक देवे । अथवा धावेके फूल, खांड, धानकी खीलोंके तर्पणसे बनाया संग्रहीरूप मोदक देवे ॥ ३३ ॥

त्रासयेन्नाविधेयंतंत्रस्तंगृह्णंतिहिग्रहाः ॥
वस्त्रवातात्परस्पर्शात्पालयेल्लंघिताच्चतम् ॥ ३४ ॥

और बालकको कभी भी त्रास नदे अर्थात् हरेक बातसे डरावे नहीं क्योंकि डरेहुवे बालकको बालग्रह ग्रस लेतेहैं। वस्त्रकी वायुसे पराये स्पर्शसे और लंघनसे बालकको बचाकर रखे ॥ ३४ ॥

ब्राह्मीसिद्धार्थकवचासारिवाकुष्ठसैंधवैः ॥
सकणैःसाधितंपीतंवाङ्मेधास्मृतिकृद्घृतम् ॥
आयुष्यंपाप्मरक्षोघ्नंभूतोन्मादनिबर्हणम् ॥ ३५ ॥

ब्राह्मी, सफेद सर्सों, वच, कूठ, पीपल, सेंधानोन, सारिवा इनसे सिद्धकिया घृत पानकरनेसे वाणी, बुद्धि, स्मृतिको करताहै तथा आयुष्य है। पापराक्षस भूत उन्माद इनको दूरकरताहै ॥ ३५ ॥

अष्टांगघृत।

वचेन्दुलेखामण्डूकीशंखपुष्पीशतावरी ॥
ब्रह्मसोमामृताब्राह्मीकल्कीकृत्यपलांशिका ॥ ३६ ॥
अष्टांगंविपचेत्सर्पिःप्रस्थंक्षीरंचतुर्गुणम् ॥
तत्पीतंधन्यमायुष्यंवाङ्मेधास्मृतिबुद्धिकृत् ॥ ३७ ॥

अथवा वच, बावची, मंडूकी, शंखपुष्पी, शतावरी, श्वेतविदारी, गिलोय, ब्राह्मी ये सब चार २ तोले लेवे। इनके कल्कमें ६४ चौंसठ तोले घी २५६ तोले दूध डालके घृत सिद्ध करे। इस घृतके पान करनेसे बालक धन्यहै, आयु-वाला हो। वाणी, मेधा, स्मृति और बुद्धी बढे ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

सारस्वतघृत।

अजाक्षीराभयाव्योषपाठोग्राशिग्रुसैंधवैः ॥
सिद्धंसारस्वतंसर्पिःवाङ्मेधास्मृतिवह्निकृत् ॥ ३८ ॥

अथवा बकरीका दूध, हरड, सोंठ, मिर्च, पीपल, पाठा, वच, सहिंजना, सेंधानमक इनसे सिद्धकिया सारस्वत नामक घृत वाणी, धारणा, स्मृति, और अग्निको बढाताहै ॥ ३८ ॥

वाणीशुद्धीकरण।

वचायष्ट्याह्वसिंधूत्थपथ्यानागरदीप्यकैः ॥
शुद्धयतेवाग्घविर्लीढैःसकुष्ठकणजीरकैः ॥ ३९ ॥

वच, मुलेठी, सेंधानमक, हरड, सोंठ, अजमोद इनका चूर्णकरके घीमें

मिलाके चाटनेसे वाणी स्पष्ट होतीहै। अथवा कूठ, पीपल, जीरा इनके चूर्णको घृतयुक्त चाटनेसे वाणी शुद्धहो ॥ ३९ ॥

उपनयन और विद्याध्ययन ।

ततोयथोचितेवर्षेसम्रमेवाद्विजातयः ॥
उपनीयविधानेनयस्मिन्वर्णेयथाविधि ॥ ४० ॥
शूद्रंनोपनयेद्विद्वान्मंत्रंनैवास्यचापदिशेत् ॥
यथाशास्त्रस्याशिक्षार्थंगुरोरग्रेनिवेदयेत् ॥ ४१ ॥

इसके उपरांत इसतरह उत्तम वृतोंके उपयोगसे बल बुद्धिकी वृद्धिको प्राप्त हुवे बालकको जिस वर्णकेवास्ते धर्मशास्त्रमें जैसा विधान हो और जिस वर्षमें लिखाहो या सातवें वर्षमें विधिपूर्वक यज्ञोपवीत करावे और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य को यज्ञोपवीत कराके मंत्रोपदेश करे, परन्तु शूद्रको यज्ञोपवीत न करावे और वेदमंत्रोपदेशभी न करे । परन्तु जिसवर्णको जैसी विद्याका अधिकार हो या जो विद्या सिखलाना चाहै उसी विद्याके गुरुकेपास शिक्षापानेकोलिये लडकेको छोडदेवे ॥ ४० ॥ ४१ ॥

उपसंहार ।

बालहितोपचारोयंलिखितश्चसमासतः ॥
विशेषअन्यशास्त्रेषुज्ञातव्योविबुधैःसदा ॥ ४२ ॥

समाससे थोडेसेमें बालहित उपचारका वर्णन हम कर चुके हैं। यदि किसी को यह विषय महान् विशेषतासे देखना हो तो धर्मशास्त्र मन्वादिकोंमें संस्कार और चरकादिकोंमें अन्य आचारको बुद्धिमान् सदा देखें ॥ ४२ ॥

इति श्रीशुभसंततियोगप्रकाशे बालहितोपचारो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथरोगप्रतिषेधकमध्यायंव्याख्यास्यामः ॥ १ ॥

अब इसके अनन्तर बालकोंके रोगके प्रतिषेधक अध्यायका व्याख्यान करेंगे ॥ १ ॥

तीनप्रकारके बालक।

त्रिविधःकथितोबालःक्षीरान्नोभयवर्तनः ॥
स्वास्थ्यंताभ्यामदुष्टाभ्यांदुष्टाभ्यांरोगसंभवः ॥ १ ॥

बालक तीनप्रकारके होतेहैं अर्थात् बालकोंकी तीन अवस्था हैं। एकतो दूधपीनेवाले, दूसरे अन्न और दूध दोनोंको सेवन करनेवाले, तीसरे अन्नके खानेवाले। दोषरहित दूध और अन्नके सेवनसे आरोग्य (तन्दुरुस्त) रहते हैं और दुष्टहुवे दूध और अन्नसे बालकोंको रोग उत्पन्न होतेहैं ॥ १ ॥

स्तन्यदुष्टका निदान।

धात्र्यास्तुगुरुभिर्भोज्यैर्विषमैर्दोषलैस्तथा ॥
दोषादेहेप्रकुप्यंतितत:स्तन्यंप्रदुष्यति ॥ २ ॥
मिथ्याहारविहारिण्यादुष्टावातादयस्त्रयः ॥
दूषयंतिपयस्तेनजायंतेव्याधयःशिशोः ॥ ३ ॥

दूध पिलानेवाली (माता या धाय) के भारी पदार्थोंके खानेसे या वातादि दोषोंके कोपकर्ता विषम पदार्थोंके खानेसे वातादिदोष देहमें कुपित होकर स्त्रीके दूधको दूषित करतेहैं सो मिथ्याहार विहार करनेवाली स्त्रीके वातादि ३ दोष कुपित होकर दूधको बिगाड देतेहैं उस स्त्रीके दूध पीनेसे बालकको अनेकप्रकारकी व्याधियें होतीहैं ॥ २ ॥ ३ ॥

शुद्ध दूधके लक्षण।

यदद्भिरेकतांयातिनचदोषैरधिष्ठितम् ॥
तद्धिशुद्धंपयोविद्यात्पाययेत्तंचवैसुधीः ॥ ४ ॥

जो स्त्रीका दूध जलमें गेरनेसे जलमेंही मिलजावे और जल दूध एकही होजावे। दूधका कोई अंश और रंग तथा तार आदि जलसे अलग न प्रतीत होताहो जिसमें वातादि कोई दोषका दूषण न प्रतीत हो वह दूध शुद्ध जानो और बालकको बुद्धिमान् ऐसाही शुद्ध दूध पिलावे ॥ ४ ॥

वातादिकोंसे दूषित दूधके लक्षण।

तद्धिवातात्पयोदुष्टंप्लवतेंभसिनिश्चयम् ॥
कषायंफेनिलंरूक्षंवर्चोमूत्रविबंधकृत ॥ ५ ॥

यदि वही दूध वायुसे दूषित हो तो जलमें डालनेसे तिरता रहै और कषैला, झागदार, रूक्ष बालकके विष्ठा और मूत्रको रोकदेवे और वायुके रोग पैदा करे ॥ ५ ॥

पित्ताद्दुष्टाम्लकटुकं पीतराज्यप्सुदाहकृत् ॥
कफात्सलवणंसांद्रंजलेमज्जातिपिच्छिलम् ॥ ६ ॥
संसृष्टलिंगंसंसर्गात्त्रिलिंगंसान्निपातिकम् ॥
यथास्वलिंगतद्व्याधीन्जनयत्युपयोजितम् ॥ ७ ॥

और पित्तसे दूषित दूध खट्टा कडुवा होताहै, पानीमें डालनेसे पीली तारेसी छोडे और पीनेसे बालकको दाहादि पित्तरोग पैदा करे। कफसे दुष्टहुवे दूधके ये लक्षणहैं—दूध नमकीनहो, और तारोंकरके युक्तहो, करडाहो और पिच्छलहो जलमें गेरनेसे डूबजावे और पीनेसे बालकोंको कफके विकार पैदाकरे ॥ ६ ॥ और दो दोषोंसे युक्त दूध दो दोषोंके लक्षणोंवाला हो और द्वंद्वजरोगको करे। सन्निपातसे दूषित तीनोंके लक्षणोंवाले रोग पैदा करे । जैसे जिस दोषसे दूषित दूधहो बालकको उसी दोषके लक्षणोंवाला रोग पैदा करताहै ॥ ७ ॥

बाकलके रोग जाननेकी रीति ।

शिशोस्तीक्ष्णमतीक्ष्णंचरोदनाल्लक्षयेद्रुजम् ॥
सयंस्पृशेद्भृशंदेशंयत्रचस्पर्शनाक्षमः ॥ ८ ॥
तत्रविंद्याद्रुजंमूर्ध्निरुजंचाक्षिनिमीलनात् ॥
हृदिजिह्वौष्ठदशनश्वासमुष्टिनिपीडितैः ॥ ९ ॥
कोष्ठेविबंधवमथुःस्तनदंशांत्रकूजनैः ॥
आध्मानपृष्ठवमनजठरोन्नमनैरपि ॥
बस्तौगुह्येचविण्मूत्रसंगत्रासदिगीक्षणैः ॥ १० ॥

बालकके तीक्ष्ण और नरम रोगको बालकके रोनेसे जाने और जिस अपने शरीरके अंगको या जिस जगेको बालक छूवे और दूसरेके हाथके लगनेसे रोवे और सहार नसके उस देशमें बालकके पीडा जाने ॥ ८ ॥ यदि बालक आंखे मीचें तो शिरमें दर्द जाने और जीभ व होठोंको दांतोंके निकल-

नेकी जगेसे दबावे और श्वासहो, मुठियां मींचे तो बालकके हृदयमें पीडा जाने ॥ ९ ॥ यदि बालकके कोठेमें पीडा हो तो मुखसे पानी गिरे या छर्दी हो, विबंध हो और स्तनोंको काटे, आंतोंका कूजन हो, अफरा, पीठन बजावे, पेट फूल जावे इन लक्षणोंसे कोष्ठ पीडा जाने। बस्तीमें पीडाहो तो मलमूत्र रुकजावे और त्रासयुक्त नेत्रोंसे दिशाओंको देखे ॥ १० ॥

चिकित्साका उपदेश।

अथधात्र्याःक्रियांकुर्य्याद्यथादोषंयथामयम् ॥ ११ ॥

इसके उपरांत धायकी चिकित्सा दूधकी शुद्धिकेलिये दोषोंका जैसा बलाबलहो और जैसा रोग हो उसको जानके करे अर्थात् जो रोग हो उसीका यत्न करे ॥ ११ ॥

वातदूषितकी चिकित्सा।

तत्रवातात्मकेस्तन्येदशमूलंत्र्यहंपिबेत् ॥
ततःपिबेदन्यतमंवातव्याधिहरंघृतम् ॥ १२ ॥

वायुसे दूषित स्तन्यमें तीनदिनतक दशमूलका क्काथ धायको पिलावे, फिर वायुकी व्याधियोंके हरनेवाले घृतका सेवन करे ॥ १२ ॥

रास्नादिघृत।

रास्नाजमोदासरलदेवदारुरजोन्वितम् ॥
बालोलिह्याद्घृतंतैर्वाविपक्कंससितोपलम् ॥ १३ ॥

रास्ना, अजमोद, देवदारु, सरलवृक्ष इनके चूर्णयुक्त घृत अथवा इन्हीं औषधियोंके कल्कसे सिद्धकिया घृत मिसरी मिलाके बालक चाटे और धायभी चाटे तो हितहै ॥ १३ ॥

पित्तदूषितस्तन्यका यत्न।

पित्तदुष्टेमृताभीरुपटोलीनिंबचंदनम् ॥
धात्रीकुमारश्चापिबेत्क्काथयित्वाससारिवम् ॥ १४ ॥
अथवात्रिफलामुस्तभूनिंबकटुरोहिणी ॥
सारिवादिपटोलादिगणांसिद्धघृतंचवा ॥ १५ ॥

पित्तदूषित दूधकी शुद्धिकेलिये गिलोय, शतावर, परवल, निंब, चंदन, सारिवा इनके काथको अथवा त्रिफला, नागरमोथा, चिरायता, कुटकी इनके काथको दूधपिलानेवाली धाय तथा बालक पीवे अथवा सारिवादि गण, या पटोलादिगणका काथ या इनसे सिद्धकियाघृत धाय तथा बालक सेवन करे (बालकोंकी मात्रा आगे लिखेंगे)॥ १४ ॥ १५ ॥

कफदूषितकी चिकित्सा ।

कफात्मकेघृतंदेयंयष्टिसैंधवसाधितम् ॥
सिंधूत्थपिप्पलीमद्वापिष्टैःक्षौद्रयुतैरथ ॥ १६ ॥
राठपुष्पैःस्तनौलिंपेच्छिशोश्चदशनच्छदौ ॥
सुखमेववमेद्बालोधात्रींतीक्ष्णैस्तुवामयेत् ॥ १७ ॥
ततस्तगरपृथ्वीकासुरदारुकलिंगकान् ॥
अथवातिविषामुस्तषड्ग्रंथापंचकोलकान् ॥ १८ ॥

कफसे दुष्ट स्तन्य हो तो सेंधानमक और मुलैठीसे सिद्धकिया घृत अथवा सेंधानमक पीपलसे सिद्धकिया घृत बालकको देवे और मैनफलके फूलोंको पीसकर सहदमें मिलाकर धायके स्तनों और बालकके होठोंपर लेप करे तो बालक सुखपूर्वक वमन करे और धायको तीक्ष्ण औषधियोंसे वमन करावे। फिर तगर कलौंजी देवदारु इंद्रजौ इनका काथ अथवा अतीस, नागरमोथा, बच, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ इनके काथको धाय और बालकको पिलावे ॥ १६–१८ ॥

सन्निपातसे दूषित स्तन्यपानके उपद्रव ।

सन्निपातोद्भवेस्तन्येनानारोगयुतोभवेत् ॥
ज्वरारोचकछर्द्यादिरंगभंगश्चवेपथुः ॥ १९ ॥
नानावर्णपुरीपत्वंमूत्रंपीतंसितंघनम् ॥
नानागदाश्चजायंतेक्षीरालसकनामतः ॥ २० ॥

सन्निपातसे दूषित स्तन्य (स्तनोंका दूध) होनेसे बालक अनेक रोगयुक्त होताहै और ज्वर, अरोचक, छर्दि अंगभंग, कंप, तृषा, भ्रम, तंद्रा आदि

अनेक उपद्रव हों और अनेक रंगका सांद्र, पिच्छिल, झागदार, अति पतला दस्तहो, मूत्र पीला और सफेद करडा हो और अनेक रोगहों इसको क्षीरालसक रोग कहतेहैं ॥ १९ ॥ २० ॥

चिकित्सा।

तत्राशुधात्रींबालंचवमनेनोपपादयेत् ॥
विहितायांचसंसर्ग्यांवचादिंयोजयेद्गणम् ॥ २१ ॥
पाठाशुण्ठ्यमृतातिक्तातिक्तादेवाह्वसारिवाः ॥
समुस्तमूर्वेंद्रयवाःस्तन्यदोषहराःपरम् ॥ २२ ॥

इस रोगमें धाय और बालकको शीघ्र वमन कराके विधान किये पेयादि क्रमसे वचादि गणका प्रयोग करे । अर्थात् वचादिगणका काथ या घृत सेवन करावे अथवा पाठा, सुंठ, गिलोय, चिरायता, कुटकी, देवदारु, सारिवा, नागरमोथा, मूर्वा, इंद्रजौ ये सब दूधके दोष हरनेवालेहैं इन सबका काथ या घृत अथवा अर्क पिलावे ॥ २१-२२ ॥

दंतोद्भेदक रोग ।

दन्तोद्भेदःशिशोःसर्वरोगाणांकारणंस्मृतम् ॥
विशेषाज्ज्वरविड्भेदकासच्छर्दिशिरोरुजा ॥ २३ ॥
अभिष्यंदस्यपोथक्याविसर्पस्यचजायते ॥
दंतोद्भवेचबालानांनहिकिंचिन्नदूयते ॥ २४ ॥

बालकोंके सब रोगोंका कारण दांत निकलनाहै। इन दातोंके निकलनेके समय विशेष करके ज्वर, दस्त, खाँसी, छर्दि, शिरमें पीडा, नेत्रोंका दूखना, और पलकोंके रोग, विसर्परोग हों, प्रायः दांतोंके निकलनेके समय बालकों के सब अंग पीडित होते हैं ॥ २३-२४ ॥

बालकोंके रोगोंकी चिकित्सा।

यथादोषंयथारोगंयथोद्रेकंयथाबलम् ॥
विभज्यदेशकालादींस्तत्रयुज्ज्योद्भिषग्घितम् ॥ २५ ॥

---

१ दंतोद्भेदक रोगकी चिकित्सा आगे इसी अध्यायमें देखो जहाँपर दंतरोगका वर्णनहै ।

भैषज्यंचान्यग्रंथेषुमहतांयज्ज्वरादिषु ॥
तदेवकार्यंबालानांकिंतुदाहादिकंविना ॥ २६ ॥
तएवदोषादूष्याश्चज्वराद्याव्याधयश्चते ॥
अतस्तदेवभैषज्यंमात्रातत्रकनीयसी ॥ २७ ॥

जैसा जो दोष और जैसा रोग, जैसी पीडा, जैसा बलाबल हो उसीके अनुसार देशकालादिकोंको विचारके वैद्य हितकारी औषधियाँ चिकित्सा करे। जो औषध वैद्यक ग्रन्थोंमें बडे मनुष्योंके ज्वरादि रोगोंमें कहाहै वही औषध बालकोंके ज्वरादिकोंमें करे, परन्तु दागना, क्षारलगाना, वमन विरेचनादि बडे मनुष्यकी सदृश बालकोंका न करे । जो युवा मनुष्योंको दोष दृष्य और ज्वरादिक होतेहैं वही बालकोंके होतेहैं, इसलिये युवा पुरुषोंकी व्याधियोंमें जो औषधियें लिखीहैं अनेक ग्रंथोंसे विचार कर बालककोभी उन्हींका उपयोग करे परन्तु बालकोंको मात्रा कम देवे ॥ २५--२७ ॥

तेषांगदानांयेयोगाःप्रवक्ष्यंतेऽगदंकराः ॥
तेषुतत्कल्कसंलिप्तौपाययेत्तुशिशुंस्तनौ ॥ २८ ॥

जिस जिस रोगकी वैद्य लोग जो जो दवाई बतलातेहैं अर्थात् जिन २ रोगोंको वैद्यक ग्रन्थोंमें जो जो दवाइयोंके योग कहेहैं उन २ योगोंके कल्कको छोटी मात्रासे बालककी माताके स्तनोंके मुखपर लेप करके बालकको चुंघावे ॥ २८ ॥

बालककी मात्राका प्रमाण ।

प्रथमेमासिबालायदेयाभैषज्यरक्तिका ॥
अवलेह्यानुकर्तव्यामधुक्षीरसिताघृतैः ॥ २९ ॥
एकैकांवर्द्धयेत्तावद्यावत्संवत्सरोभवेत् ॥
तदूर्ध्वंमाषवृद्धिःस्याद्यावत्षोडशवत्सराः ॥ ३० ॥
चूर्णकल्कावलेहानामियंमात्राप्रकीर्त्तिता ॥
कषायस्यपुनःसैवविज्ञातव्याचतुर्गुणा ॥ ३१ ॥

क्षीरपस्यशिशोर्देयमौषधंक्षीरसर्पिषा ॥
धात्र्यास्तुकेवलंदेयंनक्षीरेणापिसर्पिषा ॥ ३२ ॥

पहले महीनेमें बालकको एक रत्तीतक (या रत्तीसे भी कम) काष्ठ औषधिकी मात्रा देवे। तथा वह औषधि घृत, सहद, दूध, मिसरीमें मिलाकरके अवलेह बनाके चटावे या स्तनपर लगाकर दूध पिलावे। दूसरे महीनेमें दोरत्ती तीसरेमें तीनरत्ती ऐसेही प्रतिमास एक२रत्ती वधावे। फिर पहले वर्षमें १ मासा दूसरेमें दोमासे ऐसेही प्रतिवर्ष षोडश१६ वर्षतक एकमासा वधावे। चूर्ण, कल्क, अवलेहकी यह मात्रा कहीहै। यदि क्वाथ देना होतो क्वाथकी इससे चौगुनीमात्रा जाननी। जो बालक दूध पीतेहैं उनको दूध और घीसे औषधि देवे परंतु धायको केवल औषधही देवे। या धायको जो औषध दी जावे वोह विना दूध घृतसे क्वाथ करके देना चाहिये। जो बालक अन्न और दूध दोनोंको सेवन करतेहैं उनको और घृतसे देवे ॥ २१–३२ ॥

बालकोंको लंघनका निषेध।

उचितेलंघयेद्धात्रींशिशोर्नोक्तंविलंघनम् ॥
सर्वंनिवार्यतेबालेस्तन्यंनप्रतिवार्यते ॥ ३३ ॥

यदि किसीरोगमें लंघन कराना हो तो बालककी माता (दूधपिलानेवाली)को लंघन करावे, परंतु बालकको लंघन न करावे। बालकोंसे समस्त पदार्थ छुडादेवे परन्तु दूध न छुडावे।क्योंकि बालकका जीवन दूधकेही आश्रय होताहै ॥ ३३ ॥

जो बालक दूध न पीवे उसका यत्न।

बालोयश्चिराज्जातःस्तन्यंनगृह्णातितस्यसैंधवधात्री-
मधुघृतपथ्याकल्केनोद्घर्षयेज्जिह्वाम् ॥ ३४ ॥

जो थोडेदिनोंका बालक दूध न पीवे अर्थात् स्तनको मुखसे न दबावे तो सेंधानमक, आमले, हरड, और घी इनके कल्कसे जीभको मले ॥ ३४ ॥

बालकके ज्वरादिकोंकी चिकित्सा। (भद्रमुस्तादिक्वाथ सर्वज्वरोंपर)

भद्रमुस्ताभयानिंबपटोलमधुकैःकृतः ॥
क्वाथःकोष्णःशिशोरेषनिःशेषज्वरनाशनः ॥ ३५ ॥

नागरमोथा, हरड, निंब, पटोलपत्र, मुलेठी, इनका कियाहुवा काथ निवा या गर्म पीनेसे बालकोंके समस्त ज्वर नष्ट करताहै ॥ ३५ ॥

चतुर्भद्रकाथ व अवलेह ज्वरातिसारपर ।

घनकृष्णारुणाशृंगीचूर्णक्षौद्रेणसंयुतम् ॥
शिशोर्ज्वरातिसारघ्नंकासंश्वासंवमिंहरेत् ॥ ३६ ॥

नागरमोथा, पीपल, अतीस, काकडासिंगी इनके चूर्णको सहतमें मिलाके चटानेसे या काथके पीनेसे बालकका ज्वर, तिसार, खांसी, श्वास, वमन दूर होवे ॥ ३६ ॥

अन्ययोग ज्वरातिसारादिकोंपर ।

धातकीबिल्वधान्याकलोध्रेंद्रजववालकैः ॥
लेहःक्षौद्रेणबालानांज्वरातीसारवातनुत् ॥ ३७ ॥

धावेके फल, बेलकी गेरू, धनियाँ, लोध, इंद्रजौ, सुगंधवाला इनके चूर्णको सहतमें मिलाके चटानेसे बालकोंका ज्वर, तिसार और वातविकार नष्ट हों ॥ ३७ ॥

बृहतीफलमूलत्वक्कृष्णाग्रंथिकसंभवः ॥
तुगाक्षीरीयुतःकाथःपीतोहंतिशिशोर्वमिम् ॥
मूर्च्छाश्वासंज्वरंकासमतीसारंचपीनसम् ॥ ३८ ॥

बडीकटेरीके फूल और जडकी छाल, पीपल, पीपलामूल इनको काथ वंशलोचन डालकर पीनेसे बालकोंकी छर्दि, मच्छी, श्वास, ज्वर, खाँसी, अतीसार, पीनस ये सब दूर हों ॥ ३८ ॥

हरिद्राद्वययष्ट्याह्वसिंहीशक्रयवैःशृतम् ॥
शिशोर्ज्वरातिसारघ्नंश्वासकासवमिंहरेत् ॥ ३९ ॥

हलदी, दारुहलदी, मुलेठी, कटेरी, इंद्रजौ, इनका काथ पीनेसे बालकोंके ज्वर, अतिसार, श्वास, वमन, खाँसी दूर होतीहै ॥ ३९ ॥

धान्यमतिविषाशृंगीगजाह्वाश्लक्ष्णचूर्णितम् ॥
बालानांछर्द्यतीसारंमधुनाहंतिलेहनात् ॥ ४० ॥

धनियाँ, अतीस, ककडासिंगी, गजपीपल इनका चूर्ण करके सहत मिलाके चाटनेसे छर्दि अतिसार दूर हो ॥ ४० ॥

नागरातिविषामुस्तावालकेंद्रयवैःशृतम् ॥
कुमारंपाययेत्प्रातःसर्वातीसारनाशनम् ॥ ४१ ॥

सोंठ, अतीस, मोथा, नेत्रवाला, इंद्रजौ इनका क्काथ प्रातःकाल पीनेसे सब प्रकारके अतिसार दूर होतेहैं ॥ ४१ ॥

मोचारसःसमंगाचधातकीपद्मकेशरम् ॥
पिष्टैरेतैर्यवागूःस्याद्रक्तातीसारनाशनम् ॥ ४२ ॥

मोचरस, लज्जालुकी जड, धावेके फूल, कमलकीकेशर इनको पीसकर यवागू बनाकर पीनेसे रक्तातिसार नष्ट होताहै ॥ ४२ ॥

लाजासयष्टिमधुकाशर्कराक्षौद्रमेवच ॥
तण्डुलोदकयोगेनक्षिप्रंहंतिप्रवाहिकाम् ॥ ४३ ॥

धानकी खील, मुलैठी, मिसरी, सहत इनको मिलाकर चाटके ऊपरसे चावलोंका धोन पीनेसे प्रवाहिका शीघ्र नष्ट होतीहै ॥ ४३ ॥

शालपर्णीपृश्निपर्णीघोटात्वक्क्वथितंजलम् ॥
क्षौद्रयुक्तंत्रिदोषघ्नंसर्वातीसारनाशनम् ॥ ४४ ॥

शालपर्णी, पृश्निपर्णी, सुपारीकी छाल इनका क्काथ बनाकर सहत मिलाकर पीनेसे त्रिदोषके और सबप्रकारके अतिसार नष्ट होतेहैं ॥ ४४ ॥

खांसीपरयोग ।

पौष्करातिविषावासाकणाशृंगीरसंलिहेत् ॥
मधुनामुच्यतेबालःकासैःपञ्चभिरुत्थितैः ॥ ४५ ॥

पोहकरमूल, अतीस, बाँसा, पीपल, ककडासिंगी इनके क्काथमें सहत मिलाकर पीनेसे बालककी पांचप्रकारकी खाँसी दूर होतीहै ॥ ४५ ॥

मुस्तकातिविषावासाकणाशृंगीरसंलिहन् ॥
मधुनामुच्यतेबालःकासैःपंचभिरुच्छ्रितैः ॥ ४६ ॥

नागरमोथे, अतीस, बाँसा, पीपल, काकडासिंगी इनके काथमें सहत मिलाकर पीनेसे बालक पांचप्रकारकी बढीहुई खांसीसे छूटजाताहै ॥ ४६ ॥

व्याघ्रीसुमनसंजातकेशरैरवलेहिका ॥
मधुनाचिरसंजातान्‌शिशोःकासान्व्यपोहति ॥ ४७ ॥

कटेरीके फूलकी केशरको सहतमें मिलाकर चटानेसे बालककी बहुतदिनकी पुरानी खाँसी नष्ट होतीहै ॥ ४७ ॥

द्राक्षादिचूर्ण खाँसीश्वासपर ।

द्राक्षावासाऽभयाकृष्णाचूर्णंक्षौद्रेणसर्पिषा ॥
लीढंश्वासंनिहत्याशुकासंचतमकंतथा ॥ ४८ ॥

मुनक्का, बांसा, हरड, पीपल इनका चूर्ण सहत और घीमें मिलाके चाटनेसे बालकका श्वासरोग, खांसी, तमक, श्वास यह सब नष्ट होतेहैं ॥ ४८ ॥

कृष्णादुरालभाद्राक्षाकर्कटाख्यातुगाह्वया ॥
चूर्णितामधुसर्पिर्भ्यांलीढाहंतिशिशोर्गदान् ॥
श्वासंकासंसतमकंज्वरंवापिहरंपरम् ॥ ४९ ॥

पीपल, धमासा, द्राक्षा, काकडासिंगी, वंशलोचन इनका चूर्ण करके सहत और घी मिलाके चाटनेसे बालकके श्वास खाँसी तमक ज्वर आदि रोग नष्ट हों ॥ ४९ ॥

चूर्णंकटुकरोहिण्यामधुनासहयोजयेत् ॥
हिक्कांप्रशमयेत्क्षिप्रंछर्दिंचापिचिरोत्थिताम् ॥ ५० ॥

कटुकीका चूर्ण सहदमें मिलाके चाटनेसे बालककी हिचकी और देरकी छर्दिरोग नष्टहो ॥ ५० ॥

बालककी छर्दि और दूध निकालनेका यत्न ।

आम्रास्थिलाजासिंधूत्थंसक्षौद्रंछर्दिनुद्भवेत् ॥

आमकी गुठली, धानोंकी खील, सेंधानमक इनको सहतमें मिलाके चाटनेसे बालककी छर्दि दूर होतीहै ॥

पीतंपीतंवमेद्यस्तुस्तन्यंतंमधुसर्पिषा ॥ ५१ ॥
द्विवार्ताकीफलरसंपंचकोलंचलेहयेत् ॥
पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरम् ॥ ५२ ॥

जो बालक दूधको पीपीकर उलटी करदेवे उसको बडी और छोटी कटे-रीके फल तथा पंचकोल इनका चूर्ण करके सहद और घृतमें मिलाके चटावे तो दूध निकालना बंद हो अथवा पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ इनके चूर्णको सहत और घीसे चटावे ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

तृषापर ।

ह्रीबेरशर्कराक्षौद्रंलीढंतृष्णाहरंपरम् ॥ ५३ ॥

नेत्रवाला, खाँड, सहत इनको मिलाकर चाटनेसे बालककी प्यास दूर होतीहै ॥ ५३ ॥

अफारा और वातशूलपर ।

घृतेनसिंधुविश्वैलाहिंगुभार्ङ्गीरजोलिहन् ॥
अनाहंवातिकंशूलंहन्यात्तोयेनवाशिशोः ॥ ५४ ॥

सेंधानमक, सोंठ, इलायची, हींग, भारंगी इनके चूर्णको घृतमें मिलाके चटाकर ऊपरसे गर्मपानी पिलावे तो बालकका अफारा और बादीका शूल दूरहो ॥ ५४ ॥

मुखस्रावपर ।

सारिवातिललोध्राणांकषायोमधुकस्यच ॥
संस्राविणिमुखेशस्तोधावनार्थंसदाशिशोः ॥ ५५ ॥

सारिवा, तिल, लोध, मुलेठी इनका क्काथ बालकके मुखस्रावको दूर करनेकेलिये परमहितहै ॥ ५५ ॥

मूत्रावरोधपर ।

कणोषणासिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैंधवैःकृतः ॥
मूत्रग्रहेप्रयोक्तव्यःशिशूनांलेहउत्तमः ॥ ५६ ॥

पीपल, मिर्च, मिसरी, छोटीइलायची, सेंधानमक इन सबका चूर्ण सहतमें मिलाके चाटनेसे बालकोंका मूत्र खुलजाताहै ॥ ५६ ॥

नाभिशोथपर ।

मृत्पिंडेनाग्निवर्णेनक्षीरसिक्तेनसोष्मणा ॥
स्वेदयेदुत्थितांनाभिंशोथस्तेनोपशाम्यति ॥ ५७ ॥

एक मट्टीके पिंडको अग्निमें तपाकर लाल करलेवे, फिर अग्निसे निकाल कर दूधमें बुझावे, फिर कपडेमें लपेटकर सहता २ उठीहुई बालककी नाभिपर स्वेदन करे तो नाभिशोथ दूरहो ॥ ५७ ॥

नाभिपाकपर ।

दग्धेनछागशकृतानाभिपाकेवचूर्णनम् ॥
त्वक्चूर्णैःक्षीरिणांवापिकुर्याञ्चंदनरेणुना ॥ ५८ ॥
नाभिपाकेनिशालोध्रप्रियंगुमधुकैःशृतम् ॥
तैलमभ्यंजनंशस्तमेभिर्वाह्यवचूर्णनम् ॥ ५९ ॥

बकरीकी मेंगनोंको जलाकर उसका चूर्ण पकतीहुई नाभिपर लगावे अथवा क्षीरीवृक्षोंकी छालका चूर्ण, चन्दन और रेणुकाचूर्ण इनको मिलाकर नाभिपाकपर लगावे । अथवा हलदी, लोध, फूलप्रियंगु, मुलेठी इनके कल्कके द्वारा तेलको सिद्धकरके नाभिपर लगावे अथवा उपरोक्त ओषधिका चूर्ण बुरकनेसे नाभिपाक दूर होताहै ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

शोथपर ।

मुस्तंकूष्मांडबीजानिभद्रदारुकलिंगकान् ॥
पिष्टातोयेनसंलिप्तंलेपोयंशोथहृच्छिशोः ॥ ६० ॥

नागरमोथा, पेठेके बीज, देवदारु, इंद्रजव इनको जलमें पीसकर लेप करनेसे बालककी सूजन दूर होतीहै ॥ ६० ॥

मुखपाकपर ।

अश्वत्थत्वग्दलक्षौद्रैर्मुखपाकेप्रलेपयेत् ॥ ६१ ॥

पीपल वृक्षकी छाल और पत्ते पीसकर सहद मिलाके मुखमें लेप करनेसे बालकके मुखके छाले दूर होतेहैं ॥ ६१ ॥

अतिरोनेपर ।

पिप्पलीत्रिफलाचूर्णंघृतक्षौद्रपरिप्लुतम् ॥
बालोरोदतियस्तस्मैलेहंदद्यात्सुखावहम् ॥ ६२ ॥

पीपल और त्रिफलेके चूर्णको घी और सहतमें मिलाकर बालकको चटानेसे बालकका अति रोना बंद होताहै ॥ ६२ ॥

क्षतविसर्पादिकोंपर ।

पटोलत्रिफलारिष्टहरिद्राक्वथितंपिबेत् ॥
क्षतवीसर्पविस्फोटज्वराणांशांतयेशिशोः ॥ ६३ ॥

पटोलपत्र, त्रिफला, नीमकी छाल, हलदी, इनका क्वाथ पीनेसे बालकके घाव विसर्प फोडे ज्वर ये सब दूर होतेहैं ॥ ६३ ॥

सिध्मपामाविचर्चिकापर ।

गृहधूमनिशाकुष्ठराजिकेंद्रयवैःशिशोः ॥
लेपस्तक्रेणहंत्याशुसिध्मपामाविचर्चिकाम् ॥ ६४ ॥

घरका धूमासा, हलदी, कूठ, राइ, इंद्रजौ इनको छांछ मिलाके पीसकर लेप करनेसे बनरफ, खुजली, विचार्चिका दूर होतीहै ॥ ६४ ॥

ज्वरादिक व्याधियोंमें बडे पुरुषोंकी सदृश बालककीभी चिकित्सा ।

ज्वराद्याव्याधयःसर्वेवक्ष्यंतेमहतांतुये ॥
बालानामपितेतद्वद्बोद्धव्याभिषगुत्तमैः ॥ ६५ ॥

बडे मनुष्योंको जो व्याधियें वैद्यराजों (चरकादिकों) ने कहीहैं वोही बीमारियाँ बालकोंको होती हैं इसलिये सब बीमारियोंकी चिकित्सा बडे पुरुषोंवत् बालकोंकी भी अल्पमात्रासे करे। परन्तु दाहादिकृत्य बडे पुरुषोंकी सदृश न करे यह हम पहलेही कहचुकेहैं ॥ ६५ ॥

बडे पुरुषोंसें अलग कुछ बालकोंके रोग ।

बालानामेवयेरोगाभवंतिमहतांनच ॥
तालुकंटकमुख्यान्वैलेखयिष्येप्रयत्नतः ॥ ६६ ॥

जो रोग बालकोंको होतेहैं उनमेंसे कुछेक रोग ऐसेभीहैं जो केवल बालकोंकोही होतेहैं। युवादिक बडीअवस्थामें नहीं होते उन तालुकंटक आदि रोगोंको अब यत्नपूर्वक लिखतेहैं ॥ ६६ ॥

तालुकंटकनिदान ।

तालुमांसेकफःक्रुद्धःकुरुतेतालुकंटकम् ॥
तेनतालुप्रदेशस्यनिम्नतामूर्ध्निजायते ॥ ६७ ॥
तालुपातात्स्तनद्वेषःकृच्छ्रात्पानंशकृद्द्रवम् ॥
तृडक्षिकंठास्यरुजाग्रीवादुर्धरतावमिः ॥ ६८ ॥

तालुवेके मांसमें कफकुपित हुई तालुकंटक रोग करताहै उससे तालुवा नीचेको नमजावे अर्थात् काग लटकआवे । जिससे सिरमें गढासा पडजावे इसी-कारण बालक चूंवे नहीं । यदि स्तनचूंघेभी या दूधपीवे तो बडे कष्टसे पीवे, मल पतला पडजावे, तृषा लगे, नेत्र, कंठ, मुख इनमें पीडाहो गरदनको गेरदे और वमन हो ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

तालुकंटकका यत्न ।

हरीतकीवचाकुष्ठंकल्कंमाक्षिकसंयुतम् ॥
पीत्वाकुमारःस्तन्येनमुच्यतेतालुकंटकात् ॥ ६९ ॥

हरड, वच, कुठ इनके कल्कमें सहत मिलाकर माताके दूधसे पीवे तो तालुकंटक दूर हो ॥ ६९ ॥

तालुपाकका यत्न ।

तालुपाकेयवक्षारंमधुनाप्रतिसारणम् ॥ ७० ॥

तालुपाकरोगमें जवाखार सहतमें मिलाके तालुमें लगावे और मले॥७०॥

महापद्मनिर्णय ।

वीसर्पस्तुशिशोःप्राणनाशनःशीर्षबस्तिजः ॥
पद्मवर्णोमहापद्मरोगोदोषत्रयोद्भवः ॥
शंखाभ्यांहृदयंयातिहृदयाच्चगुदंव्रजेत् ॥ ७१ ॥

बालकके मस्तक और बस्तीमें प्रगट हुवा विसर्परोग बालकके प्राणोंको नष्ट करताहै । जो विसर्प लालकमलके समान लालवर्ण होताहै उस त्रिदोषो

इनको महापद्मरोग कहतेहैं । यह रोग कनपटीयोंमें उत्पन्न होकर हृदयपर्यंत जाताहै और उसीप्रकार बस्तीमें उत्पन्न होकर गुदामें गुदासे हृदयमें और हृदयसे शिरमें जाताहै । इसको महापद्म कहतेहैं ॥ ७१ ॥

महापद्मकी चिकित्सा ।

पटोलत्रिफलारिष्टहरिद्राक्कथितांपिबेत् ॥ ७२ ॥

पटोलपत्र, त्रिफला, नीम, हलदी इनका क्वाथ विसर्प और ज्वरको दूर करताहै ॥ ७२ ॥

लेप ।

सारिवोत्पलकह्लारभद्रश्रीमुस्तचंदनम् ॥
प्रपौंडरीकमंजिष्ठायष्टीमधुकसर्षपैः ॥
कुमाराणांप्रशस्तोयंलेपोवीसर्पनाशनः ॥ ७३ ॥

सारिवा, कमल, कमोदनी, चंदन, नागरमोथा, लालचंदन, पुण्डरीक, कमल, मँजीठ, मुलेठी इनको रगडकर लेप करनेसे बालकका विसर्प रोग दूर होताहै ॥ ७३ ॥

कुकूणकके लक्षण ।

कुकूणकःक्षीरदोषाच्छिशूनामेववर्त्मनि ॥
जायतेतेनतन्नेत्रंकण्डुरंचस्रवेन्मुहुः ॥ ७४ ॥
शिशोःकुर्याल्ललाटाक्षिकूटनासावघर्षणम् ॥
नशक्तोर्कप्रभांद्रष्टुंनवर्त्मोन्मीलनक्षमः ॥ ७५ ॥

दूधके दोषसे बालकोंकी पलकोंमें कुकूणरोग पैदा होताहै जिससे बालक नेत्रोंको खुजावे मले नेत्रोंसो पानी बहे, रसकीचडसे पानीके बारबार बहनेसे बालक मस्तक नाक आँख, इनको रगडे और धूपके सामने न देखसके, रास्तेमें चलते आंख न खोलसके इसको कुकूण (कोथुवा) रोग कहतेहैं॥ ७४॥ ७५॥

कुकूणका यत्न ।

द्विनिशालोध्रयष्टयाह्वरोहिणीनिंबपल्लवैः ॥
कुकूणकेहितावर्तिःपिष्टैस्ताम्ररजोन्वितैः ॥ ७६ ॥

हलदी, दारुहलदी, लोध, मुलेठी, कुटकी, नीमकेपत्ते, ताम्रभस्म इन सबको बकरीके दूधमें या साधारण जलमें खरल करके वत्तियें बनावे इसबत्तीको जलके संयोगसे रगडकर लगानेसे कुकूण दूरहो ॥ ७६ ॥

फलत्रिकंलोध्रपुनर्नवेचसशृंगबेरंबृहतीद्वयंच ॥
आलेपनंश्लेष्महरंसुखोष्णंकुकूणकेकार्यमुदाहरंति ॥ ७७ ॥

त्रिफला, लोध, पुनर्नवा, अदरख, बडी और छोटी दोनों कटेरी, इनको जलमें बारीक रगडकर कुछेक गरम करके लेप करनेसे कफ और कुकूणरोग दूरहो ॥ ७७ ॥

मनःशिलाशंखनाभिःपिप्पल्योथरसाञ्जनम् ॥
वर्तिःक्षौद्रेणसंयुक्ताबालसर्वाक्षिरोगनुत् ॥ ७८ ॥

मनसिल, शंखकी नाभि, पीपल, रसौत इन सबको पीसकर सहत मिलाके बत्ती बनावे अथवा जलसे खरल करके बत्ती बनाकर सहतमें घिसके बालकोंके नेत्रोंमें लगानेसे बालकोंके सबनेत्ररोग दूर होतेहैं ॥ ७८ ॥

तुण्डिरोग ।

वातेनाध्मापितानाभिःसरुजातुंडिरुच्यते ॥
नाभिशोथेचिकित्सावैलिखितंतुंडिरोगनुत् ॥ ७९ ॥

वायुसे बालककी नाभि फूल आवे और उसमें पीडाहो उसको तुंण्डिरोग कहतेहैं । इसका यत्न पीछे नाभिशोथकी चिकित्सामें लिखा वोही स्वेद इस रोगका नाशकहै ॥ ७९ ॥

गुदपाक ।

बालस्यगुदपाकाख्योव्याधिःपित्तेनजायते ॥ ८० ॥

पित्तसे बालककी गुदा पकजातीहै उसको गुदपाक कहतेहैं ॥ ८० ॥

यत्न ।

गुदपाकेतुबालानांपित्तघ्नींकारयेत्क्रियाम् ॥
रसांजनंविशेषेणपानालेपनयोर्हितम् ॥
शंखयष्ट्यांजनैश्चूर्णंशिशूनांगुदपाकनुत् ॥ ८१ ॥

बालकोंकी गुदापकनेमें पित्तनाशक क्रिया करे तथा रसौतके क्वाथको पीना और रसौतका गुदापर लेप करना या रसौतकी भस्म गुदापर बुरकाना, गुदापाकको दूर करताहै । अथवा शंख, मुलेठी, रसौत इनके चूर्णको पानीमें रगडकर लेप करना गुदपाकको दूर करताहै ॥ ८१ ॥

गुदव्रणोत्कटेकुर्याद्रक्तस्रावंजलौकसा ॥
क्षीरवृक्षकषायेणकिंचिदुष्णेनधावयेत् ॥ ८२ ॥
चंदनंशारिवेद्वेचशंखनाभिसमायुतम् ॥
पिष्ट्वामधुरकंवापिलेपोगुदव्रणंजयेत् ॥ ८३ ॥

यदि बालककी गुदामें उत्कट खराब किस्मका व्रण हो तो पहले उसपर जोंख लगाकर रक्त निकाल देवे फिर वट आदि क्षीरीवृक्षोंके क्वाथसे सहता २ धोवे परंतु जादे गर्मसे न धोवे । फिर चंदन, दोनों सारिवा, शंखकी नाभि इन सबको एकत्र पीसकर लेप करे अथवा मुलेठीको पीसकर लेप करे तो गुदाका दारुणव्रणभी दूर हो॥८२॥८३॥

पारिगर्भिक ।

मातुःकुमारोगर्भिण्याःस्तन्यप्रायःपिबन्नपि ॥
कासाग्निसादवमथुतंद्राकार्श्यारुचिभ्रमैः ॥
युज्यतेकोष्ठवृद्ध्याचतमाहुःपारिगर्भिकम् ॥ ८४ ॥

प्रायः गर्भवती माताका दूध पीनेसे बालकको खाँसी, मंदाग्नि, वमन, तंद्रा । कृशता, अरुचि, भ्रम, और पेटका बढजाना यहरोग होतेहैं। इनको पारिगर्भिक कहतेहैं, अपि शब्दसे विना माताके दूध पीयेभी यह रोग हो जाताहै ॥८४॥

पारिगर्भिकका यत्न ।

पारिगर्भिकरोगेतुयुज्यतेवह्निदीपनम् ॥ ८५ ॥

पारिगर्भिकरोगमें अग्निको दीपन करनेवाले पदार्थ देने ॥ ८५ ॥

चोरकरोग (कमेडे) ।

हत्वैकदातिशरणंवमनंतथैवआध्यानघूर्णनरुजंचशिशोर्विधाय ॥
यःश्वासमात्रपरिरक्षितजीवयोगाद्रोगावघूमिरुदितःसहिचोरनामा ८६

एक साथ बालकको दस्त, वमन, अफारा होजाय और आँखोंको घूरते २ जडताको प्राप्त होजाय । केवल किंचित् श्वासमात्र जीवयोगमें बाकी रहै और मरेकी समान दिखादेवे इस रोगको जाननेवाले वैद्य चोरक नाम रोग कहतेहैं ॥ ८६ ॥

चोरकरोगका यत्न ।

ब्राह्मीरसवचाकुष्ठशंखपुष्पीशृतंघृतम् ॥
पंचगव्यघृतंवाष्टमंगलंचोररोगनुत् ॥ ८७ ॥

ब्राह्मीका रस, वच, कूठ, शंखपुष्पी, इनके कल्कसे सिद्धकिया घृत अथवा पंचगव्यघृत अथवा अष्टमंगल जो आगे लिखेंगे इनमेंसे किसीएक घृतको निरंतर सेवन करनेसे चोरक रोग नष्ट होताहै ॥ ८७ ॥

लाक्षादिकंतुयत्तैलंलेपनेपरमंहितम् ॥ ८८ ॥

लाक्षादितैल जो आगे लिखेंगे इसकी निरंतर मालिश करना चोरकरोगको नष्ट करती है ॥ ८८ ॥

त्रिफलाव्योषकुष्ठाब्दयवक्षारफणिज्झकैः ॥
कल्कीकृतैरेभिर्द्रव्यैर्गजमूत्रेचतुर्गुणे ॥
साधितंनावनंतैलंचोरकेनाशनंपरम् ॥ ८९ ॥

त्रिफला, त्रिकूटा, कूठ, नागरमोथा, जवाखार, मरुवा इनका कल्क एक पाव तेल १ पाव हाथीका मूत्र १ सेर इनका सिद्धकिया तेल नस्य लेनेसे चोरक रोगको नष्ट करताहै ॥ ८९ ॥

बालानांमिष्टदानंचमहात्मनांचसेवनम् ॥
चोरकेतुह्यवश्यंवैबलिदानादिकंहितम् ॥ ९० ॥

बालकोंको मिठाई बाँटना, महात्मापुरुषोंकी सेवा करना और देवताओंको बलिदान करना यह सब चोरक रोगको नाश करते हैं ॥ ९० ॥

दंतरोगनिदान ।

दंतमूलाश्रितोवायुर्दन्तवेष्टान्विशोषयन् ॥
यदाशिशोःप्रकुपितोनोत्तिष्ठंतितदाद्विजाः ॥ ९१ ॥

बालकोंके दंतमूलमें स्थित जो वायु वह दंतवेष्टों(मसूडो)में प्राप्त होकर कुपितहुई शोषणकर्तीहुई दांतोंको पैदा होनेसे रोक देतीहै ॥ ९१ ॥

पृष्ठभंगेबिडालानांबर्हिणांचशिखोद्गमे ॥
दन्तोद्भवेचबालानांनहिकिंचिन्नदूयते ॥ ९२ ॥

पृष्ठभंगके समय बिलावोंके,शिखा निकलनेके समय मोरोंके,दांत निकलते समय बालकोंके प्रायः सब अंग पीडित होतेहैं ॥ ९२ ॥

दंतोद्भेदकका यत्न ।

दंतोद्भवेषुरोगेषुनबालमतियंत्रयेत् ॥
स्वयमप्युपशाम्यंतिजातदंतस्ययद्गदाः ॥ ९३ ॥

दांत निकलनेसमय जो रोग हो उनमें बालकको अतियत्नोंसे पीडित न करे। सिर्फ दांत सुखपूर्वक निकलनेका यत्न करे। क्योंकि दांत निकलनेबाद दांतोंके हुवे रोग स्वयंही शांत होजातेहैं ॥ ९३ ॥

दंतपालिंतुमधुनाचूर्णेनप्रतिसारयेत् ॥
धातकीपुष्पपिप्पल्योर्धात्रीफलरसेनवा ॥ ९४ ॥

चूनेमें सहत मिला दांतोंकी जडोंमें घिसनेसे दांत सुखपूर्वक निकलआते हैं। अथवा धावेके फूल, पिप्पली, आमलोंका रस इन तीनोंको मिलाके दंतपालीपर घिसनेसे दांत सुखपूर्वक पैदाहों अथवा धावेके फूलोंका चूर्ण सहदमें मिलाके मले अथवा पीपलका चूर्ण और आमलोंका चूर्ण सहदमें मिलाके दंतपालीपर मसलें तो दांत सुखपूर्वक पैदा होवें ॥ ९४ ॥

अकाल दंत उत्पन्नके दोष ।

जातस्यप्रथमेवाचाद्वितीयेतृतीयेथवा ॥
चतुर्थेपंचमेचैवषष्ठेवासप्तमेपिवा ॥ ९५ ॥
यस्यदंताःप्रजायंतेसदुष्टःकुलघातकः ॥
मातरंपितरंचैवक्रमाद्हन्याच्चभ्रातरम् ॥ ९६ ॥

जिस बालकके पैदाहोते ही दांत दिखाई देवें या प्रथम महीनेमें अथवा दूसरेमें हों वा तीसरेमेंहों अथवा चौथेमें हों उसको क्रमसे प्रथममें माता दूसरेमें

पिता तीसरेमें दोनों, चौथेमें भाईके नष्टकरनेवाला जानो । ऐसेही सातवें महीनेतक दाँतोका पैदा होना अशुभहै ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

प्रायश्चित्त ।

सदन्तोजायतेयस्तुदन्ताःप्राग्यस्यचोत्तराः ॥
कुर्वीततस्मिन्नुत्पातेशांतिकंसद्विजातिभिः ॥ ९७ ॥

जो बालक दांतोंसहित जन्मे अथवा पहले ऊपरले दांत जन्मे तो बुद्धिमान् ब्राह्मणोंको बुलाके शांतिकर्म यथाविधि करावे ॥ ९७ ॥

दांतनिकलनेका समय ।

अष्टमेनवमेचैवदशमेकादशेतथा ॥
द्वादशेत्रयोदशेचतथाचैवचतुर्दशे ॥
दंताश्चैवहिदृश्यंतेतदादंताःशुभावहाः ॥ ९८ ॥

यदि बालकके आठवें, नवमें, तथा दशमें, या ग्यारहमें अथवा बारहमें तेरमें या चौदहवें महीनेमें दांत निकलें तो शुभ जानने ॥ ९८ ॥

दंतदष्टरोगके लक्षण ।

रूक्षाशिनोहिबालस्यचालयत्यनिलःशिराः ॥
हन्वाशय्याप्रसुप्तस्यदंतैःशब्दंकरोत्यतः ॥ ९९ ॥

रूक्ष भोजन करनेवाले बालककी ठोडीकी शिरावोंमें वायु कुपित होकर सोतेहुवेके दांतोंसे कट २ शब्द होताहै इसको दंतदष्ट रोग कहतेहैं ॥ ९९ ॥

यत्न ।

कर्कटशाकविपक्वंक्षीरेणचरणतललेपनाद्धचिरात् ॥ दंतदष्टाग-
तशब्दंशमयतिबहुधैवदृष्टमिदम् ॥ १०० ॥

काकडासिंगी और सागोनके कल्कसे पकायाहुवा दूध पगतलोंमें लेपकरनेसे बालकोंका सोतेसमय दांत कटकटाना बंद होजाताहै ॥ १०० ॥

शोष (बालकोंकेकृशहोनेका वर्णन) ।

अत्यहःस्वप्नशीताम्बुश्लैष्मिकस्तन्यसेविनः ॥
शिशोःकफेनरुद्धेषुस्रोतस्सुरसवाहिषु ॥ १०१ ॥

अरोचकःप्रतिश्यायोज्वरःकासश्चजायते ॥
कुमारःशुष्यतिततःस्निग्धशुक्लमुखेक्षणः ॥ १०२ ॥
योपिद्वोवत्सरादूर्ध्वंबालोनोयातिपोषताम् ॥
मंदाग्निबहुविण्मूत्रोदृश्यमानास्थिपंजरः ॥ १०३ ॥

अतिशय दिनके शयनसे, व अत्यंत शीतल जलके अत्यंत पीनेसे कफ दुष्टहोकर दूधको बिगाडदेतीहै उस दूधके सेवनसे बालकके रस बहानेवाले स्रोत कफसे रुकजातेहैं फिर बालकको अरोचक पीनस ज्वर खाँसी उत्पन्न होकर आँखें मुख सफेद होजावे और बालक सूखजावे स्त्रियोंके वर्षपर्यंत पालनेपर भी बालक सूखताहीजावे अग्नि मंदहो पुरीष और मूत्र अधिक आवे इससे सूखकर अस्थिपंजर दीखनेलगे इसको शोष और कार्श्यरोग कहतेहैं ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥

कार्श्यकी चिकित्सा ।

पश्चात्तुभेषजंदद्यात्पूर्वंतंमृदुशोध्यच ॥
सैंधवव्योषशार्ङ्गेष्टापाठागिरिकदंबकान् ॥
शुष्यतोमधुसर्पिर्भ्यामरुच्यादिषुयोजयेत् ॥ १०४ ॥

पहले बालकको मृदु शोधन करके फिर औषधि देवे । सेंधानमक, त्रिकुटा, लताकरंज, पाठा, कदंब इनको सहद और घृतमें मिलाके चटावे ॥ १०४ ॥

अथवा ।

विदारीकंदगोधूमयवचूर्णंघृतप्लुतम् ॥
खादयेत्तदनुक्षीरंशृतंसमधुशर्करम् ॥ १०५ ॥

विदारीकंद गेहूं जौका सत्व इनको घृतमें मिलाके (पकाकर) खावे ऊपरसे सहद और मिसरीमिला दूध पीवे ॥ १०५ ॥

अथवा अश्वगंधादिघृत ।

पादकल्काश्वगंधायाःक्षीरेदशगुणेपचेत् ॥
घृतंपेयंकुमाराणांपुष्टिकृद्बलवर्द्धनम् ॥ १०६ ॥

असगंधके आठतोले कल्कको दशगुणे दूधमें डालकर आठतोला घृत सिद्ध करे । यह घृत पानकर्नेसे बालक पुष्ट और बलवान् होतेहैं ॥ १०६ ॥

लाक्षाद्यघृत अनेकरोगोंपर ।

लाक्षाकुष्ठविडंगानि सरलं रजनीद्वयम् ॥
सूक्ष्मैलापद्मकंलोध्रंपद्मकंनागकेशरम् ॥ १०७ ॥
दधित्थतुत्थशैरीपशैरीयंदालपत्रकम् ॥
घृतप्रस्थंपचेदेतैर्यावत्पाकंचगच्छति ॥ १०८ ॥
कीटाखुसर्पदष्टेषुस्फोटेषुविविधेषुच ॥
विसर्पेषुकुमाराणांलूतामूत्रकृतेषुच ॥
गण्डमालासुनारीषुसर्पिरेतद्यथामृतम् ॥ १०९ ॥

लाख, कूठ, वायविडंग, सरलधूप, हलदी, दारुहलदी, छोटीइलायची, पद्माख, लोध, कमल, नागकेशर, कैथ, तूतिया, सिरस, कटसरैया, लिसोडेके पत्ते प्रत्येक छै २ मासे सोलह गुने जलमें पकाकर चतुर्थांश रहनेपर एकसेर घृत सिद्ध करले । इस घृतके यथोचित मात्राके उपयोगसे, कृमी, आखुविष, सर्पविष, अनेक प्रकारके विस्फोटक, विसर्प, बालकोंके अनेक-रोग, लूता, मूत्रावरोध, गंडमाला स्त्रियोंके अनेक रोग दूर होवें,यह अमृतकी सदृश घृतहै ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

सामान्यतासे बालग्रहोंके कारण ।

कुलेषुयेषुनेज्यंतेब्राह्मणाःसाधवस्तथा ॥
निवृत्तशौचाचारेषुभग्नकांस्यगृहेषुच ॥ ११० ॥
यत्रदेवानपूज्यंतेतथापितृगणादयः ॥
तत्रआगत्यबालांस्तान्ग्रहाहिंसंत्यशंकिताः ॥ १११ ॥

जिनके कुलमें साधुब्राह्मणोंका पूजन नहीं होता, जिनके घरमें शुद्धताई उत्तम आचार नहीं तथा फूटेहुवे कांसेके बर्त्तनोंमें खातेहों जहाँ देवता और पितृगणोंका पूजन नहीं होता वहाँपर निश्शंक आकर ग्रह बालकोंको ग्रस लेतेहैं ॥ ११० ॥ १११ ॥

सामान्यतासे ग्रहजुष्टके लक्षण ।

क्षणादुद्विजतेबालःक्षणात्त्रस्यतिरोदिति ॥
नखैर्दंतैर्दारयतिधात्रीमात्मानमेवच ॥ ११२ ॥
ऊर्ध्वंनिरीक्ष्यतेदंतान्खादेत्कूजातिजृंभति ॥
भ्रुवौक्षिपतिदष्टौष्टःफेनंवमतिचासकृत् ॥ ११३ ॥
क्षामोतिनिशिजागर्तिशूनांगोभिन्नविट्स्वरः ॥
मत्स्यशोणितगंधश्चनचाश्नातियथापुरा ॥
दुर्बलोमलिनांगश्चनष्टसंज्ञोपजायते ॥ ११४ ॥

कभी क्षणभरमें विह्वलहो, कभीडरे, कभीरोवे, नखोंसे और दांतोंसे अपनेको और धायको खावे (काटे) ऊपरको देखे, दांत चबावे, किलकारीमारे, जंभाइयाँ लेवे भौंवोंको तिरछी करे होंठोंको काटे, मुखसे, बार २ झाग गेरे, और अत्यंत क्षीण होजावे,रातको सोवे नहीं, कहीं अंगमें सूजनहो । मल पतलाहो, स्वर बैठजावे, मच्छीकी और शोणितकी गंध, बालककी देहसे आवे, जैसे पहले खाता हो वैसा न खासके, दुर्बल और अंग मलिन हो संज्ञा नष्ट हो जावे यह ग्रहगृहीत बालकके लक्षणहैं ॥ ११२–११४ ॥

ग्रहजुष्टकी चिकित्सा ।

स्नान ।

सहामुण्डितिकोदीच्यक्काथस्नानंग्रहापहम् ॥ ११५ ॥

माषपर्णी, गोरखमुंडी, खस इनके क्काथ अर्थात् इनको उबालकर इनके जलसे स्नान करानेसे बालकके सब ग्रह दूर होतेहैं ॥ ११५ ॥

लेपन ।

सतच्छदामयानिशाचंदनैश्चानुलेपनम् ॥ ११६ ॥

सतवन, कूठ, हलदी,चन्दन इनका लेप करना ग्रहदोषको दूरकरे ११६॥

सर्वग्रहपर धूप।

रसोननिंबपत्राणिजतुवंशावलेखनम् ॥
सिद्धार्थनिंबपत्राणिवंशत्वग्जतुनासह ॥ ११७ ॥

सर्पनिर्मोककोशानिनिर्माल्यंगौरसर्षपाः ॥
धूपत्रयंससर्पिष्कमेतत्सर्वग्रहापहम् ॥ ११८ ॥

लहसुन, नीमकेपत्र, लाख, वंशलोचन इनकी अथवा सफेद सरसों, नीमके पत्ते, वंशलोचन, लाख इनकी धूनि अथवा साँपकी कांचली, जायफल, शिव निर्माल्य, सफेद सर्सों, इनकी इनतीनोंमेंसे कोइ एक घृतयुक्त धूप देवे तो बालकोंके सब ग्रहोंको दूर करताहै ॥ ११७ ॥ १८ ॥

सर्पत्वग्लशुनंमूर्वासर्षपारिष्टपल्लवाः ॥
बिडालविरडालोममेषशृंगीवचामधु ॥ ११९ ॥
धूपःशिशोर्ज्वरघ्नोयमशेषग्रहनाशनः ॥
बालशांतीष्टकर्माणिकार्याणिग्रहशांतये ॥ १२० ॥

सांपकी कांचली, लहसुन, मूर्वा, सरसों, नीमके पत्ते बिल्लीकीविष्ठा, बकरीके बाल, मेंढेका सींग, वच, सहत इनको खूब कूटकर चूर्ण बनाकर धूप देनेसे बालकोंका ज्वर और सबप्रकारके ग्रह शांतहो और बालकोंके ग्रहोंकी शांतिके लिये औरभी इष्टकर्म और बालशांति कराना चाहिये ॥ ११९ ॥ १२० ॥

बालरक्षाके मन्त्र ।

स्वस्तिकेसन्मुखःस्कंदोमहाभागाचरेवती ॥
दिशःसूर्योन्तरिक्षंचस्वस्तिकुर्वंतिसर्वदा ॥ १२१ ॥
तेजसाब्रह्मणश्चाथविष्णोरिन्द्रस्यतेजसा ॥
सिद्धानांतेजसाचैवरक्षितोस्मिन्सुखीभव ॥ १२२ ॥
मंत्रैरेतैःप्रकुर्वीतरक्षांबालस्यनित्यकम् ॥ १२३ ॥

इन मंत्रोंसे बालककी सदैव रक्षा करे तो ग्रहदोष शांतहो ॥ २१-२३ ॥

अष्टमंगल घृत ।

वचाकुष्ठंतथाब्राह्मीसिद्धार्थकमथापिवा ॥
सारिवासैंधवंचैवपिप्पलीघृतमष्टमम् ॥ १२४ ॥
सिद्धंघृतमिदंमेध्यंपिबेत्प्रातर्दिनेदिने ॥
दृढस्मृतिःक्षिप्रमेधाःकुमारोबुद्धिमान्भवेत् ॥ १२५ ॥

नपिशाचानरक्षांसिनभूतानचमातरः ॥
नबाधन्तेकुमाराणांपिबतामष्टमंगलम् ॥ १२६ ॥

बच, कूठ, ब्राह्मी, सफेदसरसों, सारिवा, सेंधानमक, पीपल, और आठवाँ गोघृत प्रत्येक औषधी छै २ मासे घृत २ छटांक दूध १ पाव जल १ पाव सबका यथाविधि घृत सिद्ध करे इस पवित्र घृतके नित्य प्रति पानकरनेसे बालक दृढस्मृतिवाला हो, धारणास्फूर्तिवालाहो, बुद्धिवान्हो और इस अष्ट मंगलघृतके पीनेसे पिशाच, राक्षस, भूत, मातृका आदि कोईभी बाधा नहीं करते ॥ १२४-१२६ ॥

लाक्षाद्य तैल ।

लाक्षारससमंतैलंसिद्धंमस्तुचतुर्गुणम् ॥
रास्नाचंदनकुष्ठाब्दवाजीगंधानिशायुतैः ॥ १२७ ॥
शताह्वादारुकुष्ठाह्वमूर्वातिक्ताहरेणुभिः ॥
बालानांज्वररक्षोघ्नमभ्यंगाद्बलवर्णकृत् ॥ १२८ ॥

तिल्लीका तेल १ सेर, लाखका रस १ सेर, दहीका जल ४ सेर, कल्कके लिये रास्ना, चंदन, कूठ, मोथे, असगंध, हलदी, शतावर, देवदारु, दारुहलदी, मुलेठी, मूर्वा, कुटकी, रेणुका प्रत्येक छै २ मासे इनके कल्कसे युक्त इस तेलको सिद्ध करके इस तेलकी मालिशसे बालकोंके सवप्रकारका ज्वर और राक्षस, ग्रह, दूर होकर बल और उत्तम वर्ण हो ॥ १२७ ॥ १२८ ॥

कुमारकल्याणघृत ।

शंखपुष्पीवचाब्राह्मीकुष्ठंत्रिफलयासह ॥
द्राक्षासशर्कराशुंठीजीवतीजीवकंबला ॥ १२९ ॥
शठीदुरालभाबिल्वंदाडिमंसुरसातथा ॥
मुस्तंपुष्करमूलंचसूक्ष्मैलागजापिप्पली ॥ १३० ॥
एषांकर्षसमैर्भागैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥
कषायेकंटकार्याश्चक्षीरंतस्माच्चतुर्गुणम् ॥ १३१ ॥

एतत्कुमारकल्याणंघृतरत्नंसुखप्रदम् ॥
बलवर्णकरंधन्यंकोष्ठाग्नेरतिवर्द्धनम् ॥ १३२ ॥
छायासर्वग्रहालक्ष्मीक्रमिदंतगदापहम् ॥
सर्वबालामयहरंदन्तोद्भेदेविशेषतः ॥ १३३ ॥

शंखपुष्पी, वच, ब्राह्मी, कठ, त्रिफला, द्राक्षा, मिसरी, सोंठ, जीवंती, जीवक, खरैटी, कचूर, धमासा, बेलगिरी, अनार, तुलसी, मोथा, पोहकर-मूल, छोटीइलायची, गजपीपल, इन प्रत्येक औषधियोंको एक २ तोला लेकर कल्क बनावे। गोघृत १ सेर लेवे दूध ४ सेर लेवे कटेरीके पंचांगका क्वाथ ४ सेर लेवे इन सबको मिलाके विधिपूर्वक घृत सिद्ध करे तो यह कुमारकल्याण घृत हुवा। यह कुमारकल्याणघृतरत्न धन्यहै। बालकोंको सुखदायक, बलवर्ण-कर्ता, कोठेकी अग्निको चैतन्य करनेवाला तथा छाया और सब प्रकारकी ग्रहकी बाधाको हरनेवाला, अलक्ष्मी, कृमी, दंत आदि रोगोंके हरनेवाला, बाल-कोंके सब रोग और विशेषकरके दन्तोद्भेदक रोगके हरनेवालाहै ॥ २९–३३ ॥

ब्रह्मचर्य।

एवंमहानुभावैश्चघृताद्यैर्वर्द्धितःशिशुः ॥
सुसंस्कृतोगुरुमुख्यैर्ब्रह्मचर्येसमास्थितः ॥ १३४ ॥
घृतवर्द्धितबुद्ध्याचजेताशास्त्रार्णवेहिसः ॥
बुद्धिंबलंसमासाद्यभाग्यवांश्चभविष्यति ॥ १३५ ॥

इसप्रकार इनमहानुभाव घृतके सेवन करनेसे वृद्धिको प्राप्त हुवा बालक गुरुजनोंसे शुद्ध सुसंस्कृत अर्थात् संस्कार कियाहुवा ब्रह्मचर्यमें स्थितहुवा उत्तम घृतसे वृद्धिको प्राप्तहुई बुद्धिवाला शास्त्ररूपीसमुद्र जीतनेवाला होताहै। तथा बुद्धिबलको प्राप्तहो भाग्यवान् होताहै ॥ १३४ ॥ १३५ ॥

इति श्रीशुभसंततियोगप्रकाशे बालरोग प्रतिषेधनीयो नाम दशमोध्यायः ॥ १० ॥

अथनानार्थविवेचनीयाध्यायंव्याख्यास्यामः ।

इसके उपरांत हम अनेक अर्थोंके विवेचनका अध्याय लिखतेहैं ।

रोग ज्ञानकी आवश्यकता ।

औषधंकेवलंकर्तुंयोजानातिनचामयम् ॥
वैद्यकर्मसचेत्कुर्यात् वधमर्हति राजतः ॥ १ ॥

जो लोग सिर्फ औषधीका उपयोग करतेहैं और रोग निदानको यथार्थ नहीं जानते यदि वोह कहीं वैद्यक करतेहों तो राजासे वधके योग्य होतेहैं॥ १॥

योग्यवैद्य ।

गुरोरधीताखिलवैद्यविद्यःपीयूषपाणिःकुशलःक्रियासु ॥
गतस्पृहोधैर्यधरःकृपालुःशुद्धोधिकारीभिषगीदृशःस्यात् ॥ २ ॥

जिसने संपूर्णवैद्यक विद्या गुरुके मुखसे पढीहो और अमृतके माफिक हाथवाला जिसको यश हो सब क्रियाओंमें कुशलहो, जो लोभ और ईर्ष्यादिसे रहितहो धैर्यधारीहो कृपालु, शुद्ध और अधिकारी हो वैद्य ऐसाही होना चाहिये ॥ २ ॥

औषधविज्ञानकी आवश्यकता ।

यथाविषंयथाशस्त्रंयथाग्निरशनिर्यथा ॥
तथौषधमविज्ञातंविज्ञातममृतंयथा ॥ ३ ॥

जो औषधि नामरूप गुण करके विनाजानीहै वह विष, शस्त्र, और अग्नि तथा वज्रके सदृश प्राणोंके हरनेवालीहै । ऐसेही सब तरहसे जानीहुई औषधिका यथोचित उपयोग अमृतके सदृश है ॥ ३ ॥

औषधिके योगसे और अयोगसे उपयोग ।

योगादपिविषंतीक्ष्णमुत्तमंभेषजंभवेत् ॥
भेषजं वापि दुर्युक्तंतीक्ष्णंसंपद्यतेविषम् ॥
तस्माद्विचार्यदातव्यंजीवितारोग्यकांक्षिणा ॥ ४ ॥

उत्तम योगसे देशकाल रोग औषध विचारकर विषका उपयोग अमृतकी सदृश रोग हरनेवाला होताहै और विनाविचारे बेयुक्ति उत्तम औषधिभी

दीहुई विष होजातीहै । इसलिये जीवन और आरोग्यताकी इच्छावालापुरु विचारकरही देश काल रोगादि जानकर औषधिका उपयोग करे ॥ ४ ॥

औषधिके लक्षण ।

वैद्योव्याधिंहरेद्येनतद्रव्यंप्रोक्तमौषधम् ॥ ५ ॥

जिसकरके वैद्य रोगको हरण करे उस द्रव्यको औषधिका कहतेहैं ॥ ५ ॥

उत्तम औषधिके लक्षण ।

प्रशस्तदेशेसंजातं प्रशस्तेहनिचोद्धृतम् ॥
अल्पमात्रंबहुगुणं गंधवर्णरसान्वितम् ॥ ६ ॥
दोषघ्नमग्लानिकरमधिकंनविकारियत् ॥
समीक्ष्यकालेदत्तंचभेषजंस्याद्गुणावहम् ॥ ७ ॥

जो औषधि उत्तम शुद्धभूमिमें उत्पन्न हुईहो और अच्छेदिन अच्छेममय उखाडीगईहो जो थोडीसी देनेपर बहुत गुणकरतीहो गंध वर्ण और रस युक्त हो, वातादि दोष नाशकहो जिसके सेवनसे ग्लानि नहो यदि अधिकमात्राका उपयोगभी होजाय तो विकार न करे ऐसी औषधिको देशकालादि देख देवे तो वह सुखकारी उत्तम होतीहै ॥ ६ ॥ ७ ॥

उपयोग ।

नवान्येवहियोज्यानिद्रव्याण्यखिलकर्मसु ॥
विनाविडंगकृष्णाभ्यांगुडधान्याज्यमाक्षिकैः ॥ ८ ॥

सब दवाइयां हरेक काममें नूतन लेनी चाहिये, परंतु विडंग, पीपल, गुड धनियाँ, घी, सहद ये पुरानेही डालने चाहिये ॥ ८ ॥

त्याज्यऔषधि ।

वल्मीककुत्सितानूपश्मशानोषरमार्गजाः ॥
जंतुवह्निहिमव्याप्तानौषध्यःकार्यसिद्धिकाः ॥ ९ ॥

साँप आदि जंतुवोंकी बिमी, दुष्टभूमि, जलप्रायस्थान, श्मशान, रास्ता और ऊषर भूमि इन्हमें पैदाहुई तथा कीडोंकी खाई, आगसे जली, पालेकी

मारीहुई जो औषधिहो वोह औषधि कार्यसाधक नहीं होती इसलिये ऐसी औषधिका कभी उपयोग नकरे ॥ ९ ॥

औषधिग्रहणविधि ।

गृह्णीयात्तानिसुमनाःशुचिःप्रातःसुवासरे ॥
आदित्यसंमुखोमौनीनमस्कृत्यशिवंहृदि ॥ १० ॥

प्रातःकाल स्नानादिसे शुद्ध होकर उत्तम पुण्य रविवारादि दिनमें शुद्ध-मन हो सूर्यके सन्मुख खडा होकर मौनधारण कियेहुवे हृदयमें शिवको प्रणामकर दवाईको ग्रहण करे अर्थात् उखाडकर लावे ॥ १० ॥

योगविधान ।

अंगेनुक्तेजटाग्राह्याभागेनुक्तेखिलंसमम् ॥
पात्रेनुक्तेमृदःपात्रंकालेनुक्तेत्वहर्मुखम् ॥ ११ ॥

जहाँपर औषधिका अंग नकहाहो वहांपर जड लेनी चाहिये, जहाँ औषधियोंको तोल न कहाहो वहाँ सब औषधियाँ बराबर लेनीचाहिये, जहां पात्र न कहाहो वहाँ मिट्टीका पात्र लेनाचाहिये, जहाँ समय नकहाहो वहां प्रातःकाल लेना चाहिये ॥ ११ ॥

सूखी गीली औषधिका वर्णन ।

शुष्कंनवीनद्रव्यंतुयोज्यंसकलकर्मसु ॥
आर्द्रंतुद्विगुणंयुंज्यादेषसर्वत्रानिश्चयः ॥ १२ ॥

सब दवाइयां सूखी और नईलेनी चाहिये, यदि गीली हो तो दुगुनी डाले यह सामान्यतासे सबजगे निश्चय जानना ॥ १२ ॥

गुडूचीकुटजोवासाकूष्माण्डश्चशतावरी ॥
अश्वगंधासहचराशतपुष्पाप्रसारिणी ॥
प्रयोक्तव्याःसदैवार्द्राद्विगुणानैवकारयेत् ॥ १३ ॥

गिलोय, कुडा, बाँसा, कूष्मांड, शतावर, असगंध, कटसरैया, सौंफ, प्रसारिणी, ये सदा गीलीही लेनी चाहिये परन्तु दुगुनी नहीं डालनी ॥ १३ ॥

घृतंतैलंचपानीयंकषायंव्यंजनादिकम् ॥
पक्त्वाशीतीकृतंत्नोष्णंतत्सर्वस्याद्विषोपमम ॥ १४ ॥

घृत, तैल, और पीनेके द्रव्य या जल, क्वाथ तथा व्यंजनादिक भोजनादिक पदार्थ जो पकाकर ठंढा होगयाहो उसको फिर गर्म नकरे, फिर आगपर गर्म करनेसे ये पदार्थ विषकी सदृश होजातेहैं ॥ १४ ॥

प्रसंगाल्लिखितंकिंचिदौषधिग्रहणंविधिः ॥ १५ ॥

प्रसंगवश यहाँपर औषधि ग्रहणकी विधिभी थोडीसी लिखदईहै ॥ १५ ॥

मान (तोल) वर्णन ।

प्रयोगकार्यसिद्ध्यर्थंमानमत्रोच्यतेमया ॥
यवोष्टसर्षपैःप्रोक्तोगुंजास्यात्तच्चतुष्टयम् ॥ १६ ॥
षड्भिश्चरक्तिकाभिःस्यान्माषकोहेमधानकौ ॥
माषैश्चतुर्भिःशाणःस्याद्धरणःसनिगद्यते ॥ १७ ॥
टंकःसएवकथितस्तद्द्वयंकोलउच्यते ॥
क्षुद्रकोवटकश्चैवद्रंक्षणःसनिगद्यते ॥ १८ ॥
कोलद्वयंतुकर्षःस्यात्सप्रोक्तःपाणिमानिका ॥
करमध्योहंसपदोसुवर्णंकवलग्रहः ॥ १९ ॥
उदुंबरंचपर्यायैःकर्षमेवनिगद्यते ॥
स्यात्कर्षाभ्यामर्द्धपलंशुक्तिरष्टमिकातथा ॥ २० ॥
शुक्तिभ्यांचपलंज्ञेयंमुष्टिराम्रंचतुर्थिका ॥
पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतिभ्यांतथांजलिः ॥ २१ ॥
कुडवोर्धशरावःस्यात्कुडवाभ्यांचमानिका ॥
शरावोष्टपलंतद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः ॥ २२ ॥
शरावाभ्यांभवेत्प्रस्थःचतुःप्रस्थैस्तथाढकः ॥
चतुर्भिराढकैर्द्रोणोद्रोणाभ्यांशूर्पउच्यते ॥ २३ ॥
शूर्पाभ्यांचभवेद्द्रोणीखारीद्रोणीचतुष्टयम् ॥
चतुःसहस्रपलिकासएवत्वधिकाचसा ॥ २४ ॥

पलानांद्विसहस्रंचभारएकःप्रकीर्तितः ॥
तुलापलशतंज्ञेयमेपसर्वत्रनिश्चयः ॥ २५ ॥

औषधिप्रयोगकी सिद्धिके अर्थ हम यहां मानपरिभाषाभी लिखदेतेहैं ।

८ सर्सोंका १ यव (जौ) होताहै । ४ जवोंकी १ गुंजा (रत्ती) होती है । ६ रत्तिका एक मासा इसको हेम और धानकभी कहतेहैं । ४ मासेका एक शाण होताहै । इसको धरण और टंक कहतेहैं । २ टंकका १ कोल होताहै । उसको क्षुद्रकेवटक, द्रंक्षणभी कहतेहैं । २ कोलका १ कर्ष होताहै। उसको पाणी और मानिका, करमध्य, हंसपद, सुवर्ण, कवलग्रह, उदुंबरभी कहतेहैं । २ कर्षका अर्धपल उसको शुक्ति और अष्टमिका कहतेहैं । २ शुक्तिका १ पल होताहै । इसको मुष्टी, आम्र, चतुर्थिकाभी कहतेहैं । २ पलोंकी १ प्रसृति होतीहै । २ प्रसृतियोंकी १ अंजलि होतीहै, इसको कुडव, अर्धशरावभी कहतेहैं । २ कुडवोंकी १ मानिका होतीहै, इसको शराव और अष्टपलभी कहतेहैं । २ शरावोंका १ प्रस्थ होताहै । ४ प्रस्थोंका १ आढक होताहै । ४ आढकोंका १ द्रोण होताहै । २ द्रोणोंका शूर्प होताहै । २ शूर्पोंकी १ द्रोणी होतीहै । ४ द्रोणियोंकी १ खारी होतीहै । १ खारी ४०८६ पलकी होतीहै । २००० पलका १ भार होताहै ॥ १०० पलकी तुला संज्ञाहै, यही क्रम सबजगे जानना ॥ १६—२५ ॥

मानंचात्रलिपीकृत्यक्रमंक्राथादिलिख्यते ॥ २६ ॥

यहांपर औषधियोंके तोलज्ञानके वास्ते मान तो लिख चुकेहैं । अब क्राथ आदि औषधि बनानेका क्रम लिखतेहैं ॥ २६ ॥

क्राथके पंचप्रकार ।

स्वरसश्चतथाकल्कःक्राथश्चहिमफांटकौ ॥
ज्ञेयाःकषायाः पंचैतेलघवःस्युर्यथोत्तरम् ॥ २७ ॥

स्वरस तथा कल्क, क्राथ, हिम,और फांट ये पांचप्रकारके क्राथ होते हैं । इनमें स्वरससे कल्क, कल्कसे क्राथ उत्तरोत्तर हलके होतेहैं ॥ २७ ॥

स्वरस ।

आहृतात्तत्क्षणात्कृष्टाद्द्रव्यात्क्षुण्णात्समुद्भवेत् ॥
वस्त्रनिष्पीडितोयश्चस्वरसोरसउच्यते ॥ २८ ॥

जो उत्तम पवित्र तुरंतकी लाईहुई गीली औषध पीसकर कपटमें निचोडकर रस निकाले उसको स्वरस और रस कहतेहैं ॥ २८ ॥

स्वरसकी मात्रा ।

स्वरसस्यगुरुत्वाच्चपलमर्द्धंप्रयोजयेत् ॥
निशोषितंचाग्निसिद्धंपलमात्रंसंपिबेत् ॥ २९ ॥

स्वरस और काथोंकी अपेक्षा गुरु होनेसे दो तोला पीना चाहिये और स्वरस न मिलनेपर सूखी औषधिके चूर्णको आठ गुने जलमें पकाकर चतुर्थावशेष रहनेपर चार तोलेकी मात्रासे उपयोग करे (यह मात्रा युवापुरुषके लियेहैं) बालकोंकी मात्रा बालचिकित्सामें लिखचुकेहैं ॥ २९ ॥

स्वरसमें प्रक्षेपका मान ।

सितामधुगुडक्षाराञ्जीरकंलवणंतथा ॥
घृतंतैलंचचूर्णादीन्कोलमात्रान्प्रयोजयेत् ॥ ३० ॥

मिसरी, खांड, सहत, गुड़, क्षार जीरा, नमक, घी, तेल, और चूर्ण आदि काथमें हों तो आधातोला (६ मासे) डाले ॥ ३० ॥

कल्कविधि ।

द्रव्यमार्द्रंशिलापिष्टं शुष्कंवासजलंभवेत् ॥
प्रक्षिप्यगालयेद्वस्त्रेतन्मानंकर्षसंमितम् ॥ ३१ ॥

गीली औषधिको बारीक रगडे सूखी हो तो जलके संयोगसे पीसे अच्छी तरह पीसकर पतलेसे वस्त्रमें छानले (कोई नहींभी छानते): इसको कल्क कहतेहैं । इसकी मात्रा १ तोलाकी है ॥ ३१ ॥

काथविधि ।

पानीयंषोडशगुणंक्षुण्णेद्रव्यपलेक्षिपेत् ॥
मृत्पात्रेक्काथयेद्ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् ॥ ३२ ॥

क्षोदोतुपलंयावद्द्यात्षोडशिकंजलम् ॥
ततस्तुकुडवंयावत्तोयमष्टगुणंभवेत् ॥ ३३ ॥
चतुर्गुणमतश्चोर्ध्वंयावत्प्रस्थादिकंजलम् ॥
तज्जलंपाययेद्धीमान्कोष्णंमृद्वग्निसाधितम् ॥३४॥
शृतःक्वाथःकषायश्चनिर्यूहःसनिगद्यते ॥
मात्रापलमिताज्ञेयात्रिभिरक्षैस्तथैवच ॥ ३५ ॥

४ चार तोला औषधिको जौकूटकर १६ गुना जल डालकर मिट्टीके बर्तनमें पकावे । जब आठवाँ भाग रहे तो नीचे उतारकर छान लेवे । यदि १ तोलासे ४ तोले तक औषधि हो तो १६ गुना जल डालके पकावे । और ४ तोलेसे १ पावतक आठगुणा जल डालके पकावे । और १ पावसे लेकर १ सेर पर्यंत चारगुना जल डालके पकावे।यह क्वाथके जलडालनेकी विधिहै । इसको मंद आँचसे पकावे और छानकर मंदोष्ण होनेपर पीवे।इसको शृत, क्वाथ, कषाय, निर्यूहभी कहतेहैं । मात्रा इसकी ४ या ३ तोलेकी है ॥ ३२–३५॥

हिम ।

क्षुण्णंद्रव्यंपलंसम्यक्षड्भिर्नीरपलैःप्लुतम् ॥
निशोषितंहिमःसस्यात्तथाशीतकषायकः ॥
तस्यमानंमतंपानेपलद्वयमितंबुधैः ॥ ३६ ॥

कुटीहुई ४ तोला औषधिमें छैगुना जल डाले और रात्रिभर धरारहने देवे, प्रातःकाल छानले इसको हिम कहतेहैं । इसीको मथ लेनेसे मंथभी कहाजाताहै । मात्रा इसकी आठतोलेकी है ॥ ३६ ॥

फांटविधि ।

क्षुण्णेद्रव्यपलेसम्यक्जलमुष्णंविनिःक्षिपेत् ॥ ३७ ॥
मृत्पात्रेकुडवोन्मानंततस्तुस्रावयेत्पटात् ॥
सस्याच्चूर्णद्रवःफांटस्तन्मानंद्विपलोन्मितम् ॥ ३८ ॥

४ तोला औषधिको कूटकर गर्मजल १६ तोले डालकर मट्टीके पात्रमें भिगो देवे। जब दवाई भीगजावे तो वस्त्रमे छान ले इसको फांट और चूर्ण द्रवभी कहते हैं, इसकी मात्रा ८ तोलेकी है ॥ ३७॥ ३८ ॥

औषधिपानकी विधि ।

पिबेत्प्रसन्नहृदयःपीत्वापात्रमधोमुखम् ॥
विधायाचम्यसलिलंतांबूलाद्युपयोजयेत् ॥ ३९ ॥

प्रसन्नमन होकर बैठके औषधि पीकर पात्रको उलटा करके अर्थात औंधा धरदे, फिर जलसे कुल्ला करके कपडेसे हाथ मुख पोंछकर पानकी बीडी इला-यची आदि मुखशोधक वस्तु चबावे ॥ ३९ ॥

घृततैलसाधनसामान्यविधि ।

कल्काच्चतुर्गुणीकृत्यघृतंवातैलमेवच ॥
चतुर्गुणेद्रवेसाध्यंतस्यमात्रापलोन्मिता ॥ ४० ॥

औषधियोंके कल्कसे चारगुणा घी अथवा तेल डालकर घत वा तेलसे चारगुणा दूध आदि (जो जिसजगे योग्यहो) डालकर पकावे, घृतमात्र शेष रहनेपर सिद्ध जाने । ऐसेही तैलमात्र शेष रहनेपर तेल सिद्धजाने । मात्रा घृतपानकी चार तोलेकी पूर्ण मात्राहै ॥ ४० ॥

संधान ।

द्रवेषुचिरकालस्थंद्रव्यंयत्संधितंभवेत् ॥
आसवारिष्टभेदैस्तुप्रोच्यतेभेषजोचितम् ॥ ४१ ॥

जो वस्तु द्रव (पतले पानिआदि) पदार्थोंमें डालकर कुछदिन (जबतक उसका खमीर न उठे) धरिरहनेदे। फिर उसका कोई पदार्थ बनावे, इसको संधान कहतेहैं । वह आसव और अरिष्टोंके भेदोंसे उचित औषधोंसे दो-प्रकारका है ॥ ४१ ॥

आसव और अरिष्ट ।

यदपक्वौषधांबुभ्यांसिद्धंमद्यंसआसवः ॥
अरिष्टःक्वाथसाध्यःस्यात्तयोर्मानंपलोन्मितम् ॥ ४२ ॥

कच्ची औषधिको कच्चेजलसे जो मद्यकी तरहसे औषधियोंकी मद्यहो उसको आसव कहतेहैं । जो जल और औषधि पकाकर फिर संधान बनाकर मद्य खींचे वह अरिष्ट होताहै । आसव और अरिष्ट मद्यकेही भेदहैं । मादक अर्थात् जिससे नसा होजाय उसको मद्य कहतेहैं । विना नसेके आसव और अरिष्ट होतेहैं । मात्रा आसव और अरिष्टकी चार तोलेकी है ॥ ४२॥

आरोग्यताकी आवश्यकता ।

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यंमूलमुत्तमम् ॥
तद्रक्षणायकर्त्तव्यंविधिःशास्त्रोक्तसेवनम् ॥ ४३ ॥

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इनके साधनकी आरोग्यता (तन्दुरुस्ती) ही उत्तम कारणहै । इसलिये आरोग्यताकी रक्षाकेवास्ते शास्त्रमें कही विधिका सेवन करना चाहिये ॥ ४३ ॥

निवेदन ।

पश्यंतांप्रथमंखंडंशुभंसंततिदायकम् ॥
गार्हस्थ्यसुखदंचैवषंढादिदोषनाशनम् ॥ ४४ ॥

प्रिय सज्जनो ! शुभ और सुंदर संतानदायक तथा गृहस्थके सुखोंकेदेनेवाला और नपुंसकादि पुरुषोंके दोष वंध्यत्वादि स्त्रियोंके दोषोंके हरने वाला यह "प्रथमखंड" देखिये ॥ ४४ ॥

इति श्रीशुभसंततियोगप्रकाशे प्रथमखंडे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

इति प्रथमखंडः ।

सोरठा–आयुर्वेद अपार, याको नाहिं कछु अंतहै ॥
लिखा बुद्धिअनुसार, हितकारक संतानप्रद ॥ १ ॥
समुझिशास्त्रअनुकूल, प्रथम खंड पूरित कियो ॥
यामें जो प्रतिकूल, निरखि क्षमा बुधजन करें ॥ २ ।

इत्यल्पार्थबोधिनीभाषायां प्रथमः खंडः ।

इति

शुभसन्ततियोगप्रकाशे

प्रथमखंडः समाप्तः ।

ॐ

श्रीमत्सन्ततियोगप्रकाशे-

द्वितीयः खंडः ।

नमस्तस्मैमहेशायसर्वतंत्रमयायच ॥
करोत्याम्नायशब्दंवडमरुर्यस्यहस्तगः ॥ १ ॥

जिन महादेवके करकमलमें डमरू वेदमयी ध्वनि कररहा है, उन सर्व तंत्रमय महेशको नमस्कार है ॥ १ ॥

आयुःकामयमानेनधर्मार्थसुखसाधनम् ॥
आयुर्वेदोपदेशेषुविधेयः परमादरः ॥ २ ॥

धर्म, अर्थ तथा सुखके साधनरूप आयुकी कामनावाले मनुष्यको आयुर्वेद अर्थात् वैद्यकशास्त्रके उपदेशमें परम आदर करना चाहिये ॥ २ ॥

नगरीनगरस्येवरथस्येवरथी सदा ॥
स्वशरीरस्यमेधावीकृत्येष्ववहितोभवेत् ॥ ३ ॥

जैसे नगरका रक्षक नगरकी और रथवान् रथकी सर्वदा सब तरहसे सावधानी रखताहै इसी तरह मनुष्यकोभी देहकी रक्षाके लिये सदैव सावधानीसे वर्ताव करना चाहिये ॥ ३ ॥

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यंमूलमुत्तमम् ॥
रोगास्तस्यापहर्त्तारःश्रेयसोजीवितस्यच ॥ ४ ॥

धर्म, अर्थ,काम और मोक्ष इनका मूल (कारण) आरोग्यताही है। और रोग उस आरोग्यता (तन्दुरुस्ती) के हरनेवाले हैं तथा कल्याण और जीवनके हरनेवाले हैं ॥ ४ ॥

वायुःपित्तंकफश्चेतित्रयोदोषाःसमासतः ॥
विकृताऽविकृतादेहंघ्नंतितेवर्त्तयन्तिच ॥ ५ ॥

वायु-पित्त-कफ-संक्षेपसे प्रायःतीनही दोष हैं । यह तीनों पृथक् २ या दो तथा तीन मिलकर जब अपनी साम्यावस्थामें गिरजातेहैं अर्थात् विकार को प्राप्तहोजातेहैं (बढ़जांय या कम हो जावे या स्थानमें हटजावे) तब यह दोष देहको जीवितसे हीन करतेहैं । और साम्य अर्थात् अनुकूल स्वभाव वाले होनेसे देहको स्वस्थ अर्थात् आरोग्यता युक्त रखतेहैं ॥ ५ ॥

दोषोंके लक्षण ।

तत्ररूक्षोलघुःशीतःस्वरःसूक्ष्मश्चलोऽनिलः ।

उन दोषोंमें वायु-रूक्ष (रूखा)-हलका-स्वर सूक्ष्म-चलनेके स्वभाव वाला है ॥

पित्तंसस्नेहतीक्ष्णोष्णं लघुविस्रंसरंद्रवम् ॥ ६ ॥

पित्त चीकनाईयुक्त तीक्ष्ण-गर्म–हलका-मत्स्यगंधयुक्त-सर अर्थात् नीचे ऊपर चलनेकी शक्तिवाला स्थिर होके न रहनेवाला और द्रव अर्थात् पतला होताहै ॥ ६ ॥

स्निग्धःशीतोगुरुर्मन्दः श्लक्ष्णोमृत्स्नःस्थिरः कफः ।

चिकना-शीतल–भारी-मंद-श्लक्ष्ण-पिच्छिल-स्थिर कफ होताहै ।

संसर्गः सन्निपातश्च तद्द्वित्रिक्षयकोपतः ॥ ७ ॥

अपने प्रमाणसे बढ़कर या न्यून होकर जो दो दोषोंका संयोगहै वह संसर्ग कहा जाताहै । और तीनों दोषोंका प्रमाणसे कम तथा ज्यादा होकर संयोगहोना सन्निपात कहाजाताहै ॥ ७ ॥

रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणिधातवः ॥
सप्तदूष्यामलामूत्रशकृत्स्वेदादयोऽपि च ॥ ८ ॥

रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य ये सात धातुवे हैं । शरीरके धारणकरनेसे धातु कहीजातीहै । और ये ही सात दूषितभीहैं । क्योंकि वायु आदि तीनदोषहैं (दूषयन्तीति दोषाः) जो दूषित करेंवे दोष होतेहैं । वाय्वादि दोष सात धातुवोंको दूषित करतेहैं और रसादि सातधातुवें दूषण पात्र होनेसे

दूष्य कही जातीहैं । और मूत्र पुरीष स्वेद आदि मल कहेजातेहैं यहभी दूष्य हैं ॥ ८ ॥

वृद्धिःसमानैःसर्वेषांविपरीतैर्विपर्ययः ॥ ९ ॥

तुल्यस्वभाववाले पदार्थोंसे धातुआदिकोंकी वृद्धि होतीहै और विरुद्ध स्वभाववाले पदार्थोंसे क्षीणता होतीहै ॥ ९ ॥

६ रस ।

मधुराम्ललवणकटुतिक्तकषायाःक्रमशःषड्रसाः ॥ १० ॥

मीठा खट्टा नमकीन चरपरा कडुवा कषैला ये क्रमसे छै ६ रसहैं॥ १०॥

प्रकारांतरसे ।

रसाःस्वाद्वम्ललवणकटुतिक्तकषायकाः ॥
षड्द्रव्यमाश्रितास्तेतुयथापूर्वंबलावहाः ॥ ११ ॥

मीठा, खट्टा, लवण, कटु (चरपरा) तिक्त, (कडुवा) और कषाय, (कषेला) ये छैरसहैं । पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाशके आश्रयहैं अर्थात इनमें रहतेहैं और पूर्वरस परकी अपेक्षा अधिक बलकारकहै । जैसे मधुररस सबरसोंसे अधिक बलदायकहै और कषाय सबसे कम बलकारकहै इसीतरह परकी अपेक्षासे पूर्व बलवान् जानना ॥ ११ ॥

कफवातौवातकफौवातःपित्तंचवृद्धिशमौ ॥
त्रिभिराद्यैस्त्रिभिरंत्यैस्त्रिभिराद्यपरैस्तदन्यैश्च ॥ १२ ॥

कफ और वायु आदिके तीन (मीठा खट्टा लवण) रसोंसे वृद्धि और शांतिको प्राप्तहोतेहैं अर्थात् मधुर, अम्ल, लवणसे कफ वृद्धिको प्राप्त होताहै और वायु शांतिको प्राप्त होताहै, इसीतरह कटु, तिक्त, कषायसे वायु वृद्धिको प्राप्त होताहै और कफ शांतिको प्राप्त होताहै । और पित्त अम्ल लवण कटु इन तीनरसोंसे वृद्धिको और तिक्त कषाय मधुर इन तीनों रसोंसे शांतिको प्राप्त होताहै ॥ १२ ॥

प्रत्येकरसका वर्णन ।

आद्यंमध्यंनयत्यंत्यंमधुराद्याःशमेतरौ ॥
आद्यंमध्यांत्यमाद्यंचमध्यकांतिममंतिमम् ॥ १३ ॥

आद्यंमध्यंचमध्यांत्यमात्रमध्यांतिमंक्रमात ॥
आद्यंदोषंरसाःप्रायःप्रयोगपरिशीलिताः ॥ १४ ॥

अतिसेवनसे मधुरादि छहों रस क्रमसे दोषोंको शांत और कुपित करतेहैं। जैसे, मधुर रस वायु और पित्तको शांत करताहै और कफको कुपित करताहै।२ अम्लरस वायुको शांत करताहै, पित्त कफको कुपित करताहै। ३ नमकीन रस वायुको शांत करताहै और पित्त तथा कफको कोप करताहै। ४ चरपरा रस कफको शान्त और वातपित्तको कुपित करताहै। ५ कड़वा रस पित्त कफको शांत और वायुको कुपित करताहै। ६ कषैला रस पित्त कफको शांत करताहै वायुको कुपित करताहै ॥ १३ ॥ १४ ॥

शमनंकोपनंस्वस्थहितंद्रव्यमितित्रिधा ॥
उष्णशीतगुणोत्कर्षात्तत्रवीर्यंद्विधास्मृतम् ॥ १५ ॥

शमन कोपन स्वस्थहित इन भेदोंसे द्रव्य तीन प्रकारका है। १ जो द्रव्य दोष धात्वादि बढे हुवोंको शांत करे वह शमन कहाजाताहै। २ जो द्रव्य कुपितकरे वह कोपनकहाजाताहै। ३जो द्रव्यदोष धात्वादिकोंको स्वास्थ्य रखने वाला और हितहो सो स्वस्थहित कहाजाताहै, इसप्रकार द्रव्य ३ प्रकारकाहै और उष्ण और शीत इन दो गुणोंके उत्कर्षसे वीर्य दोप्रकारकाहै अर्थात गुरु आदि २० गुणोंमें उष्ण और शीतके उत्कर्षसे शीतवीर्य और उष्णवीर्य दोही प्रकारका है (क्योंकि अग्निसोमात्मकं जगत्) तात्पर्य यहहै कि द्रव्य शीतवीर्य और उष्णवीर्य होनेसे वीर्य दो तरहका होताहै ॥ १५ ॥

त्रिधाविपाकोद्रव्यस्यस्वाद्वम्लकटुकात्मकः ॥ १६ ॥

द्रव्यका स्वादु अम्ल कटुक इन तीन किस्मका विपाक होताहै अर्थात् ६ रस होतेहुवेभी जठराग्निसे पककर मीठा, खट्टा, कड़ुवा, इसप्रकारसे द्रव्यका ३ प्रकारका विपाक होताहै ॥ १६ ॥

कफपित्तानिलाःपूर्वमध्यान्तेषुव्यवस्थिताः ॥
देहाऽहोरात्रिवयसांसंधिष्वपिकफानिलौ ॥ १७ ॥

देह, दिन, रात्रि, अवस्था इनके पूर्व मध्य अंतमें क्रमसे कफ, पित्त, वायु, प्रबल होताहै अर्थात् इनके पूर्वभागमें कफ,मध्यभागमें पित्त, अंत्यभागमें वायु प्रबल होताहै और संधियोंमें कफ और वायु पूर्व संधिमें कफ और दूसरीमें वायु प्रबल होताहै ॥ १७ ॥

तैर्भवेद्विषमस्तीक्ष्णोमंदश्चाग्निःसमैःसमः ॥

वायु पित्त कफ इनसे मनुष्यकी जठराग्नि क्रमसे विषम तीक्ष्ण और मंद होतीहै। वायुके उत्कर्षसे विषम पित्तके उत्कर्षसे तीक्ष्ण कफके उत्कर्षसे मंद और इनकी साम्यावस्था होनेसे समजठराग्नि होतीहै ॥

कोष्ठःक्रूरोमृदुर्मध्योमध्यःस्यात्तैःसमैरपि ॥ १८ ॥

इसीप्रकार मनुष्यका कोष्ठ वायुके उत्कर्षसे क्रूर,पित्तके उत्कर्षसे मृदु और कफसे मध्य कोष्ठ होताहै और सब दोषोंकी साम्यावस्थामेंभी कोष्ठ मध्यही होताहै ॥ १८ ॥

कालार्थकर्मणांयोगाहीनमिथ्यातिमात्रकाः ॥
सम्यग्योगश्चविज्ञेयोरोगारोग्यैककारणम् ॥ १९ ॥

काल (अर्थात् शरदी गरमी वशात्) अर्थ (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) कर्म(क्रिया काया वाणी मनकी चेष्टा)इनके हीनयोग और मिथ्यायोग अतियोगके होनेसे रोग होताहै और इनका सम्यक् योग आरोग्यताका कारणहै १९॥

निजागन्तुविभागेनतत्ररोगाद्विधास्मृताः ॥
तेषांकायमनोभेदादधिष्ठानमपिद्विधा ॥ २० ॥

दोषज और आगंतुक रोग दोप्रकारके होतेहैं (वातादि दोषके कोपसे जो रोग हो वह निज कहाजाताहै । क्योंकि वातादि पहले विषम होकर फिर पीछे रोग पैदा होताहै, इसलिये दोषज कहा जाताहै, और आगंतुक पहले होकर पीछे दोष कुपित करताहै। उन रोगोंका शरीर और मनके भेदसे अधिष्ठान दो प्रकारकाहै। ज्वरादि रोगोंका शरीर अधिष्ठान है और राग द्वेषादिकोंका मन अधिष्ठान है ॥ २० ॥

शरीरजानांदोषाणांक्रमेणपरमौषधम् ॥
बस्तिर्विरेकोवमनंतथातैलंघृतंमधु ॥ २१ ॥

शरीरमें होनेवाले रोगोंकी परमौषधी क्रमपूर्वक बस्ति विरेचन वमन तेल घृत शहद कहेहैं अर्थात् वातरोगमें बस्ती स्नेह क्वाथादि पित्तरोगमें विरेचनद्वारा पित्त निकालना कफका वमन करानाही औषधि है ॥ २१ ॥

धीधैर्य्यात्मादिविज्ञानंमनोदोषौषधंपरम् ॥

बुद्धि, धैर्य्य, आत्मादिकोंका विशेष ज्ञानही मनसे उत्पन्न रोगोंकी परमौषधि है ॥

भिषग्द्रव्याण्युपस्थातारोगीपादचतुष्टयम् ॥ २२ ॥

वैद्य औषधि सेवक रोगी ये चिकित्साके चार पाद हैं । इन चारोंके योग्य होनेसे असाध्यभी साध्य होसक्ताहै ॥ २२ ॥

असाध्यके लक्षण ।

अमर्मोपहितेदेशेशिरासंध्यस्थिवर्जिते ॥
विकारोयोऽनुपर्येतितदसाध्यस्यलक्षणम् ॥ २३ ॥

मर्मोपहित स्थानसे अन्यत्र और शिरासंधि अस्थियोंसे अतिरिक्त जो विकार व्याप्त नहो, अर्थात् मर्मस्थानिक शिरा और सन्धियोंमें तथा अस्थियोंमें व्याप्त हो तो यह असाध्यका लक्षण है ॥ २३ ॥

इति श्रीशुभसंततियोगप्रकाशे द्वितीयखंडे रसादिविज्ञानीया नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथातोवमनविरेचनविधिंव्याख्यास्यामः ॥

अब हम वमन विरेचनकी विधिका व्याख्यान करतेहैं ॥

दोषाःक्षीणाबृंहयितव्याःकुपिताःप्रशमयितव्याः
समाःपरिपाल्याइतिसिद्धांतः ॥ १ ॥

बढेहुवे दोषोंको बढाना और कुपितहुवे दोषोंको शांत करना अतिबढे हुओंको निकाल देना तथा जो समान हो (ठीकहो) उनकी रक्षा करना यही वैद्यकशास्त्रका सिद्धान्तहै ॥ १ ॥

प्राधान्येनवमनविरेचनेवर्ततेतेनिर्हरणेदोषाणांतस्मात्तयोर्विधा-
नमुपधारयउच्यमानम् इतिहोवाचधन्वन्तरिःसुश्रुताय ॥ २ ॥

और दोषोंके शोधन करनेमें प्रधानतासे वमन और विरेचनही मुख्यहै। इनके विधानको वर्णन करताहूं । इसको सुनो और धारण करो (याद रक्खो) ऐसे भगवान् धन्वन्तरिजीने शुश्रुतसे कहा ॥ २ ॥

तथातुरंस्निग्धंस्विन्नमभिष्यंदिभिराहारैरनववद्धदोषमवलोक्य
श्वोवमनंपाययितास्मीतिसंभोजयेत् तीक्ष्णाग्निंबलवंतंबहुदोषं
महाव्याधिपरीतंवमनसात्म्यंच ॥ ३ ॥

जब रोगीको बलवान् तथा तीक्ष्णाग्नि और बहुत दोषोंसे व्याप्त महाव्याधियोंसे पीडित और वमनके योग्य देखे तब स्नेहन स्वेदन कराकर ऐसा समझे कि कल इसको वमन करावेंगे तो उस रोगीको अभिष्यंदि भोजन करावे ॥ ३ ॥

पेशलैर्विविधैरन्नैर्दोषानुत्क्लेश्यदेहिनः ॥
स्निग्धस्विन्नायवमनंदत्तंसम्यक्प्रवर्तते ॥ ४ ॥

पहले अनेक प्रकारके पतले भोजन कराके दोषोंको उखाडकर पतले करके स्नेहन स्वेदन जिसे करा चुके हों उस पुरुषको वमनकारक औषधि खूब वमन लातीहै ॥ ४ ॥

अथापरेद्युःपूर्वाह्णेसाधारणेकालेवमनद्रव्यकषायकल्कचूर्णस्ने-
हानामन्यतमस्यमात्रांपाययित्वावामयेत् ॥ यथायोगंकोष्ठवि-
शेषमवेक्ष्यासात्म्यबीभत्सदुर्गंधदुर्दर्शनानिच वमनानि विद-
ध्यात् ॥ ५ ॥

फिर दूसरे दिन साधारण कालमें (शरदवशते) पहरदिन चढे वमनकारक औषधियोंका क्वाथ या कल्क या चूर्ण अथवा घृत तैलादिमेंसे किसी एककी यथोचित मात्रा पिलाकर वमन करावे । और यथायोग कोठेको देखकर (मृदु या करडा) फिर ग्लानिकारक दुर्गंधित जो बुरी दीखें ऐसी वस्तुका उपयोग करे ताके मन उछलकर वमन शीघ्र होजावे ॥ ५ ॥

अतोविपरीतविरेचनानि विदध्यात ॥ ६ ॥

और विरेचनमें इससे उलटा उपयोग करे अर्थात विरेचन औषधि पिलाकर सुंदर सुगंधित औषधियोंका उपयोग करे ताकि ओकारि न आवे ॥ ६ ॥

तत्रसुकुमारंकृशंबालंवृद्धंभीरुंवावमनसाध्यपुतिकारिणक्षीरदधि-तक्रयवागूनामन्यतममाकंठंपाययेत । पीतौषधंचपाणिभिरग्नि तप्तैः प्रतप्यमानंमुहूर्त्तमुपक्षेत ॥ ७ ॥

जो किसी सुकुमार हलके नाजुक तथा दुबले को अथवा बालक वृद्ध तथा डरपोकको वमन कराने लायक रोगहो अर्थात् ऐसा रोगहो जो वमनमें ठीक होसक्ताहो इन्हें दूध, दही, छाछ, यवागू आदि कोई पदार्थ कंठतक पेटभरकर पिलादेवे फिर अग्निसे हाथ तपाकर जरा सेके और दो घड़ी पर्यंत वमनकी राह देखे ॥ ७ ॥

तस्यचस्वेदप्रादुर्भावेनशिथिलतामापन्नंस्वेभ्यः स्थानेभ्यः प्रचलितंकुक्षिमनुसृतंजानीयात्ततःप्रवृत्तहल्लासंज्ञात्वाजानुमात्रासनोपविष्टमाप्तैर्ललाटपृष्ठपार्श्वयोःकंठेचपाणिभिः सुपरिगृहीतमंगुलीगंधर्वहस्तोत्पलनालानामन्यतमेनकंठमभिस्पृशंतंवामयेत्तावद्यावत्सम्यग्वांतलिंगानीति ॥ ८ ॥

जब उसको (जिसने वामक दवाई पी) पसीना आनेसे शिथिलता प्राप्त होने लगे और कुक्षि अपने स्थानसे उकसी हुई और उभरीसी जानी जावे और उबकाई आनेलगे तब रोगीको घुटनोंके सहारे बैठाकर दूसरा बुद्धिमान् मनुष्य उसके शिर पीठ तथा पसवाडे हाथोंसे थाम लेवे और उंगली या अरंडके पत्तेकी डंडी अथवा कमलकी डंडीसे वमन कराता करनेवालेके कंठमें स्पर्श कराकर वमन कराता रहे। जबतक ठीक २ वमन होजानेके लक्षण जाने जावें तबतक वमन कराता रहे ॥ ८ ॥

हीनाधिकवमनके लक्षण ।

कफप्रसेकं हृदयाविशुद्धिं कंडूंच दुश्छर्दितलिंगमाहुः ॥
पित्तातियोगंचविसंज्ञितांचहृत्कंठपीडामपिचातिवांते ॥ ९ ॥

मुखसे बार २ कफ गिरे, हृदय शुद्ध नहो अर्थात् भारी रहे, कंठमें खाजसी हो; ये हीनवमनके लक्षणहैं और पित्तका अधिक योग हो, मूर्च्छा होजावे हृदय तथा कंठमें पीडा होवे ये अतिवमनके लक्षण हैं ॥ ९ ॥

ठीक वमनके लक्षण ।

पित्तंकफस्यानुसुखप्रवृत्तंशुद्धेषुहृत्कंठशिरःसुचापि ॥
देहेलघुत्वंकफसंस्रवेचास्थितेसुवांतंपुरुषंव्यवस्येत् ॥ १० ॥

ठीक वमन होनेके ये लक्षणहैं । कफके पीछे पित्त गिरे, हृदय कंठ शिर ये शुद्ध होजाके शरीर हलका जानपडे, कफका आना बंद होजावे तो सम झो कि शुद्ध वमन होगया ॥ १० ॥

वमनके अंतमें धूमपान ।

सम्यग्वांतंचैनमभिसमीक्ष्यस्नेहनविरेचनशमनानांधूमानाम-
न्यतमंसामर्थ्यतःपाययित्वाऽऽचारिकमादिशेत् ॥ ११ ॥

जब ठीक वमन होचुकाहो तब स्नेहन या विरेचन अथवा शमन औषधियोंका यथोचित धूवाँ पान कराकर उचित आहार विहारका उपदेश करे ११

ततोपराह्णेशुचिशुद्धदेहमुष्णाभिरद्भिःपरिसिक्तगात्रम् ॥
कुलत्थमुद्गाढकिजांगलानांयूषैरसैवाप्युपभोजयेत्तु ॥ १२ ॥

जब वमन ठीक हो चुके और देह शुद्ध होजावे तो दोपहर पीछे गरम जलसे हाथ मुँह धोकर शरीर धुलवाकर कुलथी मूँग अरहड़ आदि यूष खावे॥ १२॥

वमन करनेके गुण ।

कासोपलेपस्वरभेदनिद्रातंद्रास्यदौर्गंध्यविषोपसर्गाः ॥
कफप्रसेकग्रहणीविकारानसंतिजंतोर्वमतःकदाचित् ॥ १३ ॥

शुद्ध वमन होनेसे खांसी, कण्ठमें कफका लिपटना, आवाजका बैठना, अतिनिद्रा, तंद्रा, मुखकी दुर्गंधि, विषका संसर्ग, मुखसे लार वहना, ग्रहणीके विकार, वमनसे तत्काल नष्टहोजातेहैं ॥ १३ ॥

वमनके अयोग्य मनुष्य ।

नवामयेत्तैमिरिकोर्ध्ववातगुल्मोदरप्लीहकृमिश्रमार्तान् ॥

स्थूलक्षतक्षीणकृशातिवृद्धमूत्रातुरान्केवलवातरोगान् ॥ १४ ॥
स्वरोपघाताध्ययनप्रसक्तदुश्छर्दुःकोष्ठतृडार्तबालान् ॥
ऊर्ध्वास्रपित्तक्षुधितातिरूक्षगर्भिण्युदावर्तिनिरूहितांश्च ॥ १५ ॥

इतने मनुष्योंको वमन न करावे। तिमिररोगी, ऊर्ध्ववात, गुल्म, प्लीहा, कृमि, इन रोगोंवालेको श्रमसे पीडितको, अतिस्थूलको, उरःक्षतवालेको, क्षीण, दुर्बल, अतिवृद्ध, मूत्ररोगवालेको जिनको केवल वातरोगहो ॥ १४ ॥ जिनका स्वर नष्ट होगयाहो, जो पढते घोषतेहो, जिनको कष्टसे वमन होताहो, जिनका कोठा करडा हो, जिनको अधिक प्यास लगीहो, और बालकको तथा जिनका ऊर्ध्वगत रक्तपित्तहो, क्षुधातुरको, अतिरूक्षको, गर्भवतीको, उदावर्तवालेको, जिनके निरूहणबस्ति कियाहो ऐसे पुरुषोंको कभी वमन न करावे ॥ १५ ॥

अवम्यवमनाद्रोगाःकृच्छ्रतांयांतिदेहिनाम् ॥
असाध्यतांवागच्छन्तितस्माद्वाम्यास्ततःस्मृताः ॥ १६ ॥

जो वमनके योग्य मनुष्य नहींहैं उनको वमन करानेसे उनके रोग कष्टसाध्य अथवा असाध्यही होजातेहैं। इसलिये जो वमनको योग्य नहो उसको कभी वमन न करावे ॥ १६ ॥

एतेप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेचविषातुराः ॥
अतीवचोल्बणकफास्तेचस्युर्मधुकांबुना ॥ १७ ॥

यदि ये मनुष्य अजीर्ण अथवा विषसे पीडित होवे या अति कफ बढीहुई हो तो यदि ऐसेको वमन कराना हो तो मुलेठीके क्वाथसे वमन करावे॥ १७॥

वमनके योग्य।

वाम्यास्तु विषशोषस्तन्यदोषविषमंदाग्न्युन्मादापस्मारश्लीपदार्बुदविदारिकामेदोमेहगरज्वरारुच्यपच्यामातिसारहृद्रोगचित्तभ्रमविसर्पविद्रध्यजीर्णमुखप्रसेकहृल्लासश्वासकासपीनसपूतिनासकण्ठोष्ठवक्त्रपाककर्णस्रावाधिजिह्वोपजिह्विकागलशुंडिकाधःशोणितपित्तिनःकफस्थानेषुविकारेष्वन्येषुकफव्याधिपरीतेष्विति ॥ १८ ॥

इतने मनुष्योंको वमन कराना उचितहै। जैसे विषखाये हुवेको तत्काल वमन करावे। शोषरोगके आरम्भमें, दोषयुक्त दूधवाली स्त्रीको, विषमाग्निमें, मदांग्निमें, उन्मादरोगमें, अपस्मारमें श्लीपद, रसौली, विदारिका, मेदरोग, प्रमेह,

गर(कृत्रिमविष), ज्वर, अरुचि, अपचि, आमातिसार, हृद्रोग, चित्तभ्रम, विसर्प, विद्रधि, अजीर्ण, मुँहसे लारगिरना, उबकाई, श्वास, खाँसी, पीनस, कण्ठ होठ मुख पकना, कान बहना, अधिजिह्व, उपजिह्व, गलशुंडि, अधोगत रक्तपित्त, इन रोगोंमें तथा कफके स्थानके अन्य रोगोंमें और कफकी व्याधियोंमें वमन कराना परमोत्तम है ॥ १८ ॥

विरेचनविधि ।

विरेचनमपिस्निग्धस्विन्नायवांतायचदेयम्। अथातुरंश्वोविरेचनंपा
यितास्मीतिलघुभोजयेत् फलाम्लमुष्णोदकंचैनमनुपाययेत्
अपरेह्नीर्विगतश्लेष्माणमावेक्ष्यमृदुक्रूरमध्यकोष्ठंचावेक्ष्योचितौ
षधमात्रांप्रयच्छेत ॥ १९ ॥

विरेचनभी स्नेहन, स्वेदन, वमन, कराकर देना चाहिये। जब ऐसा जानेकि, कल इसको विरेचन करानाहै तो रात्रिको हलका भोजन कराकर फलोंकी खटाई और गर्मपानी ऊपरसे पान करावे। फिर दूसरेदिन जब श्लेष्म पककर निकलगयाहो, कोठेमें आगयाहो ऐसा देखकर और मृदु क्रूर मध्य कोठेको देखकर यथोचित औषधिकी यथोचित मात्राका प्रयोग करे ॥ १९ ॥

पीतौषधश्चतन्मनाःशय्याभ्याशेविरिच्यते ॥

औषधि पीकर उसी तर्फ मन लगारक्खे और आरामीसे लेटारहे शय्याके पासही दस्त जावे ॥

विरेचनंपीतवांस्तुनवेगान्धारयेद्बुधः ॥
निवातशायीशीतांबुनस्पृशेन्नप्रवाहयेत् ॥ २० ॥

विरेचनकी औषधि पीकर दस्तोंके वेगको न रोके, निर्वात स्थानमें शिरके नीचे सिराहना रखकर नरम बिछानेपर आरामसे लेटे या बैठे, ठंडे पानीका और बड़ी वस्तुका स्पर्श न करे और जादा जोर लगाकर किनछेभी नहीं॥ २०॥

यथाचवमनेप्रसेकौषधकफपित्तानिलाःक्रमेणगच्छंति
एवंविरेचनेमूत्रपुरीषपित्तौषधकफाइति ॥ २१ ॥

जैसे वमनमें पहले लार फिर औषध फिर कफ फिर पित्त सबके पीछे वायु क्रमसे निकलतेहैं इसीप्रकार विरेचनमें पहले मूत्र मल फिर पित्त फिर औषध फिर कफ ऐसे निकलतेहैं ॥ २१ ॥

दुर्विरिक्त और अतिविरिक्त ।

स्याद्दुर्विरिक्तेकफपित्तकोपोदाहोरुचिर्गौरवमग्निसादः ॥
हृत्कुक्ष्यशुद्धिःपरिदाहकंडूविण्मूत्रसंगश्चनसद्विरिक्ते ॥
मूर्च्छागुदभ्रंशकफातियोगाःशूलोद्गमश्चातिविरिक्तलिंगम् ॥२२॥

दस्तोंके ठीक न आनेसे ये लक्षण होतेहैं—कफ और पित्तका कोप, दाह अरुचि, भारीपन, अग्निकी मंदता, हृदय और कुक्षीमें भारीपन, तथा जलन खाज और मलमूत्रका रुकना ये ठीक दस्त न होनेसे होतेहैं । और जो अधिक दस्त होजावे अर्थात् अनुमानसे जादा दस्त होनेसे मूर्च्छा, कांचका निकलना कफ और पित्त अधिक निकले और शूल हो ये अतिविरिक्तके लक्षणहैं २२ ।

सम्यग्विरिक्तके लक्षण ।

गतेषुदोषेषुकफान्वितेषुनाभ्यालघुत्वेमनसश्चतुष्टौ ॥
गतेनिलेचाप्यनुलोमभावंसम्यग्विरिक्तंमनुजंव्यवस्येत ॥ २३ ॥

विरेचनके ठीक होजानेसे ये लक्षण होतेहैं।कफके संग मिले सबदोष निकलजावें, नाभिके समीप हलकापनहो, मन प्रसन्नहो, वायु अनुलोम होकर अधोवायुका निःसरण ठीकहो, ये लक्षण ठीक दस्तहोजानेकेहैं ॥ २३ ॥

मंदाग्निमक्षीणमसद्विरिक्तंनपाययेत्तादहनितत्रपेयाम् ॥
क्षीणंतृडार्तंसुविरेचितंचतन्वीमशीतांलघुपाययेत्ताम् ॥ २४ ॥

जिसकी अग्नि मंदहो तथा बहुत क्षीण नहो, जिसको विरेचन ठीक न हुवाहो तो उसको उसदिन पेया न देवे और जो क्षीणहो,तृषासे पीडितहो, जिसको विरेचन ठीक होचुकाहो,उसको हलकी निवाई थोडी पेया पिलादेवे२४।

पेयालक्षण ।

चतुर्दशगुणेनीरेरक्तशाल्यादिभिःकृता ॥
द्रवाधिकास्वल्पसिक्थापेयाप्रोक्ताभिषग्वरैः ॥ २५ ॥

लालशाठी,मूँग आदि पदार्थको चतुर्दश १४गुणे जलमें पकावे।जब पककरठीक होजावे पानी अधिकरहे और अन्न उसमें कमहो उसको श्रेष्ठवैद्योंने पेयाकहाहै२५

उत्तमविरेचनकेगुण ।

बुद्धेःप्रसादंबलमिंद्रियाणांधातुस्थिरत्वंबलमग्निदीप्तिम् ॥

---

१ किंतु खिचडीआदि हलका अन्न देवे।

चिरात्रपाकंवयसाकरोतिविरेचनंसम्यगुपास्यमानम् ॥ २६ ॥

उत्तम विरेचनका होना, बुद्धिको प्रसन्न करताहै इंद्रियोंको बलवान् करताहै, धातुवोंमें स्थिरता करताहै, शरीरके बल और जठराग्निको दीप्त करताहै, और बुढापा जल्दी नहीं आनेदेताहै ॥ २६ ॥

विरेचनके अयोग्य पुरुष ।

मंदाग्न्यतिस्नेहितबालवृद्धस्थूलाःक्षतक्षीणभयोपतप्ताः ॥
श्रांतस्तृडार्तापरिजीर्णभुक्तोगर्भिण्यधोगच्छतियस्यचासृक् ॥ २७ ॥
नवप्रतिश्यायमदात्ययौचनवज्वरीयाचनवप्रसूता ॥
शल्यार्दिताश्चाप्यविरेचनीयाःस्नेहादिभिर्येत्वनुपस्कृताश्च ॥ २८ ॥

इतने मनुष्योंको विरेचन न करावे। मंदाग्निवालेको, जिसने अत्यंत स्नेहपान कियाहो, बालकको, वृद्धको, अतिस्थूल शरीवालेको, क्षतक्षीणको, भयातुरको, थकितको, तृषासे पीडितको, जिसको भोजन न पचाहो, तथा गर्भिणी स्त्रीको, जिसके अधोमार्गसे रक्त गिरताहो, नये प्रतिश्याय वालेको, मदात्यय रोगवालेको, नवीनज्वरवालेको, थोडेदिनकी प्रसूताको, चोटआदिसे व्याकुलको, तथा जिसने स्नेहन और स्वेदन न कियाहो, इतने पुरुषोंको विरेचन न करावे॥ २७॥ २८॥

अत्यर्थपित्ताभिपरीतदेहान्विरेचयेत्तानपिमंदवीर्यैः ॥
विरेचनैर्यांतिनराविनाशमज्ञप्रयुक्तैरविरेचनीयाः ॥ २९ ॥

यदि इन उपरोक्त मनुष्योंके शरीरमें अत्यंत पित्त बढा हुवाहो और विना विरेचनके शांत न होसके तो इनकोभी हलकी औषधियोंसे युक्तिपूर्वक विरेचन करावे । क्योंकि जो विरेचनयोग्य पुरुष नहीं है वे मनुष्य मूर्ख लोगोंके दियेहुवे विरेचनोंसे विनाशको प्राप्त होतेहैं ॥ २९ ॥

विरेचनके योग्यपुरुष ।

विरेच्यास्तुज्वरगरारुच्यर्शोऽर्बुदोदरग्रंथिविद्रधिपाण्डुरोगापस्मारहृद्रोगवातरक्तभगंदरच्छर्दियोनिरोगाविसर्पगुल्मपक्वाशयरुग्विबंधविषूचिकालसकमूत्राघातकुष्ठविस्फोटकप्रमेहानाहप्लीहशोफवृद्धिशस्त्रक्षतक्षाराग्निदग्धदुष्टव्रणाक्षिपाककाचतिमिराभिष्यंदशिरःकर्णाक्षिनासास्यगुदमेढ्रदाहोर्द्ध्वरक्तपित्तक्रामिकोष्ठिनःपित्तस्थानजेषुविकारेष्वन्येषुचपैत्तिकव्याधिपरीता इति ॥ ३० ॥

इतने मनुष्योंको विरेचन देना चाहिये । जीर्णज्वर, गर, अरुचि, बवासीर, रसौलि, उदररोग, ग्रन्थि, विद्रधि, पांडुरोग, अपस्मार, हृदयरोग, वातरक्त, भगंदर, छर्दि, योनिरोग, विसर्प, गुल्म, पक्काशयके रोग, बंध, विषूचिका, अलसक, मूत्ररुकना, कुष्ठ, विस्फोटक, प्रमेह, अफारा, प्लीह-वृद्धि, शोथ, अंडवृद्धि, शस्त्रका घाव, क्षाराग्निसे जलेहुवे, दुष्टव्रण, आंख-दुखना, काच, तिमिर, ढलका, शिर, कान, आँख, नाक, मुँह, गुदा, लिंग, इनके रोगोंमें दाहमें ऊर्ध्वगत रक्तपित्त, जिनके पेटमें कृमिहो इतने रोग-वालोंको विरेचन देना योग्यहै तथा जिनके पित्तस्थानमें रोगहो या पित्तके रोगोंसे पीडित हो तोभी विरेचन देना योग्यहै ॥ ३० ॥

वमनविरेचनके लक्षण ।

यात्यधोदोषमादायपच्यमानंविरेचनम् ॥
गुणोत्कर्षाद्व्रजत्यूर्द्धमपक्कंवमनंपुनः ॥ ३१ ॥

जो पकेहुवे दोषोंको लेकर नीचेको निकले वह विरेचनहै और जो गुणोंकी उत्कर्षतासे कच्चे दोषोंको लेकर ऊपरको निकले उसको वमन कहाजाताहै ३१ ॥

छहों ऋतुवोंके विरेचन ।

त्रिवृताकौटजंबीजंपिप्पलीविश्वभेषजम् ॥
समृद्वीकारसंक्षौद्रंवर्षाकालेविरेचनम् ॥ ३२ ॥
त्रिवृद्दुरालभामुस्तशर्करोदीच्यचंदनम् ॥
द्राक्षाम्बुनासयष्टयाह्वंशीतलंचघनात्यये ॥ ३३ ॥
पिप्पलीनागरंस्निग्धंश्यामात्रिवृतयासह ॥
लिह्यात्क्षौद्रेणशिशिरेवसंतेचाविरेचनम् ॥ ३४ ॥
त्रिवृताशर्करातुल्याग्रीष्मकालेविरेचनम् ॥ ३५ ॥

निसोथ, इंद्रजौ, पिप्पली, सोंठ इन्हें मनुक्काके रस और सहतके संगलेना, यह वर्षाऋतुका विरेचनहै। निसोथ, दुरालभा, नागरमोथा, खांड, नेत्रवाला, चन्दन, इनमें मुलहठी मिलाकर मनुक्काके जलसे लेना यह शरद ऋतुके योग्य शीतल विरेचनहै। पिप्पली, सोंठ, वृद्धदारु, निशोथ, इनके चूर्णको घृत या बादाम रोगनमें चिकना करके शहदमें मिलाके चाटना, शिशिर और वसंतऋतुका विरेचनहै। निशोथका स्निग्धकिया चूर्ण खांडयुक्त करके लेना ग्रीष्मऋतुका विरेचनहै ३२-३५

अभयामोदक ।

अभयामरिचंशुंठीविडंगामलकानिच ॥
पिप्पलीपिप्पलामूलंत्वक्पत्रंमुस्तमेवच ॥ ३६ ॥
एतानि समभागानिदंतीतुत्रिगुणाभवेत् ॥
त्रिवृताष्टगुणाज्ञेयाषड्गुणाचात्रशर्करा ॥ ३७ ॥
मधुनामोदकान्कृत्वाकर्षमात्रप्रमाणतः ॥
एकैकंभक्षयेत्प्रातःशीतंचानुपिबेज्जलम् ॥ ३८ ॥
तावद्विरिच्यतेजंतुर्यावदुष्णंनसेवते ॥
पानाहारविहारेषुभवेन्नियंत्रणःसदा ॥ ३९ ॥

हरडकी छाल, स्याह, मिर्च, सोंठ, विडंग, आमले, पीपल, पीपलामूल' तजपत्र, नागरमोथे इन सबको एक २ तोला लेवे । दंती (जमालगोटेकी जड) ३ तोला, निसोथ ८ तोला, खांड ६ तोला इन सबको कूट छानकर सहतमें मिलाकर एक २ तोलाकी गोली बनावे । एक गोली सबेरे ही खाकर ऊपरसे ठंडा जल पीवे।इसके ऊपर जबतक गर्म पानी न पीवे तबतक दस्त आते हैं । (ठंडे जलके पीनेसे दस्त आतेहैं) जब बंद करनेहों गर्म पानी पीवे और गर्मसेही हाथ पाँव धोवे। इसमें पानाहारविहारका विशेष बंधन नहींहै ३६-३९

विषमज्वरमंदाग्निपांडुकासभगंदरान् ॥
दुर्नामकुष्ठगुल्मार्शोगलगंडोदरभ्रमान् ॥ ४० ॥
विदाहप्लीहमेहांश्चयक्ष्माणंनयनामयान् ॥
वातरोगांस्तथाध्मानंमूत्रकृच्छ्राणिचाश्मरीन् ॥ ४१ ॥
पृष्ठपार्श्वरुजंचैवजंघोदररुजंजयेत् ॥
स्नेहाभ्यंगंवरापंचादिनमेकंसुधीस्त्यजेत् ॥ ४२ ॥
सततंशीलनादेवपलितानिच नाशयेत् ॥
अभयामोदकाह्येतेरसायनवराःस्मृताः ॥ ४३ ॥

यह अभयामोदकका विरेचन विषमज्वर, मंदाग्नि, पांडु, खाँसी, भगंदर, बवासीर, कुष्ठ,गुल्म,मस्सोंकी बवासीर,गलगंड,उदररोग,भ्रम,विदाह, प्लीहरोग, प्रमेह,क्षयी,नेत्ररोग,वातरोग,अफारा,मूत्रकृच्छ्र,पथरी,पीठके पसलीकेरोग जंघा और पेटके रोग, इतने रोगोंको दूर करता है । इसको खाकर पीछे एक दिन

स्नेहाभ्यंग और रोष आदि त्याग देवे इसको सदैव समय२पर सेवनसे वृद्धापके वलीपलित आदिरोग नहीं होते यह अश्वगंधामोदक श्रेष्ठ रसायनहै४०—४३॥

विरेचनविषयक बातें ।

मृदुकोष्ठस्यदीप्ताग्नेरतितीक्ष्णंविरेचनम् ॥
नसम्यङ्‌निर्हरेद्दोषानतिवेगप्रधावितान् ॥ ४४ ॥
पीतंयदौषधंप्रातर्भुक्तपाकसमक्षणं ॥
पाकंगच्छतिदोषांश्चनिर्हरेत्तत्प्रशस्यते ॥ ४५ ॥

मृदु कोठेवालेके जिसकी अग्नि दीप्त हो उसके तीक्ष्ण विरेचनसे यथार्थ दोष नहीं निकलते । क्योंकि तीक्ष्ण विरेचनी औषधिसे उसके दोष अतिवेगसे चलायमान होजातेहैं । इसलिये दोषोंको ठीक २ नहीं निकालते ॥ ४४ ॥ जो औषध प्रातःकाल पीलीजावे और भोजनके पाकके समयतक पाकको प्राप्त होकर दोषोंको ठीक २ निकाल देवे वह श्रेष्ठ है ॥ ४५ ॥

दुर्बलस्यचलान्दोषानल्पानल्पान्पुनःपुनः ॥
हरेत्प्रभूतानल्पांस्तुशमयेत्प्रच्युतानपि ॥ ४६ ॥
हरेद्दोषांश्चलान्पक्कान्बलिनोदुर्बलस्यच ॥
चलाह्युपेक्षितादोषाःक्लेशयेयुश्चिरंनरम् ॥ ४७ ॥

दुर्बल मनुष्यके चले हुवे दोषोंको थोडा २ करके बार २ निकाले उठेहुवे दोषोंको थोडे २ निकालता रहै और थोडे २ शांत करता रहै अर्थात् कमताकत मनुष्यको नरम औषध देकर उसके उठेहुवे दोषोंको थोडा २ करके सहजसे निकाले । एकदिन तीक्ष्ण विरेचन न देवे बलवान् हो चाहे दुर्बलहो । यदि उसके दोष पककर चलायमान हों तो उन्हें निकाल देनाही ठीक है । क्योंकि यदि चलेहुवे दोष छोडदिये जावें तो मनुष्यको वे दोष बहुत दिनतक क्लेश देतेहैं इसलिये मवाद फूलाहुवा निकाल देनाही ठीक है ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

मंदाग्निंक्रूरकोष्ठंचसक्षारलवणैर्घृतैः ॥
संधुक्षिताग्निंस्निग्धंचास्विन्नंचैवविरेचयेत ॥ ४८॥
स्निग्धस्विन्नस्यभैषज्यैर्दोषस्तूत्क्लेशितोबलात् ॥
विलीयतेनमार्गेषुस्निग्धेभांडइवोदकम् ॥ ४९ ॥

मंदाग्निवाले क्रूरकोष्ठ मनुष्योंको क्षार लवण तथा घृत मिलाकर विरेचन

औषध देना और दीप्ताग्निवालेको स्नेहन स्वेदन कराके विरेचन देना उचित है। क्योंकि स्नेहन स्वेदनसे चिकने कोठेमें उठाहुवा दोष विरेचनीऔषधिके बलसे ठीक२ निकल जाताहैं रस्तेमें नहीं ठहरता। जैसे चिकने पात्रमें जल नहीं ठहरता और नहीं लगता ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

नचातिस्नेहपीतस्तुपिबेत्स्नेहाविरेचनम् ॥
दोषाःप्रचलिताःस्थानाद्भूयःश्लिष्यंतिवर्त्मसु ॥ ५० ॥
विषाभिघातपिडिकाशोफपांडुविसर्पिणः ॥
नातिस्निग्धाविशोध्याःस्युस्तथाकुष्ठप्रमेहिणः ॥ ५१ ॥
विरूक्ष्यस्नेहसात्म्यंतुभूयःसंस्नेह्यशोधयेत् ॥
तेनदोषाहृतास्तस्यभवंतिबलवर्द्धनाः ॥ ५२ ॥

जिसने अतिस्नेह पीयाहो उसको चिकना विरेचन नहीं पीना चाहिये। क्योंकि अति चिकनाईके कारण उसके दोष स्थानसे चलकर फिर मार्ग ल्हिसाय जातेहैं। विषसे पीडित जिसे चोट लगीहो, पिडिकावाला, शोथ, पांडु, विसर्प, कुष्ठ प्रमेहरोगोंवाला तथा जो घृतादि स्निग्ध पदार्थ खूब खाते हैं और उनसे स्निग्धहै इनको पहले रूक्ष करके फिर स्निग्ध करके शोधन करना उचितहै। इसतरह करनेसे दोष दूर होकर बलकी वृद्धि होतीहै॥ ५०–५२॥

प्रागपीतंनरंशोध्यंपाययेतौषधंमृदु ॥
ततोविज्ञातकोष्ठस्यकार्यंसंशोधनंपुनः ॥ ५३ ॥
सुखंदृष्टफलंहृद्यमल्पमात्रंमहागुणम् ॥
व्यापत्स्वल्पात्ययंचापिपिबेन्नृपतिरौषधम् ॥ ५४ ॥

जिसने पहले औषध न पीयीहो तथा जिस्के कोठेका हाल मालूम नहो उसको पहले मृदु औषध देनी चाहिये। फिर जब कोठेका हाल मालूम होजावे तब शोधन करे अर्थात् अच्छीतरह विरेचन करावे। और राजा आदि अमीर पुरुषोंको ऐसी औषध पीना चाहिये जो सुखपूर्वक पीयी या खाई जावे और जिसका फल देखाहुवाहो अर्थात् आजमूदा हो जो हृदयको हितहो और जिसकी मात्राभी जादा नहो जिसका गुण बहुत अच्छा हो और बिमारियोंको शीघ्र आराम करनेवालीहो ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

स्नेहस्वेदावनभ्यस्ययस्तुसंशोधनंपिबेत् ॥
दारुशुष्कमिवानामेदेहस्तस्यविशीर्यते ॥ ५५ ॥
स्नेहस्वेदप्रचलितारसैःस्निग्धैरुदीरिताः ॥
दोषाःकोष्ठगताजन्तोःसुखाहंतुविशोधनैः ॥ ५६ ॥

जो स्नेहन स्वेदन बिना किये वमन विरेचन करतेहैं उनका देह इसतरहसे खंडित होताहै।जैसे सूखी लकडी मोडनेसे टूटजातीहै और स्नेह स्वेदसे प्रचलित दोष तथा स्निग्ध रसोंसे प्रेरित मनुष्योंके कोष्ठमें प्राप्त हुवे दोष शोधनसे सुख पूर्वक निकलजातेहैं ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

संक्षेपसे वमनविरेचनके उपद्रवोंकी चिकित्सा ।

रक्तपित्तविधानेनरक्तष्ठीवमुपाचरेत् ॥
धात्रीरसांजनोशीरलाजाचंदनवारिभिः ॥ ५७ ॥
मंथंकृत्वापाययेच्चसघृतक्षौद्रशर्करम् ॥
शाम्यंत्यनेनतृष्णाद्यारोगाश्छर्दिसमुद्भवाः ॥ ५८ ॥

जो अत्यंत वमनके होनेसे रुधिर गिरनेलगे तो उसकी रक्तपित्तवत चिकित्सा करे। अथवा आमले, रसौत, खस, खील, चंदन, नेत्रवाला इनका जलमें मंथ बनाकर उसमें घी, सहत, खांड मिलाके पिलावे तो अत्यंत वमन होनेके तृषा आदि उपद्रव शांत होते हैं ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

अधोगमेस्नेहयित्वाभूयस्तीक्ष्णैश्चवामयेत् ॥ ५९ ॥

यदि तीक्ष्णाग्निवालेको या दुर्बलको वामक औषधिका अधोगमन होजाय तो उसको फिर स्नेहन कराकर तीक्ष्ण औषधियोंसे वमन करावे ॥ ५९ ॥

विरेचनके उपद्रवोंके यत्न ।

दुर्विरिक्तस्यवैघोराःशूलाध्मानादिजायते ॥
तंपुनःपाचनैःस्नेहैःपक्त्वास्निग्धंतुरेचयेत् ॥
तेनास्योपद्रवायांतिदीप्तोग्निर्लघुताभवेत् ॥ ६० ॥

जिसको विरेचन ठीक नहुवा हो उस मनुष्यके शरीरमें कुक्षिशूल अफारा आदि अनेक घोर रोग पैदा होतेहैं ऐसे मनुष्यको पाचन स्नेहन करके फिर तीक्ष्ण विरेचन करावे ॥ फिर ठीक विरेचन होनेसे सब उपद्रव शांत होकर अग्नि दीप्त होजातीहै और शरीर शुद्ध हलका होजाताहै ॥ ६० ॥

विरेकस्यातियोगेनमूर्च्छाभ्रंशोगुदस्यच ॥
शूलंकफातियोगःस्यान्मांसधावनसन्निभम् ॥ ६१ ॥
मेदोनिभंजलाभासंरक्तंचापिविरिच्यते ॥
तस्यशीतांबुभिःसिक्त्वाशरीरंतण्डुलाम्बुभिः ॥ ६२ ॥
मधुमिश्रैस्तथाशीतैःकारयेद्वमनंमृदु ॥
सहकारत्वचःकल्कोदध्नासौवीरकेणवा ॥ ६३ ॥
पिष्टानाभिप्रलेपेनहंत्यतीसारमुल्बणम् ॥
सौवीरंतुयवैरामैःपक्वैर्वानिस्तुषैःकृतैः ॥
शीतैःसंग्राहिभिर्द्रव्यैःकुर्यात्संग्रहणंभिषक् ॥ ६४ ॥

अत्यंत दस्तहोनेसे मूर्च्छा आवे, कांच निकल आवे, पेटमें दर्द हो अत्यंत आम निकलने लगे तथा मांसके धोवनके समान लाल चरबीके समान सफेद जलके सदृश स्वच्छ और रुधिरके दस्त आनेलगे ऐसे उपद्रव होनेलगे तो उस रोगीके शरीरपर शीतल जल डाले । और चावलोंके धोवनमें सहत मिलाके पिलावे । तथा नरमसी वमन करावे । आमवृक्षकी छालको दही और जौंकी कांजीमें पीसकर नाभिपर लेपकरनेसे घोरदस्तोंका वेग बंदहोताहै तुषयुक्त तथा तुषरहित जौवोंको जलमें भिगोकर खट्टे करे उसको सौवीर कहतेहैं अथवा शीतल और दस्तोंके वेगको रोकनेवाली औषधियोंसे घोर उपद्रवोंको शांत करे ६१–६४

विरेचनकेबाद पथ्यापथ्य ।

प्रवातसेवांशीतांबुस्नेहाभ्यंगमजीर्णताम् ॥
व्यायामंमैथुनंचैवनसेवेतविरेचितः ॥
शालिषष्टिकमुद्गाद्यैर्यवागूंभोजयेत्कृताम् ॥ ६५ ॥

अत्यंत हवामें बैठना शीतल जलका स्पर्श तेलकी मालिश अजीर्णकारी भोजन दण्ड कसरत और परिश्रम तथा मैथुन इनको जिस मनुष्यने जुलाब कराया हो कदापि सेवन न करे और शालि या सांठीके चावलोंकी या मूंगी आदि हलके अन्नकी यवागू पान करे ॥ ६५ ॥

इति श्रीशुभसन्ततियोगप्रकाशे द्वितीयखण्डे भाषाटीकायां वमनविरेचनविधिर्नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

अथातोबुद्धिविवर्धनीयाध्यायंव्याख्यास्यामः ॥

अब हम बुद्धिके बढानेवाले अध्यायका व्याख्यान करते हैं ॥

मस्तिष्केमुनिभिःप्रोक्ताबहवःसूक्ष्मतंतवः ॥
नानाशक्तियुतास्तैवैस्वेस्वेकर्मणिसंस्थिताः ॥ १ ॥

योगीश्वरोंने मस्तिष्क (दिमाग-ब्रेन-) में छोटी छोटी और बहुतसी तंतु (तारें)दानेयुक्त तारें (धागे) कही हैं । वे सब अपने अपने कामके करनेमें बहुतसी शक्तियें रखती हैं ॥ १ ॥

सूक्ष्माःशक्तियुताःप्रोक्तास्तत्रैवबुद्धितंतवः ॥
तेष्वेवशक्तयःसिद्धाःस्मारकादीतिनिश्चयः ॥ २ ॥
गार्हस्थ्यानामपुष्टास्तेपुष्टावैऊर्ध्वरेतसाम ॥
त्रिकालज्ञाह्यतःशक्तिस्तेष्वेवविहिताभृशम् ॥ ३ ॥
अपुष्टाःशक्तिहीनास्तेपुष्टास्तेपुष्टशक्तयः ॥
तेषांपुष्टिकरोयोगअध्यायेऽस्मिन् प्रकीर्त्यते ॥ ४ ॥

वहीपर छोटे और शक्तियुक्त बुद्धितंतुहैं । उन बुद्धितन्तुओंमेंही स्मरणादि शक्तियें अर्थात् देखि सुनि वस्तुको याद करलेना और समझलेना विचार लेना आदि शक्तियें उन बुद्धितन्तुवोमेंहीहैं,यह योगीश्वरोंका निश्चितहै ॥ २ ॥ वोह दिमागमें होनेवाले तन्तु बालब्रह्मचारी योगियोंके ठीक और पुष्ट अर्थात् पूरी ताकतवाले होतेहैं और गृहस्थि लोगोंके कमताकत होतेहैं । जो अत्यंत क्षीण और छोटीही उमरमें वीर्यको नष्ट करडालतेहैं उनके अत्यंत नाकाम होतेहैं। क्योंकि बालब्रह्मचारी योगीश्वरोंके बुद्धितन्तु अतिपुष्ट (ताकतवर) होते हैं इसी लिये उनमें तीनकाल (भूत-भविष्यत्-वर्तमान)के जाननेकी शक्ति होतीहै॥ ३॥ यदि वे बुद्धितन्तु कमताकत हो तो उनमें स्मरण करने आदिकी पूरी शक्ति नहीं रहती।इसी सबबसे मनुष्यमें भूलजानेका दोप होजाताहै और यदि वे तन्तु पुष्ट होवे तो उनकी स्मरणादि शक्तियेंभी पुष्ट अर्थात् ताकतवर होजातीहैं। इस लिये इस अध्यायमें हम उनके पुष्ट करनेवाले योग कथन करेंगे। जिनके उपयोगसे बुद्धिकी शक्तियें बलवान् होजावें ॥ ४ ॥

पूर्वेवयसिमध्येवा आयुर्बुद्धिविवर्द्धनम् ॥
रसायनंप्रयुंजीतास्निग्धशुद्धतनोः सदा ॥ ५ ॥
नाविशुद्धशरीस्ययुक्तोऽत्राविहितोविधिः ॥
नभातिवाससिक्लिष्टेरंगयोगइवाहितः ॥ ६ ॥

प्रथम अवस्थामें अथवा मध्यम अवस्थामें आयु और बुद्धिके बढानेवाला रसायनका प्रयोग स्निग्ध और वमन विरेचनादिसे शुद्ध देह होनेपर कराना चाहिये। क्योंकि विना शरीरकी शुद्धि किये जो इस अध्यायमें कही विधिको करना योग्य नहीं।जैसे मैले वस्त्रपर रंग नहीं आता इसी तरह विना शुद्ध शरीर किये इस अध्यायमें कहे ब्राह्मीआदिके उपयोगभी निष्फलहोतेहैं ॥ ५ ॥ ६ ॥

मंडूकपर्णीके प्रयोग।

हृतदोषएवयथाक्रममागारंप्रविश्यमंडूकपर्णीस्वरसमादायसहस्र संपाताभिहुतंकृत्वायथाबलंपयसालोड्यपिबेत् पयोनुपानंवा तस्यांजीर्णायांयवान्नंपयसोपभुंजीतातिलैर्वासहभक्षयित्वात्रीन्मा सान्पयोनुपानंजीर्णेपयसःसर्पिरोदनइत्याहारः । एवमुपयुंजानो ब्रह्मवर्चसीश्रुतिनिगादीभवतिवर्षशतमायुरवाप्नोति ॥ ७ ॥ त्रिरा त्रोपोषितश्चत्रिरात्रमेनांभक्षयेत् । त्रिरात्रादूर्ध्वंपयःसर्पिरितिचोप- युंजीत । बिल्वमात्रंपिंडंवापयसालोड्यापिबेदेवंदशरात्रमुपयुज्य मेधावीवर्षशतायुर्भवति ॥ ८ ॥

ब्राह्मीका भेद मंडूकपर्णी।

वमन विरेचनादिसे शरीरके दोष नष्ट होनेपर विधिवत सुंदर मकानमें प्रवेश होकर मंडूकपर्णीका स्वरस निकालकर सहस्र संपाताभिहुत करके बलके अनुसार गोदुग्धमें घोलकर पीजावे अथवा वह रस पीकर ऊपरसे दूध पीलेवे। जब वह पचजावे तब जौंका भोजन दूधके संग खावे अथवा मंडूकप- र्णीको तिलोंके साथ मिलाकर खावे और ऊपरसे दूध पीवे।पचजानेपर दूध घृत- युक्त भात खावे ऐसे तीनमहीने उपयोग करनेसे ब्रह्मतेजवाला वेदवक्ता होजाता है और सौवर्ष आनंदसे जीतारहताहै। अथवा तीनदिन निराहार रहकर केवल मंडूकपर्णीकोही खावे और कुछ नखावे, तीन दिन पीछे केवल दूध घृतही पीवे (फिर तीनदिनके बाद दूध चावल घृत फिर योग्य अन्न) अथवा एक पल मंडूकपर्णीको दूधमें घोलकर पीवे इसप्रकार १० दश दिन करनेसे बुद्धिमान् शतायु पुरुष होताहै ॥७॥८॥

ब्राह्मीके प्रयोगकी विधि।

हृतदोषएवागारंप्रविश्यप्रतिसंसृष्टभक्ताब्राह्मीस्वरसमादायसह-

रससंपाताभिहुतंकृत्वायथाबलमुपयुंजीत । जीर्णौषधश्चापराह्णेय-वागूमलणांपिबेत्।क्षीरसात्म्योवापयसाभुंजीतएवंसप्तरात्रमुपयुज्यब्रह्मवर्चसीमेधावीभवति॥९॥द्वितीयंसप्तरात्रमुपयुज्यग्रंथमीप्सितमुत्पादयतिनष्टंचास्यप्रादुर्भवति । तृतीयंसप्तरात्रमुपयुज्यद्विरुच्चारितंशतमप्यवधारयति । एवमेकविंशतिरात्रमुपयुज्यालक्ष्मीरपक्रामतिमूर्तिमतीचैनंवाग्देव्यनुप्रविशतिसर्वाश्चश्रुतयउपतिष्ठंतिश्रुतधरःपंचवर्षशतायुर्भवति ॥ १० ॥

वमन विरेचनसे शरीर शुद्धहोनेपर स्थानमें प्रविष्ट हो प्रतिसंसृष्ट भक्त होकर ब्राह्मीका स्वरस निकालकर सहस्र सम्पाताभिहुत करके बलके अनुसार उस रसको पीजावे । जब वह रस पकजावे तब तीसरे पहर अलोनी यवागू पीवे अथवा दूधके अभ्यासवाला दूध पीवे या दूधके साथ खावे । इसप्रकार सात दिन करनेसे ब्रह्मतेजवाला बुद्धिमान् होजाताहै ॥ ९ ॥ फिर दूसरे सातदिन इसीप्रकार ब्राह्मीके स्वरसका उपयोग करनेसे मनवांछित नया ग्रंथ रचदे और इसे गुप्तबातेंभी प्रगट होजातीहैं ॥ तीसरे सप्ताह इस उपयोगसे दोबार उच्चारण किये हुवे सौ श्लोक याद होजातेहैं । जो मनुष्य बराबर इसका २१ दिन उपयोग करे तो अलक्ष्मी नष्ट होकर साक्षात् मूर्तिमती सरस्वती इसके शरीरमें प्रवेशकरतीहै । सबश्रुतियें याद होजातीहैं । सुनी बातें सब याद रहतीहैं और ५०० वर्षकी आयु होजातीहै ॥ १० ॥

ब्राह्मीस्वरसप्रस्थद्वयेघृतप्रस्थंविडंगतण्डुलानांकुडवंद्वेद्वेपलेवचात्रिवृतयोर्द्वादशहरीतक्यामलकबिभीतकानि श्लक्ष्णपिष्टान्यावाप्यैकध्यंसाधयित्वास्वनुगुप्तंनिदध्यात् । ततःपूर्वविधानेनमात्रांयथाबलमुपयुंजीतजीर्णेपयःसर्पिरोदनइत्याहारः। एतेनोर्ध्वमधस्तिर्यक्कृमयोनिष्क्रामंतिअलक्ष्मीरपक्रामतिपुष्करवर्णःस्थिरवयाःश्रुतिनिगादीत्रिवर्षशतायुर्भवत्येतदेवकुष्ठविषमज्वरापस्मारोन्मादविषभूतग्रहेष्वन्येषुचमहाव्याधिषुचसंशोधनमादिशति ॥ ११ ॥

ब्राह्मीका स्वरस २ प्रस्थ, गोघृत १ प्रस्थ, विडंगके बीज १ कुडव, बच और निशोथ दो दो पल, त्रिफला १२ पल, इन सबको गीलीही पीस

करके साथके ढककर रखदे। फिर पूर्वोक्त विधिसे बलके अनुसार मात्रा खावे (ऊपरसे दोघूट गर्म जलके लेवे) जब पचजावे तब तीसरे प्रहर दूध घृतयुक्त भात खावे। इससे वमन और दस्तोंमें तथा पसीनेमें कृमी निकलतेहैं। इसके प्रभावसे पापदोष दूर होकर कमलदलसदृशसुन्दररूप हो अवस्था स्थिरहो वेदवक्ता होकर ३ सौवर्षकी आयु हो। यह प्रयोग कुष्ठ विषमज्वर मृगी उन्माद विष भूतदोष ग्रहदोष इन व्याधियोंमें संशोधनरूप होकर उनको नष्ट करे॥११॥

वचके खानेकी विधि।

हृतदोषश्चागारंप्रविश्यहैमवत्यावचायाःपिंडआमलकमात्रमभि-हुतंपयसाऽऽलोड्यापिबेत्।जीर्णेपयःसर्पिरोदनइत्याहारः।एवंनव-द्वादशरात्रमुपयुंजीततत्तोऽस्यश्रोत्रंविव्रियते।द्विरभ्यासात्स्मृतिमा-न्भवतित्रिरभ्यासाच्छ्रुतमाधत्ते चतुर्द्वादशरात्रमुपयुज्यसर्वंतर-तिकिल्बिषंताक्ष्र्यदर्शनमुत्पद्यतेशतायुर्भवति॥ १२॥ द्वेद्वे पलेइतरस्यावचायाः निक्वाथ्यपिबेत्पयसासमानंभोजनंसमाः पूर्वेणाशिषश्च॥ १३॥ वचाशतपाकंवासर्पिर्द्रोणमुपयुज्य पञ्चवर्षशतायुर्भवति गलगण्डापचीश्लीपदस्वरभेदांश्चापहंतीति होवाचधन्वंतरिःशुश्रुताय॥ १४॥

वमन विरेचनसे शुद्ध शरीर होकर स्थानमें प्रविष्ट होकर हैमवती वचको पीसकर आमलेकी बराबर गोली बनाकर सहस्र संपाताभिहुत करके उस वचकी गोलीको दूधमें घोलकर पीजावे।पचनेके अनंतर दूधघृतयुक्त भात खावे। इसप्रकार प्रथम बारह दिन इस उपयोगसे मनुष्यके कर्णेंद्रिय खुलजावे, दूरकी बात सुने।दूसरे बारह दिनके उपयोगसे स्मरणशक्ति बढे,कोई बात भूले नहीं तीसरे द्वादशाहसे सौ श्लोक याद करसके चौथे द्वादशाहके उपयोगसे सब पाप नष्ट हो कर गरुडकीसी दृष्टी हो सौवर्षकी आयुहो॥१२॥अथवा दूसरी किस्मकी वचका दोपलका क्वाथ करके दूधके संग पीवे भोजन और आचरण पूर्वोक्त रखे १३ अथवा वचसे सौवार पकायाहुवा द्रोणभर घृत नित्य बलानुसार खानेसे दीर्घ आयुहो और गलगंड अपची स्वरभंग आदि रोग नष्ट होतेहैं॥ १४॥

अनेनैवविधानेनमस्तिष्कस्थाश्चतंतवः॥
बुद्ध्याय्वादियुताज्ञेयाःप्रयोगैःपुष्टतांगताः॥ १५॥

इसप्रकार विधिपूर्वक कियेहुवे ब्राह्मी आदिके प्रयोगोंसे दिमागमें स्थित तंतु बुद्धि आयु आदि पुष्ट शक्तियोंसे युक्त होजातेहैं ॥ १५ ॥

उत्तमैस्त्रिभिरध्यायैःखंडोयंद्वितीयःस्मृतः ॥
योग्यायोग्यःसमालोक्यक्षंतव्योंविबुधैःसदा ॥ १६ ॥

इन उत्तम तीन अध्यायोंमें दूसरा खंड कथन कियाहै इसमें बुद्धिमानोंसे प्रार्थनाहै कि इसमें योग्यायोग्य देखकर क्षमा करे ॥ १६ ॥

वेदषण्नंदचंद्रेब्देकार्तिकेभौमवासरे ॥
शुक्लपक्षेपूर्णिमायांग्रस्यपूर्तिःकृतामया ॥ १७ ॥

वेद ४ रस ६ नन्द ९ चन्द्र १ (अंकानांवामतोगतिः) अंकोंकी वाम तर्फसे गति होतीहै । (१९६४) के संवतमें कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा भौमवारको इस शुभसंततियोगप्रकाशको पूर्णकिया ॥ १७ ॥

संततिसुखबुद्धचायुप्रद, रुजदुःखनको नाश ॥
पूरितहै दुइ खण्ड शुभ, संततियोगप्रकाश ॥ १ ॥

इति श्रीशुभसन्ततियोगप्रकाशे द्वितीयखंडे पं० रामप्रसादवैद्यकृतभाषाटीकायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ शुभम् ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालय-खेतवाडी-बंबई.